TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

TEXT DARK AND LIGHT

UNIVERSAL LIBRARY

OU_180982

UNIVERSAL LIBRARY

"युग की पग-ध्वनि"

[वस्तुवादी उपन्यास]

लेखक

हरीकृष्ण बाजपेयी

सर्वोदय साहित्य मन्दिर,
हुसैनी अलम रोड, हैद्राबाद (द.) नं. २

प्रथम संस्करण] मार्च १९४९ [मूल्य ३)

प्रकाशक

नवयुग ग्रन्थागार

छितवापुर, लखनऊ।

[सर्वाधिकार सुरक्षित है।]

मुद्रक

पं० मदनमोहन शुक्ल 'मदनेश'

साहित्य-मन्दिर प्रेस लिमिटेड, लखनऊ।

'ग्रन्थ पठनीय है। वाजपेयी जी की ऐसी छोटी अवस्था में ऐसा बढ़िया ग्रन्थ लिखने पर मैं बधाई देता हूँ। पुस्तक के कुछ स्थानों पर रूसी उपन्यासकारों की शैली का भी रूप आ गया है। वर्तमान पाश्चात्य प्रणाली के (Racy Novels) का सा कुछ रूप आता हुआ दीखता है किन्तु भारतीयता की मुख्यताओं का रक्षण वहाँ भी हो गया है। उपन्यास भाव प्रधान, पठनीय और सुन्दर है। आशा है कि समय के साथ लेखनकला में उन्नति करके वाजपेयी जी हमारे उच्चकोटि के लेखक बन जायेंगे। मैं लेखक की सफलता हृदय से चाहता हूँ।

शुकदेव बिहारी मिश्र
साहित्य वाचस्पति
(मिश्र बन्धु में से एक)

(संसार चक्र से)

पंडित हरीकृष्ण बाजपेयी एक नवयुवक उपन्यासकार हैं। उनमें प्रतिभा है और उनमें कल्पना है।

——————मैं आशा करता हूँ कि यदि इसी प्रकार वे अपनी साहित्यक-साधना में रत रहे तो हिन्दी संसार में वे बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त कर लेंगे।

..............................मैं इस नवयुवक कलाकार का हिन्दी-संसार में अपनी समस्त शुभकामनाओं के साथ स्वागत करता हूँ।

भगवती चरण वर्मा

(संसार-चक्र से)

मैंने श्री हरीकृष्ण वाजपेयी द्वारा लिखित "युग की पग-ध्वनि" नामक उपन्यास पढ़ा। यह उपन्यास, लगभग ढाई सौ पृष्ठों मे समाप्त हुआ है। कथानक, चरित्र-चित्रण, शैली, भाषा इत्यादि की दृष्टि से यह उच्चकोटि का है। श्री वाजपेयी जी की यह द्वितीय कृति है।

इसके कुछ स्थल विशेष समीचीन हैं।

आप में एक सफल उपन्यासकार की प्रतिभा विद्यमान है। अतः कुछ ही दिनों में आप इस क्षेत्र में बहुत ही आगे बढ़ जायेंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

हर्ष है, श्री वाजपेयी जी की यह कृति उन्हें वस्तुवादी उपन्यास-कारों की पंक्ति में आसीन कराती है। सम्प्रति युग का आह्वान भी ऐसा है। कहना न होगा, 'कला, कला के लिये' का युग समाप्त प्राय-सा है। अब तो कला में, जन-मन जीवन-संगीत की स्वर-लहरी ही सुनना चाहता है और वह इस उपन्यास में पर्याप्त अंश में है।

—"देव"

स्वाध्यायी

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', अमृतलाल नागर, रूपनारायण पांडे आदि महान साहित्यिक कलाकारों की रचनायें देने के पश्चात, मैं आपके सामने इस नवयुवक कलाकार की वस्तुवादी रचना 'युग की पग-ध्वनि' को रख रहा हूँ। मुझे विश्वास है कि आप इसके अन्दर छिपे हुये मनोभावों को ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न करेंगे और उसकी वास्तविकता को समझेंगे। संसार का कटु सत्य भावावेश में नहीं वरन् कर्त्तव्य में मिलता है।

पाश्चात्य उपन्यासकारों की शैली को लेकर बाजपेयी जी हिन्दी संसार को नई दिशा की ओर मोड़ देंगे, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। 'मिश्र बन्धु', 'भगवती चरण वर्मा', 'स्वाध्याय' एवं 'शुक्ल जी' के अशीर्वाद क्या अमर फल नहीं लायेंगे? अवश्य लायेंगे।

अन्त में, मै अपने पाठकों और आलोचको से प्रार्थना करता हूँ कि वे पुस्तक में असावधानी के कारण जो त्रुटियाँ हुयी हैं, उन्हें क्षमा कर देगें। पुस्तक बड़ी शीघ्रता में छपी है।

—प्रकाशक

भूमिका

युग की पगध्वनि मेरी द्वितीय रचना है। मैंने इसे प्रत्येक दृष्टि से सुन्दर बनाने का प्रयत्न किया है। मुझे इस कार्य में सफलता मिली या नहीं, यह आप लोग जानें।

संसार-चक्र लिखने के उपरात जिस पर कि पंडित शुकदेव बिहारी मिश्र 'मिश्र बन्धु' एवं श्री भगवतीचरण वर्मा की शुभ और सुन्दर सम्मतियाँ भी प्राप्त की गई हैं, मैंने कुछ समय का विश्राम लेकर "युग की पग-ध्वनि" लिखी।

युग की पग-ध्वनि एक ऐतिहासिक एवं जीता जागता चित्र लेकर आ रही है। इसमें आठ माह के युग की चाल एवं परिवर्त्तन का वर्णन है।

यह एक भारत का जीता जागता एवं प्रामाणिक चित्र है। प्रत्येक घटनायें सत्यता के साथ लाई गई हैं।

कथा के कुछ अंश कल्पित हैं और वह केवल कथा को रोचक बनाने के लिये, लिये गये हैं।

युग भागता जा रहा है। वर्षों, सदियों से वह हम और हमारे पूर्वजों के बीच से गुज़र रहा है। अभी बीते समय की पग-ध्वनि को मैं ध्यानपूर्वक सुन और देख सका हूँ, इसी कारण आठ मास की पग-ध्वनि को 'युग की पगध्वनि' के नाम से आपकी सेवा में भेंट कर रहा हूँ।

इस आठ माह में जो घटनायें हुईं, वह संसार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। एक एवं अनेक महान परिवर्त्तन इस युग की भेंट हैं।

भारत की परिस्थिति और उसका भविष्य हमें आगे आने वाला युग बतायेगा।

युग-युग से मानव का साथ है और रहेगा। युग हमारा साथी है। हम युग के और युग हमारा हैं। युग मानव के आदर का पात्र है।

इसी कारण हम "युग की पगध्वनि" के साथ-साथ युग को प्रणाम करते हैं।

शेष क्षमा

लेखक—

हरीकृष्ण बाजपेयी

गोलागंज, लखनऊ
ता० १६-२-४६

"युग की पग-ध्वनि"

१

यह हम लोगों की मातृभूमि है। चालीस कोटि मानव की प्रसविनी भारतमाता। इसी के ऊपर हम लोगों ने जन्म लिया। यहीं पर हम पले, बढ़े और पुष्ट तथा समर्थ प्राप्त किया। कुमारी अन्तरीप से हिमालय के [illegible] से आसाम तक फैली हुई विशाल भूमि ही हम लोगों की जन्मदात्री है। इसी कारण तो वह माँ के नाते पूजनीय है।

भारत मा की गोद में करोड़ों ने जन्म लिया और संसारी खेल खेलकर काल की गोद में चले गये। यह भी एक कहानी है। भारतमाता के वक्षस्थल पर बसे हुए नगर शहर और ग्राम, बहती हुई नदियाँ और उसके तट पर बने हुए नगर सभी मूक भाषा में अतीत के गौरव का गान कर रहे हैं।

आज भारत पराधीन है। दूसरे देश के मानव आज चालीस कोटि मानव को गुलाम बना कर पीस रहे हैं। अपना

गौरव अपनी स्वतंत्रता का इतिहास, अपनी रगों में बहती हुई लाल खूनी उत्तेजना को नश्वर प्रदान कर सदा के लिये शान्त कर दिया गया है। परन्तु फिर भी मानव कोई भी हो अपनी मातृ भूमि को विदेशी सत्ता के हाथ नहीं देख सकता। वह किसी भी तरह उसको स्वतंत्र कराने का प्रयत्न करेगा।

भारत के वीर सपूतों ने भी भारत को स्वाधीन करने में सब कुछ बलिदान कर दिया। माँ की रक्षा करने के लिये लाखों वीर सपूत फाँसी के तख्ते पर हँसते-हँसते चढ़ गये। यह भी देश भक्ति तथा मातृ भूमि की रक्षा का एक जोश था।

हम लोगों को अपने अतीत के गौरव का ज्ञान कराया गया। हम लोगों से कहा गया कि हम कायर नहीं हैं। उठो देखो गंगा के तट पर बसे हुए नगरों के आदिकाल का इतिहास देखो। सरयू के तट पर बसे हुए अयोध्या को देखो किसके गुणगान कर रही है। कुरुक्षेत्र आज किसका आवाहन कर रहा है। आज देश के कोने कोने में टूटे फूटे खंडहर भी मूक-भाषा में किसके गीत गा रहे हैं। भारत के वीरों एक बार फिर उठ कर भारत की पराधीनता की श्रंखला तोड़ डालो। स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे हम लेकर रहेंगे का मंत्र हमारे कान में फूँका गया।

नेताओं ने जोश भर कर कहा—यह हमारी जन्म भूमि है, जहाँ पर वेद रचे गये पुराणों की सृष्टि हुई स्मृतियाँ बनीं मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी और योगेश्वर श्रीकृष्ण जी

ने जन्म लिया। इसी भूमि पर अत्याचारों से पीड़ित ऋषी मुनियों के संकटों को राम ने रावण का संहार कर दूर किया। यहीं पर दुर्योधन के पाप असीम पराकाष्ठा पर पहुँचने के कारण पाँडवों द्वारा उनका मान चूर कराया गया। यह वह भारतवर्ष है, यह वही मातृभूमि है जिसकी रक्षा के हेतु सन् सत्तावन (१८५७) में लाखों मनुष्यों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। हिन्दुओं तथा यवनों ने मिलकर भारत को स्वतंत्र करने के लिये भरसक प्रयत्न किया था। उठो जागो सप्त सिन्धु गंगा और यमुना की बहती हुई धारा को देखो। अपना कर्तव्यपथ निर्धारित करो समय तुम्हें पुकार रहा है। तुम्हारी माता तुम्हें पुकार रही है।

सच है हम लोगों को अपने भारतीय गौरव का अनुभव हुआ। वास्तव में हमारी माँ वीर तेजस्वनी है तभी तो इस भारत की भूमि पर राम, कृष्ण, अर्जुन और भीम इत्यादि ने जन्म लिया। तभी तो यहाँ पर अत्याचारी मनुष्य रूपी दानवों का संहार किया गया। हम लोग बड़े सौभाग्यशाली हैं तभी तो स्वर्ग ऐसी भूमि में जन्म पाया है।

हाँ भारत में कवि, चित्रकार, लेखक प्रत्येक कलाओं के ज्ञाता उत्पन्न हुए। वास्तव में भारत महान है। तुलसीदास सूरदास हम लोगोंके सन्मुख भक्तिमार्ग द्वारा नेता के रूपमें आये मीरा, रसखान और कबीर ने कविता में प्राणदान दिया। राष्ट्रीयता के हिलोर में उठती हुई कल्पना की उड़ान एक जोश और गौरव लेकर आई।

हम लोग अपने पूर्वजों के गौरव सुनकर सम्हले। पुस्तकों द्वारा सन् सत्तावन (१८५७) का स्वतंत्र संग्राम पढ़कर हृदय में एक जोश भर नेताओं द्वारा आगे बढ़ते गये।

सन् १९२१ का आन्दोलन एक जोश लेकर आया। नेताओं ने नेतृत्व किया और भारतवासी उन्हीं के पीछे चल पड़े। स्वातंत्र्य संग्राम की ज्वाला फिर धधक उठी।

सन् १९३१ और १९४२ भी एक जोश की लहर की भाँति उठे और ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकने का भरसक प्रयत्न किया।

कुशल नेतृत्व भी हम लोगों का और हमारे ऊपर वाला पीढ़ी को भी प्राप्त हुआ। तिलक, गोखले और लाजपतिराय इत्यादि ने मृत्यु तक माँ के हेतु कार्य किया। अब इस युग में युगावतार महात्मा गांधी आज भी कुशल नेता की भाँति नेतृत्व कर रहे हैं।

युग के साथ साथ साहित्य द्वारा भी राष्ट्रीयता की पुष्टि की गयी। प्रत्येक भारतीय साहित्य ने कविता और लेखों द्वारा हम लोगों की उत्तेजना को बढ़ाया। हिन्दी में भी राष्ट्रीय काव्य की भावना बढ़ी। कवियों ने हुंकार के साथ कविता के सहारे नेताओं में और जनता में जान फूँकना शुरू कर दी।

हम लोग भी युग के साथ बहे। तिलक ने गीता रहस्यवाद लिखा। धर्म को समझाया। गीता के उद्देश्यों और अपने धार्मिक सिद्धांतों तथा आदेशों को सन्मुख रखकर एक निश्चित

पथ के लिये तैयार किया। हम लोग भी अपनी आँखें खोल कर युग के साथ चलने को तैयार हो गये।

माँ की बेड़ियाँ काटना या स्वतंत्र कराना कोई हँसी खेल न था। इसमें बलिदानों को आवश्यकता थी। प्रथम बार जब लोग माँ की स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिये उठे तभी डंडे खाये कायर की भाँति भाग खड़े हुए। यह बातें हमें पिछली लिखी पुस्तकें बताती हैं। परन्तु दूसरी वार हम लोग फिर जोश के साथ बढ़े और आन्दोलनों के पैर जम गये। वीरता पूर्वक डटे रहे। धीरे धीरे कायरता कोसों दूर भागतो गई। हम वीर होते गये, पूर्व की भाँति क्योंकि बीते आन्दोलन इस बात का पुष्टि करते हैं।

कवि की कविता, कलाकारों की कला, लेखकों के लेख हम लोगों को प्रति दिन उत्थान के पथ पर चढ़ाते गये और अपनी माँ के प्रति प्रेम भक्ति श्रद्धा को एक निश्चित स्थान तक खींच ले गये।

हम लोगों को जब ज्ञात हुआ कि हम कौन थे और क्या बना दिये गये, तब शोक और लज्जा से सिर नीचा हो गया। गंगा की धारा के सहारे आदिकाल के इतिहास का गौरव समझ कर ही हम भारतीयों को ज्ञात हो सका कि हम कौन थे।

कुशल नेताओं द्वारा ही हम लोग जान सके कि भारत में लाखों टूटे फूटे खंडहर क्या महत्व रखते हैं। और उनका हमारे जीवन में क्या महत्व है। वे मंदिर, खंडहर, साँची के

स्तूप अजन्ता की गुफायें, ऐलौरा की मूर्तियाँ अपने गौरव का गान गा गा कर सुना रही हैं।

महात्मा बुद्ध की सत्य और अहिंसा की वाणी हम लोगों के कानों में फूकी गयी और हमको उसी रास्ते पर चलने को कहा गया। करोड़ों ने विरोध किया और करोड़ों अनुयायी हुए। यहीं हमारे जीवन की मोड़ थी जिसको हम लोगों ने समझने पर समझा।

अपना गौरव जान लेने के बाद हमने अपना अधिकार माँगा और माँ के हेतु स्वतंत्रता के अवसर पर करोड़ों गगन भेदी नारों से आकाश गुञ्जित किया। असहयोग हिलोर में मानव मातृभूमि की वन्दना करता हुआ प्रत्येक कार्य करने को तत्पर हो उठा। यह एक आश्चर्य नहीं तो क्या था।

एक दिन था जब हम नाली में कीड़ों की भाँति पड़े थे। हमें अपना कुछ पता न था। विदेशी सत्ता हम पर मनमाने राज्य कर रही थी। हम लोग गूंगे की भाँति कुछ न बोलते थे।

परन्तु आज वह समय है कि कुमारी अन्तरीप से हिमालय तक, गुजरात से आसाम तक का बच्चा-बच्चा जाग उठा है। हम लोगों की रगों में जोश का ख़ून दौड़ पड़ा है। ब्रिटिश सत्ता पर सन् १८५७ सन् १९२१-३१ और ४२ के थपेड़ों की लहरों के कारण उनकी राजरूपी नौका डगमगा रही है। आज हम गुलाम होते हुए भी आजादी की अभिलाषा रखते हैं। हम मानव हैं, अब हम लोगों को ज्ञात है कि हमारा अधिकार क्या है।

आन्दोलन के थपेड़ों के कारण ब्रिटिश सत्ता डगमगाने लगी है। हम लोगों का हृदय बल्लियों उछल रहा है। सभी चाहते हैं कि एक थपेड़ा आये और फिर देखें कि पाप की गठरी कब तक रुकती है।

भारतीय जागरूक हैं। हम लोगों की सभ्यता आदिकाल से है। हमारा साहित्य अनुपम है। कालिदादास, माघ आदि साहित्यकारों ने हमारे देश में जन्म लिया। मन्दिरों के घंण्टे और शंखनाद युग-युग से हम लोगों के गौरव के गीत गा रहे हैं। अब हम चेत न हागये हैं। हम लोग भी माँ को स्वतंत्र करेंगे। अब हम समझ गये कि मातृप्रेम क्या होता है। नेताओं द्वारा निर्देशित किये गये मार्ग भगवान के आदेश हैं। हमारे रास्ते खुल गये हैं।

हमारा अभिमान जाग चुका है। हम जाग चुके हैं। फिर भी कुछ शक्तियाँ ऐसी हैं जो रोड़ा अटका रही हैं, फिर भी आंगल निवासियों को भारत से निकालना है, और फिर आपस में निपट लिया जायेगा।

हम लोग स्वतन्त्रता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम लोग उस दिन की प्रतीक्षा में हैं, जिस दिन हमारी माँ लम्बी दासता से मुक्त होगी और हम स्वतन्त्रता का गीत जयजयकारों से गायेंगे। भारत को स्वतन्त्र होना है। अब हम बेचैन हैं और नेताओं का आदेश भी यही है। हम लोग भारत को स्वतन्त्र बनाकर ही रहेंगे।

२

भारत ईश्वर की आश्चर्यजनक विभूति है। इस भूखण्ड पर सैकड़ों भाषायें प्रचलित हैं, तथा सैकड़ों जातियाँ निवास करती हैं। यह विश्व की एक अनुपम देखने योग्य दर्शन-शाला है।

इसी भारत के उत्तर-पश्चिम में बीसवीं शताब्दी के समस्त साधनों से सजा हुआ नगर लाहौर है। लाहौर भारतवर्ष के सुन्दर नगरों में से एक है। इस नगर की जगमगाती बिजलियाँ, ऊँची-ऊँची अट्टालिकायें एक अद्भुत छटा उत्पन्न करती हैं। बीसवीं सदी के समस्त फैशन, साज शृङ्गार तथा नयी तड़क-भड़क की वस्तुओं के कारण विश्व में यह भारत का पेरिस के नाम से विख्यात है।

यहाँ की विशाल सड़कों पर चलती हुई मोटर, ट्राम एवं नर नारियाँ सुन्दर सा सपना हृदय में भर देती हैं। यहाँ की प्रत्येक सड़क पर क्रीम पावडर से पुती तथा नये-नये वस्त्रों से सजी हुई रमणियाँ हृदय में गुदगुदी भर एक विचित्र लोक में छोड़ कर पास से निकल जाती हैं। व्यापार के समस्त साधन आभूषणों की सुन्दरतम दुकानें भी इस शहर की देन है।

इस शहर का वातावरण एक हृदय में गुदगुदी की कथा लिये हुए प्रति क्षण बीता करता है। लाहौर एक रहस्यमय

गोरखधन्धा है, ऐसा धन्धा जहाँ पर कि मानव आकर फँस जाता है और वह ज्यों-ज्यों उसमें से निकलने का प्रयत्न करता है, त्यों-त्यों वह और दलदल में फँसता जाता है। वह लाहौर के सौन्दर्य तथा वातावरण में ऐसा फँस जाता है कि निकलने का नाम नहीं लेता। लाहौर उसे प्रिय लगने लगता है, और वह लाहौर में ही रहने की सोचने लगता है।

धन यहाँ का खेल है और धन यहाँ का व्यापार! धन ही के कारण लाहौर के एक-एक सेठ के पास करोड़ों की सम्पत्ति है। यहाँ पर धन बरसता है धन।

इसी जगमगाती लाहौर की एक सड़क की फुट पाथ पर कुमारेश चला जा रहा था, और साथ में उसका मित्र हरीश भी था।

हरीश ने कुमारेश के साथ चलते हुए कहा—कुमारेश तुमने सुना भारत का विभाजन होने जा रहा है।

हाँ भाई सुना। भारत के भाग्य गगन पर दुर्भाग्य की प्रथम काली रेखा छाने जा रही है।

तुम्हारा क्या विचार है विभाजन के सिद्धान्त पर? चलते हुए हरीश ने पूछा।

कुछ नहीं भाई मेरा विचार मूल्य ही क्या रखता है। फिर भी भारत अभी तक एक रहा है। और उसकी भौगोलिक स्थिति भी इसी पक्ष का प्रतिपादन नहीं करती है कि भारत का विभाजन हो।

हरीश ने पूछा—मेरी समझ में यह नहीं आता कि जब जनता इसके विरोध में है तो फिर विभाजन का सिद्धान्त क्यों इतना ज़ोर पकड़ रहा है।

इतना भी नहीं समझे हरीश, इसके अतिरिक्त और उपाय ही क्या है। पृथक निर्वाचन प्रणाली लाकर वैमनस्य का बीज बोया, उसका कुछ फल तो अवश्य होना चाहिए था, वह तुम्हारे सामने आ रहा है। यह तो ब्रिटिश राजनीति थी। फिर भी हमें प्रसन्न होना चाहिए कि आंगल भारत छोड़ रहे हैं।

पर हमें तो कांग्रेस पर क्रोध आता है कि वह विभाजन सिद्धान्त पर ज़ोर डाले जा रही है।

इसमें कांग्रेस का दोष नहीं, हमारे भाग्य का दोष है। हम भारतवासी कभी एक नहीं हो पाये हैं। दल और नेतागिरी के लोभ में, मार्ग में रोड़ा अटकानेवाले अनेक मनुष्य आकर खड़े हो जाते हैं। यह दुर्भाग्य नहीं तो क्या है।

मैं आपसे बिलकुल भी सहमत नहीं हूँ कुमारेश! हमें ऐसी सत्ता की आवश्यकता नहीं है, जो हमें अपनी जन्मभूमि में ही विदेशी बना दे। भारत माता के, पूजनीय माता के टुकड़े करा डाले और थोड़े से स्वार्थ के कारण अपना नैतिक जीवन नरक में गिरा दे। यह हमारी कायरता की निशानी है।

पर भाई सुनो तो—

आप ही ने अभी कहा था, कि भारत के भाग्य गगन पर

दुर्भाग्य की काली रेखा छाने जा रही है। हरीश उत्तेजित होकर बोला।

हाँ मैंने अभी यही कहा था। और अब भी यही कहता हूँ कि यह हमारा दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है। सदियों से चली आयी हुई भौगोलिक सीमा, एकता छिन्नभिन्न होने जा रही है।

आज दो राष्ट्रवाले सिद्धान्त का प्रतिपादन कर हिन्दू मुसलमान में सदा के लिये वैमनस्य का बीज बोया जा रहा है। सब जानते हैं कि यह ब्रिटिश राजनीति है, पर आज यदि हम इसको भी हाथ से चले जाने देंगे तो फिर हमें वर्षों तक गुलाम रहना होगा। मुसलमान हमारे भाई हैं। एक न एक दिन मिल ही जायेंगे। पाकिस्तान कुछ समय के लिये है।

हरीश खीझ कर जोर से बोला—देखो कुमारेश भैया मुझे तुम्हारी बातें अच्छी नहीं लगती हैं। जब देखा तब मुसलमान हमारे भाई हैं, मुसलमान हमारे भाई हैं। यदि आज वह हमारे भाई होते तो नोआखाली, कलकत्ता आदि में हमारी माँ बहनों पर, हमारे मन्दिर और धर्म पर पाशविक अत्याचार न करते।

आज वे ग़लत रास्ते पर हैं हरीश कल वह ठीक रास्ते पर आ जायेंगे और फिर बिहार में भी तो हिन्दुओं ने मुसलमानों को मारा।

यह तो प्रतिकार था कुमारेश।

प्रतिकार के क्या अर्थ होते हैं मेरे भाई। यदि प्रतिकार की

भावना चलती ही रही तो भारत में एक हिन्दू या एक मुसलमान भी जीवित न रह सकेगा।

फिर भी बुरा हो रहा है। विभाजन का विरोध करना चाहिए। कम से कम सरकार को हम लोगों की राय तो अवश्य ले लेनी चाहिए थी ?

भूलते हो हरीश समय नहीं है। और जो हो रहा है, वह ठीक हो रहा है, यदि तुम आज पद पर होते तो तुम भी यही करते।

पर इसका परिणाम पाकिस्तान के शहरों में क्या होगा ? हरीश ने पूछा।

क्या होगा यह तो प्रजातांत्रिक युग है। मुसलमानों का पाकिस्तान होगा, और हम लोग आपस में रहेंगे।

यह तो तुम्हारी भूल है कुमारेश। जो तुम सोच रहे हो उससे भयंकर परिणाम होगा, मानव-मानव से लड़ेगा, युद्ध होगा और चारों ओर लपटें उठेंगी लपटें।

चुप रहो हरीश क्यों सड़क पर चलते हुए ऐसी बातें जोर-जोर से कह रहे हो। जो होगा सो देखा जायगा। अभी तो हमें सरकार की ओर से कोई घोषणा मिली नहीं है। जब आयेगी तो देखा जायगा।

वह भी शीघ्र आने ही वाली है।

जो भाग्य में बदा होगा सो होगा। कुमारेश ने साँस लेकर कहा।

भाग्यवादी बनने से केवल काम न चलेगा। मोर्चा लेना है मोर्चा।

अच्छा जब मोर्चा लेना होगा तब तुम मोर्चा लेना। और तुम ?

फिर तुम बातें करने लगे। चलो घर आ गया है, चल कर कुछ नाश्ता तो करलें।

हरीश और कुमारेश बचपन से साथ खेले हैं। इसी कारण दोनों में प्रगाढ़ मित्रता है। हरीश के पिता को छोड़कर और कोई नहीं है, और उसके पिता लाहौर में ही एक आफिस में क्लर्क हैं।

कुमारेश एक धनी परिवार का पुत्र है। उसके माता पिता का स्वर्गवास हो चुका है। उसके दो बहन, भैय्या तथा भाभी है। सर्व सम्पन्न घर है। कुमारेश और हरीश यहीं के एक स्थानीय कालेज में पढ़ते हैं।

चाय पीते हुए हरीश कुमारेश की भाभी की ओर देखता हुआ बोला—भाभी आपने कुछ सुना भारत का विभाजन होने जा रहा है।

कुमारेश चाय पीते हुए डाट कर बोला—हरीश तुम्हें क्या हो गया है। जब देखो तब विभाजन की रट लगाये रहते हो। अभी तक तो कोई सरकारी बात निकली नहीं है।

भाभी हँसकर बोली—नहीं भैय्या यह सत्य है कि भारत का विभाजन होने जा रहा है।

भाभी मैं इसे बहुत पहले से जानता हूँ ।

तब आपने मुझे क्यों डाटा—रोष के साथ हरीश बोला ।

कुछ भी हो, भैय्या मुझे तो बड़ा डर लगता है । अब पाकिस्तान के राज में रहना पड़ेगा । भाभी सिकुड़ कर बोलीं ।

और फिर ये मुसलमान बड़े खराब होते हैं । हरीश ने बात पूरी की ।

क्यों व्यर्थ मे किसी जाति को बदनाम करते हो हरीश यह ठीक नहीं ।

कुछ भी हो मैं तो इन्हें गुण्डा ही कहूंगा ।

तुम समझे नहीं हो हरीश, जिस दिन तुम्हे ज्ञात होगा कि कुमारेश सत्य कहता था । उस दिन तुम्हें पश्चाताप होगा ।

भाभी हँसकर बोली—अरे भैय्या क्या रक्खा है इन बातों में । अच्छा बटवारा हो जाने के बाद क्या होगा ?

बुजुर्गों की तरह बोलते हुए कुमारेश ने कहा—होगा क्या जहाँ पर मुसलमानों की संख्या अधिक है वहाँ पर पाकिस्तान और जहाँ पर हिन्दुओं की संख्या अधिक होगी वहाँ पर हिन्दुस्थान होगा । दो उपनिवेष हो जायेंगे । एक पर पाकिस्तान राज्य करेगा । दूसरे पर हिन्दुस्तान ।

यह तो मैं भी जानती हूँ पगले । इसके अतिरिक्त और कुछ तो गड़ बड़ न होगा ।

कैसा गड़बड़ भाभी ।

यही हिन्दू मुसलमान की लड़ाई ।

भाभी तुम नारी हो, इस कारण डरती हो। नारी भावना स्वभाववश डरपोक होती है।

तो भैय्या मेरे कवि भी हैं। भाभी आँख नचा कर बोली।

भाभी मैं कवि कहाँ, यदि कवि होता तो प्रतिदिन सैकड़ों नूतन संसारों की रचना करता। एक को उबारता तो दूसरे को डुबोता। विप्लव की हिलोर मचा देता जग में, मैं तो सीधा-साधा युवक हूँ।

हाँ आप सीधे हैं कुमारेश। अच्छा मैं चला उठते हुए हरीश बोला। भाभी नमस्ते।

अब कब मिलोगे कुमारेश।

जब ईश्वर मिलाये।

बड़े भाग्यवादी हो भैया।

हरीश के जाने के बाद भाभी कुमारेश से बोली—भैय्या हरीश बड़ा नटखट है। कहता है हिन्दुत्व ही जीवन है। जातीयता एवं राष्ट्रीयता हिन्दुत्व ही प्रदान कर सकता है। कहता है कि हिन्दू वह शब्द है, जो कि सबसे उच्च और पवित्र है। हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व है। यही उसका नारा है।

भाभी अभी वह अपने संकीर्ण विचरों से बाहर नहीं निकल पाया है। धार्मिक बातें तथा केवल अपनी ही जाति के चौबिसों घण्टे गुन-गान से तो बेड़ा पार नहीं हो सकता। युग बढ़ रहा है, फिर सब धर्म भी विश्व बन्धुत्व के गीत गाते हैं। हम मानव ही ऐसे पागल हैं जो उसका गलत

अर्थ लगाकर बुरे कर्म कर डालते हैं। क्या यह उचित है भाभी ?

मैं क्या जानूं भैय्या यह तुम्हीं लोग समझ सकते हो। आज कल की परिस्थिति देख देखकर मेरा जी घबड़ाया करता है। तुम्हारे भैय्या तो रात को देर से आते हैं, और सारा दिन तुम भी घूमते रहते हो मेरा तो हृदय चिंतित रहता है भैय्या।

चिन्ता किस बात की भाभी। डरने की कोई बात नहीं है। व्यर्थ ही में कुछ स्वार्थी लोगों ने अफवाह उड़ा दी कि दंगे होंगे। भला दंगे कैसे होने पायेंगे, इतनी पुलिस फौज किस लिये है। सरकार चुप थोड़े बैठेगी, और फिर दंगे की सम्भावना, क्यों ? लाहौर तो उनको पाकिस्तान में मिल गया है यदि यहाँ पर दंगे होंगे तो उनकी ही हानि होगी। आप तो बात-बात पर डरने लगती हैं।

डरूँ न तो क्या करूँ, दिन भर अकेले जी ऊबा करता है। ननद रानी तो सो भी जाती हैं, पर दिन में मुझे नींद भी तो नहीं आती।

अच्छा भाभी कल से मैं घूमने न जाऊँगा। दिन भर घर में बैठे-बैठे पहरेदारी किया करूँगा और आपस बातें भी। समझीं मेरी अच्छी भाभी।

बड़े अच्छे हैं, मेरे कुमारेश भैया।

लगीं करने चापलूसी।

नहीं चापलूसी काहे को । शाम को मुझे एक साड़ी लेनी है । और ननद रानी के लिये जम्पर का कपड़ा लेने चलेंगे आप ।

अवश्य ।

रही ।

हाँ रहो ।

३

२७ फरवरी सन् १९४७ की एटली घोषणा से भारतीयों को निश्चित रूप से ज्ञात हो गया था, कि आँगलवासी भारत छोड़ने वाले हैं। २७ फरवरी को एटली ने कामन्स सभा में भाषण देते हुए कहा था, कि आज भारत की परिस्थिति ऐसी हो रही है कि हमलोग उसे ऐसी अवस्था में अधिक दिन नहीं छोड़ सकते। इसलिये ब्रिटिश सरकार यह निश्चय करती है कि वह मुस्लिम लीग के सहयोग से भारतीय विधान बनने तक की प्रतीक्षा न करेगी और जून १९ ८ तक भारतीय सत्ता भारतीयों के हाथ में सौंप दी जायेगी। इसको कार्यरूप में परिणत करने के लिये २४ मार्च सन् १९४७ को लार्ड वावेल के स्थान पर लार्ड माउंट बेटन को भारत का गवर्नर-जनरल बना कर भेजा गया था।

इसके पूर्व ही भारतवासियों का ज्ञात हो गया था, कि भारत को स्वतंत्रता मिलेगी तो अवश्य परन्तु, परछिन्न भिन्न हो कर। क्योंकि १५ मार्च सन् १९४६ को एटली घोषणा, मंत्रिदल मिशन का भारत आगमन, एवं भारत मंत्री लार्ड पथिक लारेंस का १६ मई सन १९४६ का भाषण भी इसकी पुष्टि करता था कि भारत स्वतंत्रता में कुछ गड़बड़ी आ जायेगी। इसके पश्चात

अस्थायी सरकार की स्थापना हुई, इसमें लीग वालों ने अपने नाम भेजने से इनकार किया।

फिर आया १६ अगस्त सन् १९४७ भारतीय गगन पर एक अभिशाप लेकर। कलकत्ते के दंगे लीगवालों का उत्पात एक दुःख दर्द की कहानी बन कर भारतीय जीवन में आज तक फहरा रही है। २८ अगस्त सन १९४६ को वाइसराय ने रेडियो पर भारतीय स्थिति पर विवेचन करते हुये कहा कि लीग ने असहयोग का अड़ंगा लगाया है वह ठीक नहीं है। मैं और नेहरूजी दोनों इस बात का प्रयत्न करेंगे कि अंतरकालीन संयुक्त सरकार बन जाये। केवल मुस्लिमलीग ने अड़ंगा ही नहीं लगाया बल्कि सीधी कार्यवाही के नाम पर बदनमी का सहारा लिया है। १६ अगस्त कलकत्ते का दंगा और उसके बाद नोआखाली का उत्पात इतिहास में एक काली घटना है।

फिर जिन्ना का विभाजन पर अड़े रहना भी भारतीय विभाजन की पुष्टि करता था। कांग्रेस नेताओं ने लाख प्रयत्न किया कि भारतीय अखंडता स्थिर रहे, पर जिन्ना तथा अन्य लीगी नेताओं का पाकिस्तान की मांग पर अड़े रहना इस गुत्थी को सुलझा न सका। कई बार बात चीत हुई, नेहरूजी, बल्देवसिंह, जिन्ना आदि उड़कर लंदन भी गये, पर उसका कुछ फल न निकला। भारत विभाजन का सिद्धांत अटलता के साथ लीगियों के मस्तिष्क में चक्कर काटता रहा

और लीग अपनी पाकिस्तान की मांग से न हटी। वह मुसलमान बहुमत वाले प्रांत में अपना पाकिस्तान लेने की हठ में अड़ी रही।

पाकिस्तान की मांग सारे भारत के मुसलमानों में फैली। सारे प्रांत के मुसलमानों ने पाकिस्तान लेकर रहेंगे के गगनभेदी नारों से आकाश गुँजा दिया। नेता लोग इस काली करतूत के भविष्य की कल्पना में सोचते रहे कि क्या करना चाहिये और क्या नहीं ?

भारतीय जान चुके थे। भारत के बच्चे से बूढ़े तक को यह आभास हो रहा था कि भारतीय गगन पर दुर्दिन की काली रेखायें छाने जा रही हैं। हमारा भारत की अखंडता आज छिन्न भिन्न होने जा रही है। और उसके साथ साथ वह यह भी जानते थे कि यदि यह भी अवसर हाथ से गया, तो काफी समय तक स्वतंत्रता की बाट और जोहनी पड़ेगी। इसी कारण जानते हुये कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के प्रश्न द्वारा भारतीय गगन पर अभिशाप के बादल छाते आ रहे हैं, हम लोग चुप रहे।

भारतवासी ३ जून की राह देख रहे थे। उसी दिन सरकारी घोषणा होने वाली थी। स्वतंत्रता का रूप क्या होगा। वैसे तो पत्र पत्रिकाओं में २ जून को ही आ गया था। पर उसको निश्चित रूप से कोई भी मानने को तैयार न था। ३ जून को भारत में एक विचित्र प्रकार का वातावरण फैल रहा था। नगरों में एक

भय मिश्रित उल्लास छाया हुआ था कि क्या घोषणा होगी ? पुलिस सशंक थी।

शाम होते ही लोग रेडियो के समीप एकत्रित होने लगे। एक-एक रेडियो के समीप दो २ सौ मनुष्य एकत्रित थे। वाइसराय नेहरू जिन्ना और बल्देवसिंह की घोषणा हुई। आप सबने करीब २ एक मत से स्वीकार कर लिया था कि हम भारत विभाजन स्वीकार करते हैं। केवल जिन्ना ने अपनी घोषणा करते हुए कहा था, कि मैं अपनी ओर से इस घोषणा को कार्यान्वित करने का प्रयत्न करूँगा, पर मुझे अपनी लीग कौंसिल से राय लेनी पड़ेगी।

साथ-साथ यह भी घोषणा की गयी कि अब ब्रिटिश भारत को जून सन् १९४८ के पहले ही छोड़ देंगे। पार्लियामेन्ट में भारत को सत्ता देने के लिये कानून बना दिया गया। वह कानून भारत स्वाधीनता दिवस के नाम से घोषित किया गया।

वही हुआ जिसकी बहुत पहले से आशा थी। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान भारत में दो राष्ट्र। भारत का विभाजन होगा। हिन्दू और मुसलमान में अब सदा के लिये अन्तर आजायेगा। भारत के दो लाल हिन्दू और मुसलमान अब अलग-अलग हो जायेंगे। भारतीय एकता, संसारिक व्यवहार सब लुप्त हो जायेगा।

आंगल राज्य भारत से जा रहा है, पर किस रूप में यह हम लोगों को सोचना है। हिन्दू और मुसलमान का प्रश्न छोड़

कर, जिसका कि निपटारा मुश्किल ही है। धर्म की झूठी परिभाषाएँ देकर, धार्मिक कृत्यों के गलत अर्थ बताकर मुसलमानों को बहकाया गया। इस्लाम खतरे में है का नारा बुलन्द किया गया। पाकिस्तान ही इन मसलों को हल कर सकता है के नारे लगाये गये, और आंगल सरकार राजनीति विभाजन पालिसी लेकर राजनीति में आगयी। और अपना खेल-खेल कर हिन्दू और मुसलमानों को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का जाल दिखाकर ३ जून की घोषणा सन्मुख लायी। आजादी लेकर या अभिशाप कौन जाने ?

लोगों ने घोषणा सुनी और कह पड़े बुरा हुआ। कांग्रेस विरोधी संस्थाओं को मौका मिला। और उन लोगों ने कांग्रेस की खिल्ली उड़ानी चाही। वर्षों के कार्य पर, उनके परिश्रम पर पानी फेरने का प्रयत्न किया गया। भारत के खण्डित स्वरूप को बता कर, उस पर झूठे आठ आठ आँसू रोये। गये विरोधियों ने ताने दिये विरोध में नारे लगाये। और समझनेवाले यह समझकर कि अँगरेज जा रहे हैं चुप रहे।

भारतीयों में यह हवा उड़ कर पहुँचने लगी थी कि यह ब्रिटिश का जाल है। वह समझती थी। पर चुप थी।

प्रश्न आता था लोगों के सन्मुख कि आगे क्या होगा ! कौन-कौन से प्रान्त पाकिस्तान में जायेंगे, किस समय तक अँग्रेज पूर्णरूप से भारत छोड़ेंगे। भारत और पाकिस्तान का आपस मे क्या सम्बन्ध रहेगी आदि ?

इस प्रकार ३ जून कुछ भारतीयों के हृदय में उल्लास लेकर आया, कुछ के हृदय में निराशा, पर भारत स्वतन्त्र होने जा रहा था। भारत स्वतन्त्र होगा, भारतीय स्वतन्त्र होंगे। एक अलग उनका राष्ट्र बनेगा। भारतवासियों के अपने स्वतन्त्र विचार होंगे। भारत स्वतन्त्र होगा ही, और साथ-साथ टूटेंगी हम लोगों की सदियों की दासता की बेड़ियाँ।

३ जून आया और चला गया फिर भी भारतीय इतिहास में वह एक महत्वपूर्ण तिथि थी। वह घोषणा जिससे कि लोगों को ज्ञात हो चला था कि क्या होने जा रहा है। उसी दिन मालूम हुयी थी।

४

ज्यों ज्यों भारत में ब्रिटिश सत्ता समाप्त होने के दिन निकट आते जाते थे। त्यों त्यों भारतीयों में एक नया जोश आता जाता था।

भारत का खंडन हिन्दू मुसलमान में एक खाई सीलेकर आया। दोनों में अंतर आ गया। एक दूसरे से दूर दूर रहने लगे, और एक हद तक शत्रु भी समझने लगे थे। आज यह स्वतंत्रता दो जातियों में मतभेद पैदा कर रही थी।

स्वतंत्रता की पहली सीढ़ी १५ अगस्त से खुलने जा रही थी। वर्षों की लम्बो दासता की जंजीरें टूटने जारही थी। भारतीयों में मानवता जागने लगी थी, और साथ साथ दानवता भो। आशा भरे सपनों में निराशा की बदली भी दिखाई पड़ जाती थी। सुन्दर सितारों के स्वरों में कहीं कहीं तार टूटने के स्वर भी सुनायी पड़ जाया करते थे।

१५ अगस्त स्वतंत्रता लेकर आरहा है। भारतीयों की लम्बी वर्षों की साधना के उपरान्त, उनको १५ अगस्त को तपस्या का फल मिलने जा रहा है।

यह स्वतंत्रता संसारिक क्षेत्र में अपूर्व है। यह स्वतंत्रता आशा निराशा, प्रसन्नता, दुःख, ग्लानि, क्षोभ सब साथ लेकर आरही है। कल्पना भरी उड़ान के सपनों में जब भारतीयों

ने स्वतंत्रता का रूप देखा था, तब ऐसा न था। फिर भी भारत स्वतंत्र हो रहा है।

पूर्ण स्वतंत्रता की माँग थी, मिली खंडित। हिन्दू मुसलमान के हिल मिल रहने की माँग थी पर हो गये अलग अलग। धर्म और जातीयता को एक दूसरे में परस्पर गूंथ कर विश्व बन्धुत्व स्थापित करने की कल्पना थी, पर वह पूर्ण न हो सकी। सब कछ उल्टा हुआ। कुछ तो होना ही था। इस स्वतंत्रता में और पूर्व वाली कल्पना की स्वतंत्रता में कितना अंतर था।

३ जून को घोषणा से मुस्लिम बहु संख्यक नगरों के हिन्दू निवासियों में बड़ी खलबली मच गई। अभी तक भारत विभाजन की एक अफवाह थी, पर ३ जून के उपरान्त प्रत्येक को ज्ञात हो गया था, कि १५ अगस्त तक विभाजन होकर पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को सत्ता सौंप दी जायगी। उन लोगों को पाकिस्तान के राज्य में रहना पड़ेगा जिसकी की नीव ही इस्लाम धार्मिक पक्षपात एवं मुस्लिम हित पर खड़ी है। लोगों संशक थे कि कहीं फिर से धर्म के नाम पर कुछ युद्ध शुरू न हो जाय।

विमल ने कुमारेश को पुकार कर कहा—भैय्या देखो सड़क पर क्या हो रहा है। कुमारेश बैठा हुआ एक पुस्तक पढ़ रहा था। उसने दृष्टि उठा कर देखा, तो कमल और विमल नीचे झांक रही है। कुमारेश उठता हुआ बोला—क्या बात है बहन।

कुछ नहीं भैय्या नीचे तो देखो। कुमारेश ने झाँक कर

देखा। एक विशाल जन समूह हरे झंडे के साथ पाकिस्तान ले लिया के नारे से गुंजाता हुआ सड़क से गुजर रहा था।

कमल ने पूछा—यह क्या है भैय्या।

कुछ नहीं बहन पाकिस्तान मिलने के जोश में यह लोग अपनी खुशी प्रदर्शित कर रहे हैं कहकर कुमारेश अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

पाकिस्तान ले लिया है का स्वर प्रतिक्षण कुमारेश से दूर होता गया। वह गम्भीर चिन्तत में लीन हो गया। हरीश का कहना ठीक निकला भारत विभाजित हो गया, कितनी ही जल्दी हम भारत माता की गोद में पल कर, अपनी जन्म भूमि में उत्पन्न होकर, अपनी मातृभूमि में ही विदेशी हो गये।

विमल आ कर कुमारेश की कुर्सी के पीछे खड़ी हो गई और बोली—क्या सोच रहे हो भैय्या? भाभी कब से आपको भोजन के लिये बुला रही हैं।

बड़े भैय्या क्या खा चुके?

विमल ने उत्तर दिया—हाँ वह खाकर दुकान पर चले गये।

ओह तब तो काफी देर हो गयी चलो चलता हूँ।

भोजन करते समय भाभी ने पूछा—कुमारेश भैय्या तुमने आज जलूस देखा।

हाँ भाभी देखा। एक उल्लास और खुशी उनके चेहरे से टपक रही थी।

और साथ में भयंकरता भी। भाभी ने वाक्य पूरा किया।

भाभी ?

क्या—कुछ दूँ।

कुछ नहीं।

फिर क्या कुमारेश भैय्या ?

हरीश आया था ?

नहीं तुम्हारे पीछे कभी नहीं आया। हाँ चार दिन पहले मुझे सड़क पर मिला था। कहने लगा कि भाभी मृत्यु की नौका पर सवार होने जा रहा हूँ। जीवन की अन्तिम घड़ी अब पास आ गयी है। अब हँस हँसकर जीवन दीप बुझाना है। कुमारेश से जाकर कह देना कि अब हरीश उनसे न मिल सकेगा। वह रहेगा लाहौर में ही पर उसकी दृष्टि से दूर बहुत दूर। चेहरा सूखकर रह गया था, पहचाना नहीं जा सकता था बेचारा।

क्या करनेवाला है वह ?

कह नहीं सकती भैय्या, पर आज कल स्थिति ठीक नहीं लाहौर की। भाभी रुक-रुक कर बोलीं।

हाँ भाभी मैं जानता हूँ कि आज कल स्थिति ठीक नहीं है। प्रत्येक मुसलमान के मुख पर क्रूरता और भयंकरता टपकने लगी है। उनका हँसी मजाक थरथराहट पैदा करनेवाला अट्टहास। हमारी माँ बहनों को सड़क पर चलती हुई देखकर एक विचित्र प्रकार की दृष्टि से घूरना उनकी मनोवृत्ति को प्रकट करता है। वातावरण विषैला होता जा रहा है। कुछ कहा नहीं जाता कि क्या होनेवाला है।

आप तो प्रजातन्त्र की बात करते थे कुमारेश भैय्या। सबने घूम कर देखा तो हरीश था।

आओ भाई हरीश बैठो। हाँ मैं प्रजातन्त्र की बातें करता था पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि मैं गलत रास्ते पर था।

हरीश एक विचित्र प्रकार की अट्टहास करता हुआ बोला—हाँ आज सैकड़ों हिन्दू कहते हैं कि हम गलत रास्ते पर थे। अब वह समझे। हिन्दुस्तान के नेता मुख्यतय: हिन्दू जाति में से हैं। फिर हैं वे विद्वान। वहाँ पर वह कर्तव्य को जानते हैं वहाँ पर अल्पमत पर अत्याचार होना असम्भव है और यहाँ पर इस्लाम, पाकिस्तान, जिहाद।

आगे कुछ न कहो हरीश भाई, मेरा हृदय बैठा जा रहा है। मुझे मालूम पड़ता है कि वास्तव में कुछ अनिष्ट होनेवाला है। कोई आकर मुझे मार दे पर मैं उसका प्रतिकार न करूँगा क्योंकि मैंने न कभी किया है, और न कर सकूंगा; क्योंकि मेरी आत्मा सदा बुद्ध और गान्धी के सिद्धान्तों पर चली है। मुझे अपना पथ ज्ञात है। मानव मानव से लड़ेगा लड़ने दो। एक समय आयेगा—

बात काटकर हरीश बोला—बस करो कुमारेश भैय्या। तुम ठहरे अहिंसा के पक्षपाती और मैं ठहरा एक गर्म खूनवाला व्यक्ति। कुछ भी हो जो प्रतिकार का शब्द तुम लाये हो वह तुम न करोगे पर तुम्हारे ही लाखों भाइयों को करना पड़ेगा।

प्रतिशोध और प्रतिकार की भावना ले डूबेगी एक दिन।

फिर वही बातें। मैं चला। मैं केवल इतना ही कहने आया था कि समय के साथ प्रत्येक मानव को अपना सिद्धान्त बदल देना चाहिए। मैं जानता हूँ कि यदि मानव अपना सिद्धान्त स्वयं न बदलेगा, तो उसे स्वयं समय बदलवा देगा। मैं सम्भवतः अब फिर न मिल सकूं अच्छा मैं चला, जै भारत।

भाभी के मुख से केवल यह शब्द निकले—चला गया।

हाँ भाभी वह अपने पथ पर है और मैं अपने पथ पर। महान अन्तर है हम दोनों के बीच में, फिर भी वह मेरा अभिन्न मित्र है।

कुछ भी हो आज युग के साथ वह जा रहा है। भाभी बोली।

अच्छा. आप भी उन्हीं विचारों की हैं, जोकि हरीश में विद्यमान हैं।

नहीं भैय्या यह कोई बात नहीं, पर आज की स्थिति यही माँग रही है कि साहस तथा बल चाहिये।

बल कैसा मुसलमानों को मारने के लिये।

भाभी—नहीं रक्षा के लिये।

कुमारेश निरुत्तर हो गया। एक नारी के साधारण उत्तर से वह आगे बोल न सकेगा, वह स्वयं भी यह नहीं जान पाया था।

कुछ देर रुक कर भाभी ने पूछा—भैय्या मेरा जी तो कभी कभी यह कहता है कि कहीं भाग चलना चाहिए?

कैसी बातें करती हो भाभी भागना क्या अर्थ रखता है। यह हमारा घर है। हमारे पूर्वज इस घर में वर्षों से रहते आये हैं। यहीं पर वह जन्मे और मरे। इसी घर में हम जन्मे हैं और इसी में मरेंगे। भागना कायरता है।

आपका यहीं पर मुसलमानों के हाथ घुल-घुल कर मारा जाना वीरता है न।

हाँ वीरता है भाभी अपने जन्म स्थान में यदि मृत्यु हुई, तो यह हमारे सौभाग्य की बात होगी।

सौभाग्य की या दुर्भाग्य की यह तो समय ही बतायेगा। परिवर्तन हो रहा है, उसमें जिसको-जिसको परिवर्तित होना होगा वह होकर रहेगा।

अच्छा भाभी भैय्या आज कल की स्थित को देख कर क्या कहते हैं।

यही कि समय बुरा आ रहा है। आये दिन उत्पात होते हैं भगदड़ मचती है, सावधानी से रहना चाहिए।

क्या उनका विचार भी लाहौर छोड़ने का है या नहीं।

वह भी यही कहते हैं कि बाहर जाने से क्या लाभ। यह ही हम लोगों की ड्योढ़ी है। यहीं पर जन्मे हैं और यहीं पर मरेंगे।

उत्पात के बारे में उन्होंने कहा है कि यह कुछ दिनों के लिये हैं। झगड़े होंगे अवश्य पर कुछ समय के लिये। पुलिस

और मिलेटरी यों ही तो बैठी न रहेगी। कोई विशेष चिन्ता की आवश्यकता नहीं केवल सावधानी चाहिए सावधानी।

यही भैय्या ने मुझसे कहा था। और यह ठीक भी है।

भाभी ने उत्तर दिया—यह ठीक हो या गलत पर मुझे तो एक बड़े अनर्थ की सम्भावना दीख पड़ती है।

कैसी भाभी ?

जैसी की कलकत्ता और नोआखाली में हुई थी।

उससे भी भयंकर होगी भाभी। विमल आती हुई बोली।

चुप रहो विमल जो होगा सो देखा जायगा। कुमारेश डाट कर बोला। अभी से क्यों चिन्ता करने की आवश्यकता।

चिन्ता क्यों न करें भैय्या, जो कुछ होगा, भोगना तो अपने सिर पर पड़ेगा।

विमल खुश होकर बोली—ठीक है भाभी।

रात को बड़े भैय्या आये उनके मुख पर चिन्ता की रेखायें थी। कुमारेश ने भैय्या को देखते हुए कहा—क्या बात है भैय्या। आज आप इतने चिन्तित क्यों हैं।

चिन्तित न हो तो क्या खुश होने का समय है। आज मैंने खुले आम लोगों के मुख से कहते हुए सुना। उठो इसलाम के प्रतिपालक, जिहाद का समय आ गया है। काफिरों को बुतपरस्तों को अपने पाक परवर दिगार की साया में लाओ जन्नत मिलेगी। लाहौर की सड़कों पर घूमते हुए मुसलमान की सूरतों पर एक रोष टपकता रहता है। बात-बात पर हिन्दू दुकानदारों

से लड़ पड़ते हैं। चक्कू छूरी सब जेब में डाले हुए सड़कों पर अवारों और लंफगों के भांति घूमा करते हैं। सड़क पर चलती हुई लड़कियों को ऐसा देखते हैं कि मानों कच्चा खा जायँगे। लाहौर में एक ऐसी परिस्थित एवं वातावरण उत्पन्न हो रहा है जिससे कि प्रत्येक कहता है कि अनर्थ होने वाला है। सत्ता मिलने में अभी दस दिन हैं, पर अभी से ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही है जो कि हृदय में भय उत्पन्न करती है।

तो आपका विचार क्या है भैय्या।

कुमारेश मैं चाहता हूँ कि तुम अपनी भाभी, विमला और कमला को लेकर पूर्वी पंजाब की ओर चले जाओ। परिस्थित देखकर मैं भी चला आऊँगा।

पर ?

पर का समय नहीं है मेरे भाई। जान बचानी है तो जल्दी करो आवश्यक सामान लेकर कल परसों तक चल दो। देर करने से काम न चल सकेगा। परिस्थित किसी समय भी गम्भीर हो सकती है।

जैसी आपकी आज्ञा ?

अच्छा में परसों के लिए टिकट बनवाये लाता हूँ।

भाभी चलो सामान बाँधो लाहौर हमें छोड़ना ही पड़ा। दुखी स्वर में कुमारेश बोला।

भैंय्या की यही आज्ञा है।

कुमारेश आज दुखी है। उसे इतना मालुम था कि झगड़ा

अवश्य होगा। पर उसे कभी इतना ज्ञात न हुआ था कि परिस्थित इत ी गम्भीर हो जायेगी।

भैय्या लौट कर आ गये और कुमारेश की ओर देख कर बोले—लो चार टिकट मैं बनवा लाया हूँ, और साथ-साथ झगड़े का दृश्य भो देख कर चला आ रहा हूँ। लगता है आज से ही श्री गणेश हो जायेगा।

फिर क्या किया जायेगा। कुमारेश बोला।

कुछ नहीं। परिस्थित और ईश्वर को मंजूर नहीं कि हम लोग लाहौर छोड़ें। यदि जीवन भाग्य में है, तो हर हालत में जीवित रहेंगे, और यदि मरना है तो कहीं भी हों काल के हाथ में जाना है।

फिर जाने का विचार?

परिस्थित के सुधारने पर ही किया जा सकेगा।

तो अभी। कुमारेश ने पूछा।

रक्षा के लिये प्रतिक्षण तैयार रहना चाहिए।

आत्मरक्षा?

और क्या दूसरों की रक्षा के लिए?

चलिये भोजन ठंढा हो रहा है। कमला ने आकर कहा। भविष्य को परिस्थित पर छोड़ कुमारेश चौके की ओर चल पड़ा।

५

१४ अगस्त तक लाहौर में छुटपुट छूरे बाजी की घटनायें होती रही। पर १६ अगस्त को लाहौर में दंगा ज्वालामुखी की भांति फूट पड़ा। सत्ता को मिले केवल एक ही दिन हुआ था कि समाचार पत्रों में दंगे के समाचार प्रकाशित होने लगे, कि पश्चिमी पाकिस्तान में हिन्दू और सिक्खों पर अत्याचार होने लगे हैं। लाहौर जलने लगा। लाहौर के चारों ओर प्रलय की आँधी सी मच गई।

कुमारेश लाहौर से जा न सका, जब जाने का विचार होता, तब-तब परिस्थितियाँ रोड़ा बनकर उसके सामने आती रहीं। अब तो असम्भव था। लाहौर में जिहाद शुरू हो गया था। कुमारेश अपने घर से जिधर की ओर भी दृष्टि उठाता तो पाता आग, आग की लपटें। भैय्या भाभी बहन और कुमारेश प्रतिक्षण मृत्यु से लड़ते हुए, आगे बढ़ रहे थे।

लाहौर में चारों ओर धुआँ छा रहा था। वही लाहौर जहाँ की सड़कों पर सुन्दर रमणियों का चलना फिरना। दुकानें ट्रामें और बसें लोगों के कारण भरी रहती थीं। आज खाली थीं। काली और अंधेरी सड़के मौत का निमंत्रण दे रहीं थीं। क्षण-क्षण पर धायँ-धायँ की आवाजें, अंतरनाद, स्त्रियों का अपहरण और मृत्यु दृश्य दृष्टिगोचर होते थे।

कुमारेश अपनी छत की अटारी से खड़ा हुआ दृश्य देख रहा था। लाहौर की बड़ी-बड़ी इमारतें भस्मीभूत हो रही थीं। लाशों पर लाशें गिरती थीं। आग की लपटों के बीच करुण स्वर इस बात का स्मरण दिला रहे थे, कि मानों काली भैय्या स्वयं खप्पर लिये हुए रण नृत्य कर रही है। आज मानव से मानव जूझ रहा था। कुमारेश चिन्तित सा खड़ा सोच रहा था वाह रे युग।

भाभी चुपके से कुमारेश के पीछे आ खड़ी हुई और बोली—कुमारेश भैय्या क्या देख रहे हो?

कुछ नहीं भाभी आग देख रहा हूँ। दूर से चीखों की आवाज सुन रहा हूँ। रण नृत्य देख रहा हूँ। भाभी देखो दूर, सामने वह सेठ का पचमंजिला भवन के ऊपर का खंड जल रहा है।

हाँ देख रही हूँ भैय्या। बेचारे सेठ और उसके परिवार को क्या दशा हो रही होगी?

हाँ भाभी आज मानव इतना नीच हो गया है, कि धर्म का स्वय इतना गलत अर्थ लगा रहा है कि अश्चर्य होता है।

धर्म का नहीं भैय्या वह खिलवाड़ कर रहा है। चलो खाना खा लो चल कर। भाभी ने कहा।

कुमारेश हँसा और बोला—वाह भाभी जलते हुये लाहौर के बीच आप कहती हैं कि भोजन कर लो।

तो क्या हुआ भैय्या. अभी हम तो सुरक्षित ही हैं। खाना

खाकर कुमारेश बड़े भैय्या के पास ज़ाकर बोला—भैय्या आप जाकर खा लीजिये, तब तक मैं पहरा देता हूँ। उसने भैय्या के हाथ से बन्दूक ले ली। बड़े भैय्या सावधानी का आदेश देकर चले गये।

एक शांति प्रिय कुमारेश के हाथ में बन्दूक स्वयं कुमारेश यह विचार कर हँसो। ओह यह भी एक संयाग है। हत्याकांड जोर पर था। रात्रि बात रही थी। कुमारेश के मोहल्ले का कोई व्यक्ति सो न पाया था। इस मोहल्ले पर भो गुण्डों द्वारा हमला करने का प्रयत्न किया गया था, पर वह सफल न हो सका। सब पहरे पर थे। एक चिंता की रेखा मुख पर व्याप्त थी। सोना किसका नाम था, विपत्ति में फँसा हुआ मानव कैसे जान सकता है। क्षण-क्षण पर भय, चिन्ता, मृत्यु का आवांहन कर रही थी। जीवन में घात और प्रतिघातों का सुन्दर द्वंद हो रहा था। वाह रे जीवन। कुमारेश चिन्तन में लीन था। कुछ मास पूर्व और आज लाहौर में कितना अंतर था।

सुबह हुई चाय पीते समय बड़े भैय्या ने कहा—कुमारेश, परिस्थित भीषण होती जा रही है। यदि समय पड़े तो ममता हृदय में न आने देना, मर्य्यादा और प्रतिष्ठा अपनी जाति में एक महान महत्व रखती है। संकोच न करना, यदि हाथ उठाना पड़ जाय तो अपना सौभाग्य समझना। ईश्वर साथ देगा।

कुमारेश चुपचाप बैठा हुआ सुन रहा था। बड़े भैय्या कहते ही जा रहे थे। कुमारेश ने भाभी को आते देखकर कहा—भैय्या। भाभी आ रहीं हैं।

आने दो भैय्या। बकते ही गये। नारी मर्य्यादा हमारी हिन्दू जाति में सर्व श्रेष्ठ है इसे न खोना। इसे खोकर पछताना पड़ेगा।

भाभी का सुन्दर मुखड़ा चिन्ता से व्याप्त देखकर कुमारेश से न रहा गया, विमल, कमल, भाभी इन्हीं की रक्षा की बात कर रहे हैं। ओह यह युग क्या करायेगा। भैय्या कह रहे हैं इनकी हत्या। विमल कमल अपनी भगिनी को हत्या। अपनी भाभी प्यारी भाभी, जिनकी को सलोनी आँखों में हर समय शरारत भरी पुतलियाँ खेला करती हैं, जिनकी मुस्कान हृदय में एक प्रकार की गुदगुदी भर देती हैं, उनकी हत्या। ओह नही यह सब व्यर्थ की बातें हैं।

भैय्या।

क्या है कुमारेश ?

कुछ नहीं कुमारेश की आँखों आँसू से रूक न सके। ओह क्या हो रहा है। क्या होने वाला है लाहौर में।

ज्यों-ज्यों दिन बीतते गये, त्यों-त्यों लाहौर की स्थित गम्भीर होती गई। आज तीसरा दिन था। सड़क लाशों से ढकी थी। सारा नगर स्मशान सा दृष्टिगोचर हो रहा था। आदमी जल रहे थे, उनकी सारी सम्पत्ति जल रही थी। और लपटें उठ-उठकर इस बात को जता रही थीं, कि ओ पतिंगो आओ हम में जल मरो। हमं तुम्हारा आवाहन कर रहे हैं।

नगर की जलती इमारतें। नगर के जलते आदमी। नगर का

जलता धन ।उसके साथ आवारों को शक्ल बनाये हथियारों से लैस ये मानव गुण्डे। एक दुख दर्द की दुनिया आबाद कर रहे थे।

कुमारेश रो रहा था। उसने जाना कि अहिंसावादी नीति उसे कायर बना रही है। ओह वह पागल हुआ जा रहा है। हाथ में बन्दूक लिये हुये सामने के जलते हुए मकानों को देखकर कुमारेश रो रहा था। भाभी, भगिनी भावी आशंका से एक विचित्र प्रकार की थरथराहट में थीं। कुमारेश देख रहा था। चौबिसों घंटे खिलखिला कर हंसने वाली उसकी भाभी आज हृदय में एक भय पूर्ण वेदना लिये हुए एक मूर्ति की भांति खड़ी थी। वही भाभी जोकि कुमारेश को हर समय बनाने के लिये बेचैन रहा करती थी, अवसर ढूंढ़ा करती थी, आज भय और आशंका से बेचैन थी। और कुमारेश वह तो पागल हुआ जा रहा था।

सड़क पर चलती हुई बलूची फौजें। उनके साथ पाकिस्तान के गुन्डे। मनवता को दानवता में परणित करने वाले शस्त्र शस्त्रार्थ। सब युग की महानता को मिटा रहे थे। सब पर आज जिहाद का जोश चढ़ा हुआ था।

कुमारेश के मोहल्ले में आज की रात एक अभिशाप लेकर आयी। तीन लगातार हमलों के उपरांत गुन्डों ने विजय पायी और अपने मोहल्ले के छोर के मकान पर लगती हुई आग को देख कर बड़े भैय्या चीत्कार कर उठे। अल्लाह हो अकबर की

हल्की सी ध्वनि कुमारेश के कानों में पड़ी। वह खड़ा सोच रहा था। ठीक है हरीश ने सत्य ही तो कहा था, कि युद्ध होगा। मानव मानव से लड़ेगा। शौर्य की आवश्यकता है, यह अन्याय है। कुमारेश ने सोचा इसे दूर करना है। उठो बन्दूक लो शत्रुओं को बता दो कि एक अहिंसावादी स्वयं समय पड़ने पर इतना निर्मम हो जाता है, कि वह अपनी माँ बहनों की रक्षा के लिये प्राणों की आहुति शौर्यता क साथ देता है। पर यह क्या हरीश ने क्या सच कहा था, कि समय सिद्धांत को स्वयं बदल देता है। कुछ भी हो पर वह क्या सोच रहा है ?

चिन्तन से लीन हो कर कुमारेश ने दृष्टि घुमायी तो मुहल्ला जलने लगा था। अल्लाहो अकबर के नारे प्रति क्षण पास आते जाते थे।

भाभी विमल कमल सिमटी हुई कुमारेश के पास जा खड़ी हुई। बड़े भैया भो नीचे के दरवा बन्द कर ऊपर आ खड़े हुये। आग की लपटे, स्त्रियों का करुण स्वर, मनुष्यों का गोली से मारना सब देख रहे थे। दस पन्द्रह मकान जो बने थे, घेर लिये गये थे। सुन्दर स्त्रियों, कुमारियों और बालिकाओं की खोज की खातिर कामातुर गुन्डों का दल घरों की तलाशी लेने लगा।

कुमारेश के हृदय में द्वंद उठ रहा था। वह एक टक नेत्रों से भाभी की ओर देख रहा था। वही चेहरा। जिस पर शांत ओह वह क्या करे, क्या न करे। वह केवल भाभी की ओर

देख रहा था, और भाभी भी एकटक अपने देवर कुमारेश की ओर देख रही थी।

कुमारेश समय नहीं है, नीचे का दरवाजा टूट चुका है। कुमारेश का ध्यान भंग हुआ वह चैतन्य हो चला था। उसने देखा भैय्या ने यह कह कर बन्दूक पर खटका चढ़ा दिया। पग ध्वनि सुनाई पड़ने लगी थी। बड़े भैय्या ने बन्दूक उठाई एक क्षण उनका हाथ काँपा फिर कर्तव्य समझ कर धायँ २ स्वर निकला। बिमल और कमल गिर पड़ीं। भाभी ने प्यार भरी आँखों से अपनी नन्दों की ओर देखा और दो आँसू निकल पड़े।

बड़े भैय्या ने चीख कर कहा कुमारेश ? मैं अपनी स्त्री को न मार सकूँगा। घोड़ा चढ़ाओ तिमंजिले पर गुन्डे आने ही वाले हैं।

कुमारेश हतबुद्धि था, मन में द्वन्द था। प्यारी भाभी वह चीख उठा। उसने बन्दूक उठाई। भाभी कुमारेश चिल्लाया। भाभी हँस रही थी। कुमारेश ने देखा।

कुमारेश ने बन्दूक तान कर घोड़ा चढ़ाया ? भाभी की आँखों में वही दो बूँद आंसू और मुख पर हँसी थी।

कुमारेश ने पुकारा—भाभी ?

मेरे भैय्या ?

भाभी ?

भैय्या ?

समय नहीं है, जल्दी करो। बड़े भैया चिल्लाये, भाभी नमस्ते और धायँ का स्वर एक साथ निकला। कुमारेश चलो जल्दी छिपो। कुमारेश और भैय्या यह कार्य समाप्त कर दूसरी ओर फाँदकर नीचे के तल्ले में चले गये।

गुन्डे आये, ओह सब मर गईं। थीं तीनों खूबसूरत। चलो लूट तो लिया, आग लगा दो। क्या अच्छा होता अगर तीनों जिन्दा होतीं ?

आग लग चुकी थी। कुमारेश को एक थैली देते हुये बड़े भैय्या बोले—कुमारेश यह लो दस-बारह हजार के नोट हैं बचा सको तो काम आयेंगे। अच्छा अब हम तुम अलग अलग हो रहे हैं। ईश्वर शायद अब हम को न मिला सके। अच्छा चला।

भैय्या कहाँ चले।

जहाँ ईश्वर ले जाय।

मैं भी साथ चलूँगा।

नहीं तू अलग जा मैं अलग जाऊँगा। भाग्य में बदा होगा तो फिर मिलेंगे।

आँखों में आँसू भर कुमारेश बोला—भैय्या रोओ मत।

कुमारेश। जीवन बचाओ बड़ा अमूल्य होता है।

घर से निकल दोनों भाई दो रास्तों पर चल पड़े। कुमारेश एक ओर चलते हुये घूमा, अपने मकान को देख कर उसके

आँखों से आँसू ढुलक पड़े। यह घर उसका था, पर अब वह जा रहा है। कहाँ वह स्वयं नहीं जानता? मृत्यु की गोद में या और कहीं। उसका मकान जल रहा है, और प्यारी भाभी की लाश भी। भैय्या भी नहीं? कहाँ गये कुमारेश जान न सका। भगवान क्या यही विधना का विधान था?

६

जूतों तथा मोजों में रुपया छिपाकर कुमारेश ने संतोष की साँस ली। एक बार घर की ओर देख कर वह स्टेशन की ओर चल पड़ा।

यही सड़कें जिन पर से कुमारेश आज जा रहा है, किसी समय नर नारियों से भरी रहती थीं। एक चहल पहल और जगमाती दुकाने लोगों के मन में आकर्षण पैदा करती थी, और आज, आज यहाँ पर खंडहर है। भग्न मकान, अधजली दुकाने और सुनसान सड़कें एक भयावना दृश्य उत्पन्न कर रही थीं। मौत का सन्नाटा रात्रि को और भी भयानक बना रहा था।

कुमारेश चुपचाप अपने को बचाता हुआ सड़क के फुटपाथ पर चला जा रहा था। दूर से अल्ला हो अकबर का नारा ही उसके हृदय में सनसनी भर देता था। फुटपाथ पर से गुजरते हुये कुमारेश को, सड़कों पर घायल और मरे हुये व्यक्ति दिखाई पड़े। ओह इनमें से कितनों में जीवन सांस अब भी बाकी होगी। कुमारेश ने सोचा। दूर से अल्ला हो अकबर के नारों से गुञ्जित हुई ध्वनि कुमारेश के कानों में पड़ी। वह फौरन फुटपाथ पर लेट गया। लारी में भरे धार्मिक गुन्डे नारे लगाते हुये, कुमारेश के पास से निकल गये।

पग-पग पर, क्षण-क्षण में वह जीवन और मृत्यु के झूलने

पर झूलता हुआ आगे बढ़ रहा था । वह जीवन जिसको कि कुमारेश एक पानी का बुलबुला समझता था, आज इतना अमूल्य हो गया था कि कुमारेश उसके बचाने के लिये सब कुछ करने को तैयार था।

फुटपाथ पर गम्भीर चिन्तन के बीच कुमारेश बक रहा था। जीवन भी क्या है। कुछ समय पूर्व मैं इसे पानी का बुलबुला समझता था। पर आज इसे बचाने के प्रयत्न में हूँ। अहिंसावादी बनता था। इसी कारण अपनी भाभी का अपने ही हाथों खून किया। आदर्शवादी और सिद्धांतवादी बनता था, तभी अपना घर छोड़ा। वास्तव में मैं नीच हूँ। आह नीच नहीं, वह तो सब कोरी कल्पनायें थीं। यह सत्य है। हाँ ठीक कहा है कि जीवन अमूल्य होता है। ठीक है जीवन अमूल्य होता है। तो क्या मैं सिद्धांतों से दूर जो रहा हूँ। सिद्धान्त कैसे? अहिंसा का। आह बेकार है। अब एक ओर अहिंसा दूसरी ओर हिंसा। विजय हिंसा की ही होगी? ठीक है हरीश ने सत्य कहा था, कि समय सिद्धांत को बदलवा देता है। ओह क्या जीवन है। कल तक हमारा घर कितना सुखी था। और आज मेरा कोई नहीं है। कल तक भाभी थी, भैय्या थे, बहनें थीं घर था। पर आज, मेरे जीवन में अंधेरा है। मेरा कोई घर नहीं। मैं वीर हूँ। मृत्यु से लड़ता बढ़ रहा हूँ। काल को जीतने का प्रयत्न कर रहा हूँ। आह सामने मकान जल रहा है। जलने दो। सब जलेंगे। मैं वीर हूँ। वीर कैसा भागने वाला कहीं वीर होता

है। अवश्य होता है। मैं उन सड़कों से गुजर रहा हूँ, जहाँ पर मृत्यु खेल रही है। मुझे बचना है। जीवन अमूल्य है चिल्ला कर, कुमारेश दौड़ने लगा।

आदमी की दुर्बलतायें मौका पाकर कुमारेश के अन्दर आ गयी थीं। वह चैतन्य होते हुए भी वेहोशी में बक रहा था। लाहौर की सड़कों के वातावरण ने उसके दिमाग को विकृत बना दिया था। जो मुँह में आता था बके जा रहा था। जीवन और मृत्यु के संघर्षों के बीच से गुजरता हुआ, पग-पग पर मृत्यु से बचता हुआ, कुमारेश प्रलाप कर रहा था। कभी उसके मस्तिष्क में अपने पर क्रोध आता, कभी गर्व। घात प्रति-घात के कारण वह स्वयं न जान पा रहा था कि वह कहाँ जा रहा है। आज वही कुमारेश जो कि समझदार, सिद्धांतवादी, अहिंसा का पक्षपाती बनता था। मृत्यु के चंगुल में फँस सब भूल गया है। उसमें और एक पागल में कोई अन्तर नहीं। लाहौर की प्रत्येक दीवार उसे खून से रंगी दिखाई देती है। जलते हुए मकानों को देखकर वह अट्टहास सा कर उठता है। मानव दुर्बलताएँ उसके हृदय में क्षण प्रतिक्षण छाती जाती हैं।

यही मानव की कथा है, जोकि कुमारेश में दिखाई पड़ रही है। भाग्य उसे कैसा नचा रहा है।

सब कुछ खोकर कुमारेश को नया अनुभव हुआ। अभी तक वह प्रजातंत्रवाद के सपने देख रहा था। उसे विश्वास न

था कि पकिस्तान में ऐसी लूट मार होगी। आदमियों की जानें इतनी सस्ती हो जायेंगी, कि जगत में मानों मानव जीवन का कुछ भी मूल्य न रहेगा? धार्मिक ओट में जो भयानक अत्याचार या हत्याकांड हुआ, वह दुर्भाग्य नहीं तो और क्या है।

कुमारेश ने सब कुछ खोया। खोकर कुछ पा भी न सका? उसने अपनी प्रिय भाभी को खोया, बहनों को खोया, भैय्या को खोया, घर को खोया, यहाँ तक सिद्धांत को खोया और खोकर केवल भाग्य का दोष जतलाकर रह गया।

कुमारेश पर एक विचित्र प्रकार का पगलपन छाया हुआ था। वह वृक्षों की झुरमुट में छिपता छिपाता, आदमियों की छाया से घबराता हुआ भागा चला जा रहा था।

सांसारिक क्षेत्र का नया अनुभव कुमारेश को विपत्ता पड़ने पर हुआ। वह घर बार छोड़ ममता को हृदय से त्याग, अहिंसा को अपने हृदय से निकाल, जीवन और मृत्यु के संघर्षों में से बढ़ता हुआ जीवन को समझ, अनुभव में पहुँच रहा था। "जीवन एक पहेली" वाला वाक्य उसे समझ में आ रहा था।

अपनी जन्म भूमि लाहौर से जिसमें कि एक बार उसने भाभी से कहा था, कि भाभी लाहौर में जन्मा हूँ लाहौर में ही मरूँगा।" आज वह बात भूल लाहौर से निकल भागने की चिन्ता में लीन, कुमारेश एक विचित्र कल्पना के लोक में उड़ता हुआ, स्टेशन की ओर जा रहा था।

काली भयानक रात्रि में मरघट के समान पथ पर चलते

हुये कुमारेश के मुख से केवल हल्के शब्द निकल रहे थे। वह शब्द एक व्यथा से भरे हुए दुःख दर्द की कहानी लिये हुए, बीते सुख की याद दिला रहे थे।

विपत्ति पड़ने पर मानव घबरा जाता है। उसे सुध-बुध का कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। उस समय वह केवल चाहता है शांति। कुमारेश की भी दशा आज यही थी। वह चाहता था शांति। पर लाहौर की इतनी विशाल भूमि पर वह शांति कहाँ ?

शांत वह बुदबुदाया। ओह शांति तो लाहौर से मीलों दूर है। यहाँ मानवता नहीं, दानवता का सौदा है। जीवन नहीं, काल की गोद है। सुख नहीं, दुख है, खुशी, नहीं गम के आँसू है, मर्य्यादा नहीं मर्य्यादा हरण है। शांति कहाँ। ओह शांति कहाँ मिलेगी उसे ?

अल्लाह हो अकबर। फिर आ गये कुमारेश चौंक उठा। वृक्ष की ओट में छिप कर कुमारेश ने धक धक करते हुए हृदय पर हाथ रख कर उन लोगों के निकल जाने की राह देखी।

वह निकल गये खुशी से कुमारेश कह उठा। वही जीवन, कुमारेश जिसे महत्व नहीं देता था, आज उसी के बचाने में इतना कष्ट सह रहा है। सत्य है परस्थितियाँ मानव सिद्धांत को बदलवा देती है।

थकावट का अनुभव कर कुमारेश फ़ुटपाथ पर कुछ देर

के लिये बैठ गया। हवा लगने पर कुमारेश सजग हो उठा। कुछ सुस्ताकर वह उठा, और बुदबुदाकर मंजिल दूर है। अपने नियत स्थान की ओर चल पड़ा।

कुमारेश सोच रहा था। ठीक है जिस प्रकार हम लोग खिलौने से खेलते है, नचाते है, उसी प्रकार भगवान हम लोगों से खेलता है, और नाना प्रकार के नाच नचाता है। तभी तो परिवर्तन हुआ। क्या परिवर्तन ही संसारिक नियम है ?

यदि परिवर्तन न होता, तो कुमारेश इस हालत में न घूमता। यदि परिवर्तन न होता तो कुमारेश आज अपने हाथ से भाभी की हत्या न करता। परिवर्तन आवश्यक है। यह जग का नियम है।

चलते चलते कुमारेश के पैर थक गये। एक सम्पन्न घराने में उत्पन्न हुआ कुमारेश प्रथम बार इतनी दूर पैदल चला था। उसके पैर जवाब दे रहे थे। प्यास सता रही थी, हृदय बैठा जा रहा था। यद्यपि मंजिल पास ही थी। पानी कुमारेश के मुख से शब्द निकला। पैर लड़खड़ा रहे थे। जबान सूख रही थी हृदय बैठा रहा था। पानी। कुमारेश पानी-पानी कहता हुआ लड़खड़ाते पैरों से आगे जा रहा था। ओह चला नही जाता। कुमारेश का सिर चकरा रहा था। वह सिर पकड़कर बैठ गया। बैठा न जा सका और वह भूमि पर गिर पड़ा।

× × × ×

मैं, मैं कहाँ हूँ ? कुमारेश ने बिस्तर पर से उठते हुए कहा।

जो आप मिलेटरी हस्पताल में है पास बैठे हुए कम्पाउडर ने उत्तर दिया।

मैं-मैं हस्पताल में, मेरा घर, मेरी भाभी ओह सब समाप्त हो गया। कुमारेश फिर बिस्तर पर जा लेट गया।

यह दूध, मैं, भूखा हूँ। पर मेरे रूपये, मेरा जूता सब कहाँ गये चिल्लाता हुआ कुमारेश उठ खड़ा हुआ।

जी इसके बारे में तो मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं शायद मिलेटरी डाक्टर जानता हो। कम्पाउडर ने उत्तार दिया।

कुमारेश चीख उठा—मिलेटरी डाक्टर। कहाँ है उसका कमरा ?

सामने साहब।

डाक्टर ? कुमारेश ने कमरे में घुसते हुए कहा। हल्लो ? ठीक हो। डाक्टर ने हाथ मिलाते हुए।

कुमारेश घबड़ा कर बोला—जीं ठीक हूँ पर मेरे रूपये।

हँसते हुए डाक्टर ने कहाँ—चिंता न करो तुम्हारे रुपये मिलेटरी के सीनियर आफीसर के पास जमा है। चलो चलकर वहाँ अपना नाम एवं जहाँ जाना चाहते हो वहाँ का पता लिखवा दो।

पर मैं किस स्थान पर हूँ ?

लाहौर स्टेशनं के पास रक्षा रेजीमेंट में।

ठीक है।

डाक्टर मजाक करते हुए बोले—भाई मान गया आपने रूपये खूब अच्छी जगह छिपये।

कुमारेश हँसता हुआ बोला—जी साहब समय पड़ने पर खूब उपाय समझ में आ जाते हैं।

जी यह तो होता ही रहता है।

नाम लिख कर मिलेटरी आफिसर ने कुमारेश की ओर देखते हुये पूछा—

तो कुमारेश बाबू आप कहाँ जाना चाहते हैं?

जी मैं, मैं कहाँ जाऊँ, क्षण भर कुमारेश ठिठका फिर सौम्यता से उत्तर देते हुये बोला जी मैं, मैं दिल्ली जाना चाहता हूँ।

दिल्ली। पूर्वी पंजाब तक आप को पहुँचाने का प्रयत्न किया जायेगा।

धन्यवाद।

दिन का जब भोजन कुमारेश के सम्मुख आया तो वह एक दम झिझक उठा! मोटी मोटी रोटियाँ तरकारी नाम मात्र को। उससे खाया न गया।

रात का थोड़ा भोजन कर वह कैम्प के एक कोने में पड़ रहा। कष्ट की प्रारम्भिक अवस्था को देख कर ही उसकी आँखों से आँसू बह चले। रात में वह देर तक न सो सका। जब जब झपकी लगी, तब तब बुरे २ सपने उसके नेत्रों के सामने आते रहे। जीवन की परिभाषा उसकी समझ में आने लगी।

रक्षा शिविर में चार सौ से अधिक आदमी, औरतें एवं बच्चे आ गये थे। दूसरी सुबह को कुमारेश को यह पता चला कि यह शिविर दो दिन बाद ही पूर्वी पंजाब के लिये रवाना हो जायगा।

कुमारेश ने सोचा दो दिन अभी उसे और लाहौर में काटने हैं। वही लाहौर जिसमें कुछ दिन पहले वह निर्भयता पूर्वक घूमता था, आज कैम्प में सीमित है। घर ओह अब तो जल कर भस्म भी हो चुका होगा। मकान और उसकी सुन्दरता धार्मिक कोप के कारण समाप्त हो चुकी होगी।

दो दिन, दूर नहीं। दिन जाते देर भी तो नहीं लगती।

कैम्प में कुमारेश ने न जाने कितनों से बातें कीं और लाहौर में होते हुये अत्याचारों को सुना। आँखों में आँसू भर उसने भी अपने घर की दुर्दशा का हाल लोगों को सुनाया।

अत्याचारों से पीडित मानव एक दूसरे को अपनी विपत्ति का हाल सुनाता है यह भी एक दुःख को भूलने का अस्त्र है।

आठ सौ का काफिला अपनी जन्म जन्मांतर से प्रिय लाहौर भूमि को छोड़ कर हिन्दुस्तान में शरण लेने के लिये चल पड़ा। बच्चे, बूढ़े, औरतें सब के मुख पर निराशा तथा वेदना की रेखा थी। जब काफ़िला चला तब पत्येक ने लाहौर की ओर मुड़कर वेदना के आँसू ढुलकाये।

डाक्टर मजाक करते हुए बोले—भाई मान गया आपने रूपये खूब अच्छी जगह छिपये।

कुमारेश हँसता हुआ बोला—जी साहब समय पड़ने पर खूब उपाय समझ में आ जाते हैं।

जी यह तो होता ही रहता है।

नाम लिख कर मिलेटरी आफिसर ने कुमारेश की ओर देखते हुये पूछा—

तो कुमारेश बाबू आप कहाँ जाना चाहते हैं?

जो मैं, मैं कहाँ जाऊँ, क्षण भर कुमारेश ठिठका फिर सौम्यता से उत्तर देते हुये बोला जो मैं, मैं दिल्ली जाना चाहता हूँ।

दिल्ली। पूर्वी पंजाब तक आप को पहुँचाने का प्रयत्न किया जायेगा।

धन्यवाद।

दिन का जब भोजन कुमारेश के सम्मुख आया तो वह एक दम झिझक उठा। मोटी मोटी रोटियाँ तरकारी नाम मात्र को। उससे खाया न गया।

रात का थोड़ा भोजन कर वह कैम्प के एक कोने में पड़ रहा। कष्ट की प्रारम्भिक अवस्था को देख कर ही उसकी आँखों से आँसू बह चले। रात में वह देर तक न सो सका। जब जब झपकी लगी, तब तब बुरे२ सपने उसके नेत्रों के सामने आते रहे। जीवन की परिभाषा उसकी समझ में आने लगी।

रक्षा शिविर में चार सौ से अधिक आदमी, औरतें एवं बच्चे आ गये थे। दूसरी सुबह को कुमारेश को यह पता चला कि यह शिविर दो दिन बाद ही पूर्वी पंजाब के लिये रवाना हो जायगा।

कुमारेश ने सोचा दो दिन अभी उसे और लाहौर में काटने हैं। वही लाहौर जिसमें कुछ दिन पहले वह निर्भयता पूर्वक घूमता था, आज कैम्प में सीमित है। घर ओह अब तो जल कर भस्म भी हो चुका होगा। मकान और उसकी सुन्दरता धार्मिक कोप के कारण समाप्त हो चुकी होगी।

दो दिन, दूर नहीं। दिन जाते देर भी तो नहीं लगती।

कैम्प में कुमारेश ने न जाने कितनों से बातें कीं और लाहौर में होते हुये अत्याचारों को सुना। आँखों में आँसू भर उसने भी अपने घर की दुर्दशा का हाल लोगों को सुनाया।

अत्याचारों से पीडित मानव एक दूसरे को अपनी विपत्ति का हाल सुनाता है यह भी एक दुःख को भूलने का अस्त्र है।

आठ सौ का काफिला अपनी जन्म जन्मांतर से प्रिय लाहौर भूमि को छोड़ कर हिन्दुस्तान में शरण लेने के लिये चल पड़ा। बच्चे, बूढ़े, औरतें सब के मुख पर निराशा तथा वेदना की रेखा थी। जब काफ़िला चला तब प्रत्येक ने लाहौर की ओर मुड़कर वेदना के आँसू ढुलकाये।

जब इसी काफिले के साथ कुमारेश भी चला तो उसके हृदय में एक मीठो सी टीस उठो, आखिर लाहौर छोड़ना ही पड़ रहा है, कह कर चुप हो गया। वेदना दुःख और निराशा को लेकर काफ़िला भारत भूमि की ओर चल पड़ा। साथ में रक्षा के लिये फौज भो थी।

प्रत्येक व्यक्ति अपने पर बीती हुई एक दूसरे को सुना रहा था। सम्भवतः यही दुख भुलाने का सबसे अच्छा शस्त्र भी था।

सब को ज्ञात था कि भारत और पाकिस्तान दो राष्ट्र बनेंगे। सब को मालूम था कि मुस्लिम बहुसंख्यक वाले नगर पाकिस्तान में जायेंगे। लोगों को यह भी ज्ञात था कि पाकिस्तान बनने के उपरांत कुछ उहद्रव भी होंगे। फिर प्रश्न उठता है कि यह लोग पाकिस्तान बनने के पूर्व हो क्यों न भाग आये ?

अल्पमतों में साधारणतयः यह धारणा थी कि उपद्रव होंगे अवश्य, पर वे पुलिस और मिलेटरी द्वारा शीघ्र दबा दिये जायेंगे यदि उनको इस भयंकर षड़यन्त्र का पता होता जो कि आज सारे पंजाब में छा रहा है तो सम्भवतः वे लोग पहले चले आते।

इस भयंकर भूल के कारण अल्पमतों ने बहुत कुछ खोया, मातृभूमि, जन्मभूमि के साथ बहुतों ने धर्म धन वैभव इज्जत को भी हाथ से खोया। दानवता के पैशाचिक कृत्यों पर वे

विजय न पा सके और अंत में उन्हें अपने को आत्म समर्पण कर देना पड़ा।

दंगों के कारण हिन्दू मुसलमान से डरने और घृणा करने लगा। धर्म की ओट में, इसलाम खतरे में है के नारे में मानवता लूटी गयी। जन्नत तथा बहिश्त की हूरें दिखलाकर सम्पति लूटी गई। जिसने जो कुछ पाया लूटा। सारे पंजाब में लूट का साम्राज्य फैल गया। धन, धर्म, इज्जत, अस्मत सब कुछ लूटा जाने लगा। लूटा गया मानव पागल सा चीत्कार करता हुआ या तो मृत्यु की गोद में चला गया या भाग्य के निष्ठुर हाथों से खेलता हुआ भूख भूख चिल्लाने लगा।

काफिला जा रहा है, काफिला जा रहा है। उसमें जा रहे हैं लाहौर के धार्मिक गुण्डों द्वारा लूटने वाले, पैशाचिक दानवों द्वारा पीड़ित मानव। उन्हें देखकर, उनकी सूरतों को देखकर उनके वस्त्रों को देखकर, उनके वेदना के आँसू देखकर और उन पर पड़ी हुई अमानुषिक विपत्तियों को देख कर कोई भी निसन्देह कह सकता है, कि वास्तव में आज मानवता सो गई है।

लाहौर और भारत की सीमा में कुछ सौ दो सौ मील का न था, था केवल कुछ ही मीलों का, फिर भी कुमारेश किसी को भी बचा कर न ला पाया। कुछ मील का अंतर उसके जीवन में अभिशाप बनकर आ गया। कुछ मील के अंतर ने उसके घर को उजाड़ दिया। इसी अंतर ने कुमारेश को पागल बना दिया था

वह अपने को धिक्कार रहा था। पर वह कर ही क्या सकता था। जब वह लाहौर से जाने का प्रयत्न करता था तब-तब परिस्थितियाँ रोड़ा बन कर सामने आतीं। उन्ही परिस्थितियों ने कुमारेश को इतना निकम्मा बना दिया था कि अपनी भाभी बहन को, चन्द मील का फासला न पार करा पाया। उपाय ही क्या था, भाग्य विधना का विधान भी कोई चीज़ है। क्षण-क्षण विचार परिवर्तन, पग-पग पर आँसुओं की धारा कुमारेश का चित्त ठीक न होने का परिचय दे रही थी।

शांत चुपचाप काफिला फौज के साथ भारतीय सीमा की ओर जा रहा था। सब सुनसान था झाड़ियों के बीच कभी कभी गोलियाँ चलाई जाती थीं, जिसको काल के गाल में जाना होता वह किसी की प्रतीक्षा न करता भूमि पर कटे हुये वृक्षों की भाँति गिर पड़ता। काफिले वाले उसे देखते और आगे बढ़ जाते। फौज के सिपाही उसे उठा कर पीछे आती हुई ट्रक पर डाल देते और यदि उसमें जान होती तो अम्बुलेस मोटर पर पहुँचा देते। मानव का काफिला, जोकि विपत्ता में पड़ कर स्वार्थी हो गया था आगे बढ़ जाता। सब बीच में रहने का प्रयत्न करते। जीवन बचाने की अभिलाषा प्रत्येक मानव में बड़े वेग से थी। सब जीवन चाहते थे। सब बचना चाहते थे। प्रत्येक को प्राण प्यारे थे। विपत्तियाँ, अत्याचार मस्तिष्क को ठीक न रख सके थे। प्रत्येक का दिमाग पागलपन से भरा था।

लाहौर जला। पश्चिमी पाकिस्तान जला और जलकर अपनी काली करतूतों का धब्बा छोड़ गया। जलते हुये लाहौर के भागे हुये व्यक्ति हृदय में प्रतिशोध और प्रतिहिंसा की भावना लिये हुये काफिले के साथ बढ़ रहे थे। प्रत्येक शांति सिद्धांत वाला व्यक्ति आज प्रतिकार की भावना में लीन होकर विपक्षी की ओर घृणा से देख देख कर बदला लेने को सोचता था।

काफिले का प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर का स्मरण करते हुये इस मृत्यु कुन्ड से निकल जाना चाहता था। चलते चलते बच्चों के पैर थकने लगे थे। स्त्रियों के पैर भर आये थे। माथे से पसीना बह रहा था, पर एक विचित्र भय उन लोगों को विश्राम देने का साहस न दे रहा था। गोलियों की अदला बदली के बीच लाहौर और अमृतसर जिले के बीच, कुछ मील फासले में ही मानव मर कर गिर पड़ता था। गोलियाँ मारने और बचाने के लिये चलायी जाती थीं।

भारतीय सीमा केवल चार मील है, की आवाज सुनते ही इन दुखी व्यक्तियों में नया जोश एवं उत्साह आ गया। थकते हुये पैरों की चाल दूनी हो गयी घंटों से चली आती थकावट दूर होने लगी। एक नया जोश, नया प्रेम, नयी अभिलाषा प्रत्येक के हृदय से निकल रही थी। काफिले की चाल तेज हो गयी 'लोगों ने उत्साह के कारण दौड़ना शुरू किया। जीवन बचाने की आशा में केवल चार मील का भय था। भाग्य और

विधना को भूल कर इस समय लोग चार ही मील को मृत्यु कुन्ड समझ कर उससे निकल जाना चाहते थे।

अमृतसर जिले की सीमा दिखाई पड़ने लगी थी। भारतीय सीमा को दूर से देखकर काफिला प्रसन्नता से भारत माता की जय हो का नारा लगाता हुआ बढ़ रहा था। एक नवीन उत्साह प्रसन्नता प्रत्येक के मुख से टपक रही थी। थकते हुये बच्चे भी भारत की सीमा को देख कर खुशी से दौड़ पड़े।

ज्योंहीं काफिले ने अपना प्रथम चरण पाकिस्तान से उठा कर अमृतसर के जिले में रक्खा, त्योहीं एक जोर से जय घोष हुआ भारत माता की जय हो, भारत माता की जय हो।

काफिला भारत की सीमा में प्रवेश कर चुका था। प्रत्येक के मुख पर प्रसन्नता और नवजीवन की झलक थी। सबने ईश्वर को धन्यवाद दिया और नवजीवन पाया जान खुशी से नाच उठे।

कुमारेश भारत की सीमा में आकर फफक-फफक कर रो रहा था। वह सोच रहा था "आखिर वह क्यों लाहौर से भागा उसे भी मर जाना था एकाकी जीवन लेकर वह क्या करेगा।

रक्षा शिविर आठ सौ को लेकर चला था। साढ़े सात सौ व्यक्तियों को भारतीय सीमा में प्रवेश करा पाया। बाकी जीवन के बचाने में प्रयत्नशील होते हुये भी मौत की गोद में चले गये। काल ने उन पर विजय पा ही ली।

रक्षा शिविर के साढ़े सात सौ व्यक्तियों को कैम्पों में लाकर ठहराया गया, जहाँ पर उनके लिये एक नया शब्द "शरणार्थी" प्रयोग में लाया गया। वास्तव में शरणार्थी ही हैं ये लोग, शरण में ही तो आये हैं।

कुमारेश को कैम्प में आकर ज्ञात हुआ कि यहाँ पूर्वी पंजाब में भी दंगे हो रहे हैं। प्रतिकार की भावना प्रत्येक हिन्दू और सिक्ख में भी है। अपने भाइयों के होते हुये पाशविक अत्याचार को वह देख न सके। प्रतिशोध और प्रतिहिंसा की चिनगारी उनलोगों के हृदय में भी भड़की, और प्रतिकार के रूप में उन लोगों ने भी हमला किया। ताली एक हाथ से नहीं बजती गाँव के एक घर में आग लगने से सारा गाँव जल कर भस्म हो जाता है। हैज़ा और प्लेग की हवा के थपेड़ों में हजारों आदमियों की जाने चली जाती हैं। बढ़िया और आँधी में हजारों घर बह, ढह और उड़ जाते हैं। प्रतिकार की भावना भी एक काला संदेशा लेकर आयी। इस भावने को कांग्रेस के समझदार व्यक्तियों ने बुरा कहा और रुकवाया भी। पूर्वी पंजाब के हिन्दुओं और सिक्खों ने यह प्रण कर लिया था कि पूर्वी पंजाब में वही हालत करके छोड़ूगा जो कि हमारे भाइयों के साथ पश्चिमी पंजाब में हुई। मानवता इतनी सस्ती नहीं है। हमारी माँ बहनों की लाज इतनी सरल नहीं है, जोकि दिन दहाड़े लूटी जा सके। इसके प्रतिशोध में इस अपमान में और प्रतिकार की

धधकती अग्नि कुन्ड में विपक्षियों को जलना पड़ेगा। जलना पड़ेगा।

अमृतसर, जालंधर एवं अन्य पूर्वी पंजाब के नगरों में प्रतिकार की भावना प्रज्विलत हो पड़ी थी।

कॅम्प के कोने में पड़ा हुआ कुमारेश अपने भावी जीवन के बारे में सोच रहा था। उसे अब क्या करना एवं कहाँ जाना होगा।

आज पूर्वी पंजाब और पश्चिमी पंजाब दोनों अग्नि में जल रहे हैं। सारा पंजाब जल रहा है। वह क्या करे कहाँ जाय।

पंजाब की हवा खूनी हवा हो गयी थी। उसका वायुमंडल चीत्कार के स्वरों से भर गया था। मानवता का कोई नाम भी न था।

प्रतिदिन पश्चिमी पंजाब से शरणार्थियों की बाढ़ आ रही थी। सताये हुये नवयुवकों के मुखों पर बुढ़ापे की झुर्रियाँ दृष्टिगोचर हो रही थीं। किसी का धन खोया तो किसी का परिवार।

जलते हुये पंजाब में सब शांति चाहते थे। प्रतिदिन आने वाले शरणार्थियों की दशा सुनकर शांति कोसों दूर भाग जाती थी। अग्नि में आहुति पड़ जाती थी और अग्नि प्रचंडित हो प्रज्वलित हो पड़ती थी।

शरणार्थी चोट खाये हुये शरणार्थी, दोनों हाथों से लूट

रहे थे। पुलिस के दबाव एवं नेताओं के जोर देने के कारण यहाँ पर अत्याचार सीमित ही था। लोग अपना दिल दबा दबा कर रह जाते थे। फिर भी प्रतिकार का बदला कुछ होना ही था।

शांति प्रिय कुमारेश को यहाँ पर कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। वह दूर जाना चाहता था। जहाँ पर उसको शांति मिलती। पूर्वी पंजाब उसे काटने दौड़ रहा था। अत्याचारों की दुनियाँ में रहते हुये उसका हृदय ऊब चला था। वह बर्बरता पैशाचिकता के कोई भी दृष्य नहीं देखना चाहता था। एकाकी कुमारेश कहीं शांति की जगह जाना चाहता था।

दूसरे दिन सुबह वह अपने काफिले के इंचार्ज सीनियर आफिसर से मिला और बोला—सर मैं अब पंजाब से जाना चाहता हूँ।

अफसर ने प्रश्न किया—पर कहाँ?

कहाँ? दिल्ली।

अफसर ने कहा—जी ठीक है अब जहाँ जाना चाहते हैं जा सकते हैं। कब तक जाने का विचार है?

जी शीघ्र से शीघ्र। कल शाम की गाड़ी दिल्ली जा रही है।

तो ठीक है। आप कल मुझसे अपने रुपये ले लीजियेगा। धन्यवाद अच्छा नमस्ते।

नमस्ते।

कैम्प में आकर कुमारेश पड़ रहा । कल कल वह पूर्वी पंजाब से दिल्ली के लिये चल देगा । कुछ ही घंटे उस और कैम्प में काटने हैं ।

कुमारेश दिल्ली जाना चाहता है क्योंकि वह इन कैम्पों और ऐसे स्थानों में रहते हुये अब ऊब चुका है । कुमारेश शांति का इच्छुक है। इसी कारण दिल्ली जाना चाहता है ।

८

स्टेशन पर घूमते हुये कुमारेश के कानों में आवाज पड़ी कुमारेश भैय्या, कुमारेश भैय्या।

कुमारेश ने घूम कर देखा तो तीसरे दर्जे से लाला हरीशंकर जी पुकार रहे थे।

ओह लाला जी आप कहाँ ?

भैय्या कहाँ क्या बताऊँ। भाग खींच लाया।

कहाँ जा रहे हैं आप ?

भैय्या दिल्ली जाने का विचार है।

दिल्ली दिल्ली मैं भी तो जा रहा हूँ।

चलो अच्छा हुआ, क्या घर वालों के साथ किसी डिब्बे में बैठे हैं।

जी नहीं मैं अकेला हूँ।

तब तो इसी डिब्बे में आओ साथ ही होगा।

जैसी आपकी इच्छा।

लाला जी कुमारेश के परिचित व्यक्तियों में से थे। लाहौर में कुमारेश की दूकान तथा उनकी दुकान पास ही थी। इसके अतिरिक्त दोनों घरों की स्त्रियों में भी आपस में मेल जोल था।

लाला जी एक प्रमुख व्यवसायी थे। आपका पंजाब तथा दिल्ली में व्यापार था। संक्षेप में कुमारेश तथा लालाजी में घर का-सा सम्बन्ध था।

लालाजी के पास बैठते हुये कुमारेश ने पूछा—लालाजी और लोग कहाँ ?

कैसे और लोग भैय्या केवल मैं और अर्चना बच सका हूं। बाकी सब लोग मृत्यु की गोद में पहुँच चुके।

तो क्या चाची और प्रभा ?

प्रभा का भैय्या कोई पता नहीं और तुम्हारी चाची गोली लगने से मर गई। लल्लू वह तो दो को मार, तथा खुद मर केवल अर्चना को बचा पाया।

ओह लाला जी मेरी भी यही दशा है। विमल और कमल भैय्या के हाथ से मारी गई भाभी को स्वयं मैंने मारा। कोई नहीं है कर कुमारेश रोने लगा।

लाला जी ने ढाढस बधाते हुये कहा—भैय्या अब दुखी होने से कोई लाभ नहीं। न जाने मेरी प्रभा कहाँ होगी। इकलौता बेटा लल्लू भी चल बसा। अर्चना की बुढ़िया माँ वह भी नहीं रही। बुड्ढे को भी तो दुख है बेटा पर अब दुख करने से क्या लाभ।

कुमारेश ने सर उठा कर देखा बूढ़े लाला जी की आँखें गीली हो रही थीं और अर्चना पिता जी से सिमट सिमट कर फसक २ कर रो रही थी।

कुमारेश खिड़की पर सर डाल आँख मूद कर पड़ रहा।

अमृतसर से जब गाड़ी चली तब आकाश में काली घनघोर घटायें छा चुकी थीं। बिजली के कड़क के साथ पानी की फुहारें भी आने लगी थीं। हवा के झोंके क्षण क्षण पर थपेड़ा दे रहे थे।

पानी बढ़ रहा था। भयानक बादल गरज गरज कर चमक चमक कर अपना भयानक रूप प्रदर्शित कर रहे थे।

कुमारेश भैय्या तुम भीग रहे हो लाला जी ने कुमारेश को झिझकारते हुये कहा।

ऊँह क्या है लाला जी।

तुम भीग गये हो भैय्या। खिड़की बन्द कर लो।

हूँ कह कर कुमारेश ने खिड़की चढ़ा ली।

लाला जी ने पूँछा—क्या नींद आ रही है?

नहीं।

किस चिंता में लीन हो लाला जी उसांस लेकर कुमारेश ने पूछा—

किसी में भी नहीं।

लाला जी।

क्या है भैय्या।

आप का लाहौर में कितना धन लूटा गया।

कुछ न पूछो कुमारेश सब कुछ लुटा कर आ रहा हूँ। धन, स्त्री, पुत्र, पुत्री। क्या बचा है मेरा।

ठीक है लाला जी। यही हाल मेरा है, भाभी भैय्या बहन

कोई भी नहीं है मेरे। मैं खुद नहीं जानता कि मैं दिल्ली क्यों जा रहा हूँ। वहाँ जाकर क्या करूँगा। कहाँ रहूँगा।

तुम्हारे करने और रहने की बात ही क्या है भैय्या? अपना घर तो दिल्ली में है ही। बी० ए० करने में एक साल और बचा है। चल कर घर पर रहना और इस वर्ष पढ़ कर बी० ए० तो कम से कम कर ही लेना।

ठीक है लाला जी, पर।

पर पर कुछ नहीं। मेरा लल्लू मुझसे छीन लिया गया उसके स्थान पर तो किसी का होना आवश्यक ही है। ढाढस बधाने के लिये क्या अपने बूढ़े लाला की बात नहीं सुनोगे।

मुझे तो कहीं रहना ही होगा। आप ही के यहाँ रह लूँगा पर आप को इससे कष्ट होगा।

कष्ट काहेका भैय्या? तुम्हारा तो घर ही है। अर्चना और तुमको छोड़ कर तो मेरा कोई भी नहीं है।

पानी के थपेड़े, बादलों की गरज बढ़ती ही जा रही थी। हवा हूँ, हूँ कर थपेड़ा मारने लगी थी।

कुमारेश ने चिल्ला कर कहा—लाला जी शायद आँधी चल रही है।

हाँ भैय्या।

क्या अर्चना सो गयी है।

जी।

कम्पार्टमेंट में रात्रि होने के कारण सोना पड़ गया था।

कुछ ऊँघते झूमते हुये झपकियाँ ले रहे थे । कुमारेश भी आँख बन्द किये हुये खिड़की के सहारे लेटा था।

भैय्या !

क्या है लाला जी ?

नींद आ रही है ।

आप सोना चाहते हैं क्या ?

हाँ।

तो आप सो जाइये। मैं सामान देखता रहूँगा।

ठीक है। गाड़ी स्टेशनों को पार करती हुई भागती चली जा रही थी। वर्षा बन्द हो चुकी थी। कुमारेश ने खिड़की खोल दी। बादल अब भी घिरे थे। भयानक काले बादलों से ढकी हुई रात एक भय उत्पन्न कर रही थी।

कुमारेश ने दृष्टि उठा कर देखा कि प्रायः यात्री सो रहे थे। सब सताये हुए युवक इस समय चिन्ता से सपनों की दुनिया में उड़ रहे थे। अर्चना पिता की टेक लगाये हुए सो रही थी। सब सो रहे थे। केवल कुमारेश के ही आँखों में नींद न थी। गाड़ी में धीमी धीमी रोशनी थी। बाहर घोर अन्धकार छाया था, घोर अन्धकार। कुमारेश कभी लालाजी की ओर देखता तो कभी अर्चना की ओर फिर उसकी दृष्टि बाहर के तिमिर अन्धकार में जम जाती। इस समय अन्धकार ही उसका साथी था।

सारी रात कुमारेश सो न सका। वह केवल अपने अतीत

के सुखद दिवसों की ही याद कर आँसू बहाता रहा। बाहर के अन्धकार को कुमारेश एकटक देख रहा था। उसके आज के जीवन में तथा पहले के जीवन में महान अन्तर आ गया था।

सुबह के चार बज रहे थे। गाड़ी नियमित रूप से स्टेशन पर रुकती हुई अविराम गति से भागती चली जा रही थी। यात्री अब भी सो रहे थे। कुमारेश अब भी अन्धकार में सिर डाले था। बादल अब भी घिरे थे। बूँदें भी पड़ रही थीं। ऊँह, फिर पानी बरसने वाला है। कुमारेश ने खिड़की से सिर निकाल लिया। खिड़की चढ़ा कर फिर सोचने लगा।

अर्चना चौंक कर जग पड़ी। ओह कैसा सपना था बुद-बुदा कर रह गयी।

कुमारेश ने सिर उठाकर कहा—अर्चना सो चुकी हो क्या?

जी।

अर्चना ने पुकारा—कुमारेश बाबू?

क्या है अर्चना?

कितना समय हो रहा है?

चार बज चुके हैं।

तो अभी कुछ रात बाकी है।

कुमारेश ने हँस कर कहा—तो क्या अभी और सोने का इरादा है।

जी नहीं अब नहीं सोऊँगी।

कुमारेश बाबू ।

क्या है ?

दिल्ली में आप हमारे यहाँ रहेंगे ?

जी अभी कुछ ठीक नहीं कह सकता ।

क्यों ?

योंही ।

आप सो चुके हैं क्या ?

सोना कहाँ अर्चना पलकें तक नहीं लगीं, जागते जागते सारी रात बिता दी ।

सो तो आपकी आँखें बता रही हैं ।

बादल घिर आये थे । पानी जोरों से पड़ने लगा था । अधिक वृष्टि के कारण यात्री जाग चले थे । लालाजी ने आँख मलते हुए कहा—कुमारेश भैय्या क्या बज रहा है ?

लालाजी सुबह हो गई ।

लालाजी ने आँख मलते हुए कहा—अरी अर्चना तू कब जग गई ।

चार बजे जगी थी बाबू ।

ओह तब तो खूब सोया । लालाजी ने उठते हुए कहा ।

और रात भर कुमारेश बाबू जगते रहे । अर्चना बोली ।

कुमारेश बाबू अब आप सो लें । अर्चना ने कहा ।

कुमारेश ने उत्तर दिया—अब मैं नहीं सोऊँगा ।

प्रभात हो चला था । यात्री जाग कर फिर फिर बातों में

संलग्न हो गये थे। आकाश में बादल भी छट चले थे। खिड़कियाँ खोल दी गई थी। प्रत्येक की दृष्टि प्राकृतिक सुन्दरता की ओर आकर्षित थी गाड़ी की चाल धीमी पड़ गई थी।

लालाजी ने कहा—कुमारेश भैय्या कौन सा स्टेशन है।

कुमारेश खिड़की से सिर निकालते हुए बोला—जी स्टेशन का तो कुछ पता नहीं, पर कोई जंकशन मालूम देता है। गाड़ी देर तक खड़ी होगी।

ठीक है वहीं पर दैनिक कर्मों से निवृत्त हो लिया जायगा।

गाड़ी स्टेशन पर आ लगी। अर्चना और कुमारेश बाबू उतर पड़े।

लालाजी ने कहा—पहले आप लोग निवृत्त हो लें, फिर मैं हो लूँगा।

ठीक है।

इंजन का शोरगुल बन्द करके चला गया था। लालाजी जोरों से रामनाम उच्चारण कर रहे थे। सब यात्री अपने कामों में संलग्न थे।

कुमारेश अर्चना के साथ डिब्बे में घुसते हुए बोला—अब आप जायें लालाजी हम लोग आगये।

ठीक है। तुम लोग बैठो मैं जा रहा हूँ। कह कर लालाजी लोटा लेकर डिब्बे से उतर गये।

अर्चना ?

क्या है कुमारेश बाबू।

चाय पियोगी।

हाँ इच्छा तो अवश्य है।

कुमारेश दो कुल्हड़ चाय लेते हुये बोला—लो अर्चना।

कुमारेश बाबू।

क्या है अर्चना।

अब तो हम लोग लाहौर से बड़ी दूर निकल आये हैं। वहाँ पर केवल हम लोगों की स्मृतियाँ ही शेष होंगी।

हाँ अर्चना हम लोग लाहौर से दूर दिल्ली को जा रहे हैं। हृदय में एक निराशा दुख और भार लेकर जीवन भी क्या है। कल तक हम सुखी थे, आज दुखी।

लालाजी ने डिब्बे में घुसते हुये कहा—अर्चना और कुमारेश बाबू लो नाश्ता कर लो।

वाह लाला जी कुमारेश ने दोना लेते हुये कहा—हम लोग तो देर से इसी की राह देख रहे थे। आओ अर्चना खाओ! बड़ा भूखा हूँ कल से, लाला जी आप भी आइये।

तुम्हीं लोग खाओ बेटा मेरी कुछ इच्छा नहीं है। सुबह होते ही घर में लल्लू प्रभा सब नाश्ते के लिये दौड़ पड़ते थे। और आज न जाने भाग्य कहाँ से कहाँ को खींच लाया।

अर्चना ने दुखी स्वर से कहा—होगा बाबू क्यों बेकार चिन्ता कर घुले जा रहे हो। भाग्य पर कोई यदि विजय पा ले तो कोई दुखी ही न हो।

सिर पर हाथ रख कर लालाजी बोले—ठीक कहती हो

बेटी, पर जब दिल्ली से लाहौर व्यापार के लिये गया था तब भरापूरा घर था और अब लाहौर से दिल्ली लौट रहा हूँ तो सब खोकर। बेटी ममता भी तो कोई चीज़ होती है। खैर होगा। जीवन में तो यह सब लगा रहता है। तुम लोग खाओ पियो।

जंक्शन से जब गाड़ी चली तो बादल हट गये थे। सूर्य निकल आया था। कोलाहल बढ़ गया था। दूर के कम्पार्टमेंट से कोई गीत गा रहा था। प्रत्येक किसी न किसी राग में मस्त था। कुमारेश भी लाला जी से बातों में संलग्न था।

लालाजी कह रहे थे—कुछ नहीं भैय्या विभाजन का दोष है। यदि भारत के टुकड़े न होते तो यह दशा न होती।

पर लाला जी आप भूलते हैं, यदि विभाजन मंजूर न किया जाता तो स्वतंत्रता मिल भी न पाती।

पर ऐसी स्वतंत्रता हम लेकर क्या करेंगे जिसके कि परिणाम स्वरूप हमने लाखों की जाने जाती देखीं। पश्चिमी पंजाब के अत्याचार इतिहास में काला धब्बा बन कर रह जायेंगे।

ठीक है लाला जी यह स्वतंत्रता हमें दुखी कर के आयी। यह स्वतंत्रता चन्द स्वार्थी लोगों के कारण मानवता को सुलाकर आयी। यह स्वतंत्रता पश्चिमी और पूर्वी पंजाब में दंगे ले कर आयी और साथ साथ हमारे एवं आपके तथा अन्य व्यक्तियों के परिवारों को लूट कर पर

जो कुछ हुआ सो हुआ, पर अब हमारा क्या कर्त्तव्य है? हमें सरकार को मदद देनी चाहिये। सरकार को विभाजन सिद्धांत मंजूर करने के सिवा और कोई चारा ही न था। फिर भी हमें गर्व होना चाहिये कि थोड़ी सी खून खराबी के उपरांत ही हमें स्वतंत्रता मिल गई। महामानव की अहिंसा ने ही स्वतंत्रता को इतनी शीघ्र दिला दिया।

कुमारेश भैय्या? यह तो अपना अपना मत है।

गाड़ी पर बैठे हुये कुमारेश को ज्ञात हुआ कि वह अपने पथ पर लौट रहा है। प्रतिकार और प्रतिशोध की भावना पूर्वी पंजाब के हत्याकांड को ही देखकर बुझ गई थी। अपने सिद्धांत के झोपड़े में फिर वह वापस आ रहा था। क्रोध शांत हो रहा था। कुमारेश ने धीमे स्वर में कहा—अच्छा हुआ जो मैं अपने पथ पर आ रहा हूँ!

बातों में गाड़ी भागती हुई अम्बला जंक्शन पर आ खड़ी हुई। लाला जी ने उठते हुये कहा—चलो कुमारेश कुछ खा-पी लो। अम्बाला आ गया है। काफी रास्ता तय हो गया है। दिल्ली अब दूर नहीं है। सौ सवा सौ मील का रन होगा। कुमारेश उठते हुये बोला—चलिये।

चलो।

अम्बाला से दिल्ली की ओर गाड़ी चली तब कुमारेश अर्चना और लालाजी खा-पीकर निश्चिंत हो गये थे।

कुमारेश ने लालाजी की ओर देखते हुए कहा—लालाजी

दिल्ली में छोटा मोटा कोई मुझे भी व्यापार करा दीजियेगा।

कैसी बातें करते हो बेटा। जब तक अपना घर है, तब तक तुम्हें व्यापार इत्यादि करने की आवश्यकता ही क्या? लड़कों की भांति रहना और पढ़ना।

पर?

पर क्या? कुछ नहीं। क्यों ठीक है न अर्चना बेटी?

जी बाबू सब ठीक है

कुमारेश की आखे झपक रही थीं। लालाजी ने कुमारेश का मुख देखते हुए कहा—कुमारेश भैय्या रात को तुम सोये नहीं हो, थोड़ा सा सो लो।

हाँ लालाजी मुझे झपकियाँ आ रही हैं, जरा सोना चाहता हूँ।

तो सोओ न।

कुमारेश खिड़की पर सिर रख कर लेट गया। आखें झप गईं, और कुछ ही समय बाद वह निद्रादेवी की गोद में चला गया।

गाड़ी अपनी वेग गति से स्टेशनों को छोड़ती हुई भागती जा रही थी।

लालाजी ने कुमारेश की ओर देखते हुए अर्चना से कहा—देखो बेटी इस बेचारे पर भी क्या विपत्ति पड़ी है। सब कुछ घर में था, पर अब अकेला है।

हाँ बाबू भाभी को मार डालनेसे बड़े दुखी हैं कुमारेश बाबू।

विधिना का विधान ही शायद यह था ?

गाड़ी भागती हुई जा रही थी। पानीपत स्टेशन से जब गाड़ी छूटा तो कुमारेश की नींद टूट गई। उठते हुए उसने पूछा—लालाजी हम लोग कहाँ तक पहुँच गये ?

पानीपत निकल गया है। तुम सो चुके।

हां कुछ जम कर नींद न आ पायी लालाजी। लालाजी से लोटा ले कुमारेश ने मुँह धोया।

कम्पार्टमेन्ट में प्रायः सब पश्चिमी-पूर्वी पंजाब के दंगे, भारत विभाजन एवं कांग्रेस की निन्दा करने में तल्लीन थे।

इसमें काँग्रेस का क्या दोष कुमारेश ने सोचा। आह विपत्ति हटने पर सबका मस्तिष्क ठीक हो जायेगा। पागलपन जब दूर हो जायगा, तो स्वयं समझ जायेंगे।

सामने की बेंच पर बैठे हुए एक व्यक्ति से कुमारेश ने पत्रिका लेकर पढ़ना प्रारम्भ किया। समय काटने का सबसे सरल उपाय पढ़ना ही था। लेख, कवितायें, कहानी यहां तक कि सब चीजें वह ढाई घंटे में चाट गया। पत्रिका समाप्त कर, धन्यवाद कह उसने पत्रिका लौटा दी। लालाजी सो रहे थे। अर्चना झपकियां ले रही थी। लम्बी सफर से आये हुए प्रत्येक मुसाफिर सो रहे थे। अगले स्टेशन पर कुमारेश ने अखबार खरीदा, पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी पंजाब के दंगों के समाचार जोर से छपे थे। सारा अखबार पढ़ कर उसने एक उसाँस ली और सिर खिड़की में डाल बैठ गया। आह यह एकाकी जीवन वह

कब तक काट पायेगा ? अर्चना जग गयी थी। अर्चना की ओर देखते हुए कुमारेश ने कहा—अर्चना जरा ख्याल रखना मैं सोऊँगा कह कर कुमारेश ने आँखें मीच ली।

गाड़ी स्टेशनों को पार करती हुई जा रही थी। लालाजी और अर्चना बातें कर रहे थे। कुमारेश अब भी निद्रा में लीन था।

गाड़ी दिल्ली स्टेशन पर जा लगी। लालाजी ने कुमारेश को झकझोरते हुए कहा—कुमारेश भैय्या उठो दिल्ली आ गई है।

हाँ दिल्ली आ गई ?

जी अर्चना ने उत्तर दिया।

कुमारेश आँखें मलता हुआ प्लेटफार्म पर उतरा। अर्चना भी उतर पड़ी। लालाजी कुलियों से सामान उतरवाने लगे।

९

तो कुमारेश बाबू हम लोग दिल्ली आ ही गये । ताँगे पर सवार होते हुये अर्चना ने कहा ।

कुमारेश केवल हूँ करके रह गया ।

जब ताँगा चला तो कुमारेश का हृदय उसे धिक्कार रहा था । एक कायर की भाँति अपने जीवन का मोह करके वह पश्चिमी पंजाब से भगा । क्या यह उचित था ? क्या उसे भैय्या का साथ छोड़ना था ? आदि प्रश्न उसके हृदय में उठ रहे थे । इसी उधेड़बुन में वह लीन था । कल्पना तेजी से उसके मस्तिष्क में दौड़ रही थी । जीवन और मृत्यु के दृश्य उसकी नेत्रों में झूल रहे थे । पश्चिमी पंजाब लाहौर की सड़कों के दृश्य उसकी आँखों में नाच रहे थे । मानवता को सोते हुये दृश्य को वह इस समय भी देख रहा था । आये हुये निराश मानव फुटपाथों पर इधर उधर जीविका के हेतु बैठे थे । वह भाग आया है, किसने उसके भागने में प्रोत्साहन दिया, किसने उसको मदद दी ? जीवन के मोह ने । उसे क्या ऐसा करना था, वह स्वयं न सोच पा रहा था ? लाला जी ने कुमारेश का ध्यान भंग करते हुये कहा—कुमारेश भैय्या क्या सोच रहे हो ?

अनमयस्क भाव से कुमारेश ने उत्तर दिया—कुछ नहीं लाला जी। यहाँ मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा है।

अच्छा कैसे लग सकता है भैय्या। लाहौर में जन्मे वहीं पर खेले कूदे, वहाँ की एक-एक सड़कों से परिचित हो गये थे। दिल्ली तो फिर नई ही है।

ठीक है लालाजी दिल्ली मेरे लिये नयी ही है। फिर दिल्ली आया किस रूप में हूँ। सब खोकर।

कैसा खोना, कैसा पाना भैय्या, यह तो सब विधना का विधान है। हम लोग तो उसके हाथ कठपुतले से नाचते हैं।

यदि ऐसा ज्ञान हो आ जाय तो रोना किस बात का बाबूजी? अर्चना कुमारेश को एकटक देखते हुये बोली।

ठीक कहती हो बिटिया, पर सान्त्वना भी तो कोई वस्तु है। किसी न किसी रूप मे तो इस चंचल मन को समझाना होता ही है।

समझाना कैसा लालाजी, भूलना कहिये भूलना। यदि ईश्वर ने जीवन के साथ भूलने वाला शस्त्र न दिया होता तो सारी दुनिया कलपती होती।

लाला जी ने सूखी हँसी हँसते हुये कहा—तो कुमारेश बाबू जब आप इतना जानते हैं कि दुःख को हृदय से दूर करना चाहिये तो आप व्यर्थ में क्यों दुःखी होते हैं।

अभी दुःख ताजा है लाला जी इसी कारण कभी कभी टीस उठ खड़ी होती है। समय पाकर सब ठीक हो जायेगा।

हँसते हुये अर्चना बोली—अब आप ने तुक की बात कही।

लालाजी कुमारेश की ओर देखते हुये बोले—कुछ भी हो बेटा सब खो कर आ रहा हूँ, फिर भी मुझे ऐसा लग रहा है कि मानों नरक से स्वर्ग में आ गया हूँ। वहाँ के जलते मकान, लोगों की हत्यायें एवं कत्ले आम, स्त्रियों की बेइज्जती सब हृदय में एक घृणा एवं कँपकँपी पैदा कर देती थी। यहाँ शांति देखकर शरीर को आराम तो मिला।

कुमारेश ने सड़क के किनारे लगी हुई दुकानों की ओर देखता हुआ बोला—ठीक है लाला जी।

कोठी के अन्दर जाते हुये लाला जी ने कुमारेश से कहा—भय्या यही हम लोगों का घर है। यहीं पर अब हम लोगों को रह कर अपना काम चलाना है। यह अन्दर वाला कमरा लल्लू का था। अब तुम्हें इसमें रहना पड़ेगा। सारे दुःखों और अपने पर पड़े हुये अभिशापों को भुलाकर अपने जीवन का नया अध्याय प्रारम्भ करना है। निराशा आशा साथ-साथ चलती है। हमें अपने कर्त्तव्य का ध्यान करना चाहिये।

लालाजी की कोठी गोल बाजार के पास थी। इसी कोठी में उनका दिल्ली वाला दफ्तर भी था। मुनीम और कुछ नौकर दिल्ली में ही दुकानों की देख भाल के लिये थे। इसी कारण लालाजी को दिल्ली आकर कुछ असुविधा न हो पाई थी।

नहा धाकर जब कुमारेश बैठक में आया। तो उसने देखा अर्चना चाय बना लाई है।

अर्चना ?

क्या है कुमारेश बाबू ?

लाला जी कहीं गये हैं क्या ?

जी, वह कुछ आवश्यक वस्तुयें लेने बाजार गये हैं।

अच्छा भाई चाय लाओ, बड़ी भूख लगी है।

लीजिये।

अर्चना।

मैं क्या आप से एक बात पूछ सकता हूँ ?

एक नहीं जितनी चाहिए पूछिये।

तुम मुझे बाबू क्यों कहती हो ?

तो और क्या कहा करूँ ?

मेरा नाम लिया करो। कुमार भय्या।

वाह। भय्या और बाबू में क्या अन्तर है ?

बाबू एक बड़े और अपरिचित आदमी के लिये कहा जाता है घरवालों के लिये नहीं। समझी ?

जी।

तो मैं क्या हूँ। चाय पीते हुए कुमारेश ने पूछा।

कुमार भय्या।

कुमारेश चाय उठाता हुआ बोला—ठीक है, लीजिये आप भी चाय पीजिये।

पीती हूँ।

अर्चना क्या तुम्हें यहाँ अच्छा लगता है।

क्यों बेकार की बातें करते हैं आप ! हृदय के घाव पर नमक न छिड़किये कुमार भय्या। सब कुछ खोकर आ रही हूँ, फिर भी आप पूछते हैं अच्छा लगना। माँ, दादी, भय्या अपना सब कुछ खो चुकी हूँ मुझे कैसे अच्छा लग सकता है। कह कर अर्चना फफक-फफक कर रोने लगी।

कुमारेश उठते हुए बोला—क्षमा करना अर्चना मैंने व्यर्थ ही मे तुम्हें परेशान किया। मैं अपना प्रश्न वापस लेता हूँ, फिर रोने से तो काम चल नहीं सकता। देखो मेरी तरफ देखो अर्चना तुम्हें मेरी आँखों में दुःख का अथाह सागर हिलोरें लेता हुआ मिलेगा। मुझे भी दुःख है।

लालाजी कुमारेश के लिये समस्त उपयोगी एवं आवश्यक वस्तुएें ले आये थे। कुमारेश का कमरा सजवा कर जब लाला जी बैठक में आये तब कुमारेश सिर झुकाये हुए सोफे पर बैठा था।

कुमारेश भय्या।

क्या है लालाजी ?

अर्चना कहाँ गयी ?

अभी तक तो यहीं पर थी। सम्भवतः गुसलखाने गयी हो।

अच्छा कुमारेश बाबू आप अपना कमरा देख लीजिये चल

कर । मैंने उसे सजाने का भरसक प्रयत्न किया है, पर वह ठीक हो पाया है या नहीं, इसे तो आप ही बता सकते हैं ।

आप तो व्यर्थ में मेरे लिये इतना कष्ट कर रहे हैं लालाजी ।

कष्ट की क्या बात है बेटा । यह तो हम बूढ़ों का कर्त्तव्य ही है ।

कुमारेश ने कोट की जेब से नोट निकाल कर लालाजी की ओर बढ़ा दिये ।

यह क्या है, कुमारेश ।

जी कुछ नहीं यह रुपये, मैं पंजाब से बचा कर ला पाया हूँ ।

तो इसको मैं क्या करूँगा । तुम्हीं इसे अपने पास रक्खो ।

जी नहीं, आप ही इसे अपने पास रक्खें, हम लड़कों को तो भारमुक्त होना चाहिए ।

तो मैं इसे तुम्हारे नाम बैंक में जमा कर दूंगा ।

कुमारेश उठते हुए बोला—जैसा आप उचित समझें वैसा करें । मेरा अब इन रुपयों को अपने पास रखने का इरादा नहीं है ।

कुमारेश अपने कमरे में चला गया । उसने देखा लालाजी ने उसका कमरा समस्त साधनों से सजवा दिया था । कितने उदार हैं लालाजी । बिलकुल घर का सा व्यवहार, स्वर्ण और मुझ में कोई भेद नहीं समझते । वास्तव में मनुष्य हैं ।

खाते समय लालाजी ने कहा—कुमार भैय्या, अब कल ही तुम विश्वविद्यालय जा कर नाम लिखा लो ।

लालाजी ।

क्या है ।

आप भी मुझे कुमार भैय्या कहने लगे । किसने सिखाया यह आप को ।

लालाजी कौर उठाते हुए बोले—क्यों क्या हुआ ? अर्चना ने कहा था, कि आपको कुमारेश बाबू न कह कर कुमार भैय्या कहा जाय ।

कुमारेश हँसते हुए बोला—धत् बड़ी शैतान है अर्चना ।

लालाजी मुस्कराते हुए बोले—तो आप विश्वविद्यालय कल जा रहे हैं ?

विश्वविद्यालय, जी कल, हाँ, जाने का तो विचार है ।

अवश्य जाओ । केवल एक साल बचा है, बी० ए० करने में । आजकल के युग में ग्रेज्युएट होना तो परम आवश्यक है ।

जी आपने ठीक कहा ।

रात को जब कुमारेश बिस्तरे पर लेटा तो उसका शरीर स्वस्थ हो चला था । पच्छिमी पंजाब के रक्तपूर्ण, कोलाहल, और रास्ते के सफर से मुक्त हो वह निश्चिंत हो गया था । सफर की थकावट के कारण उसकी पलकें झपक रही थीं । जब तक वह जागता रहा तब तक उसका हृदय बार बार लालाजी के प्रति क्षुधा प्रकट करता रहा ।

दूसरे दिन जब कुमारेश विश्वविद्यालय से नाम लिखाकर लौटा, तो उसने देखा कि बैठक में दर्जी बैठा था ।

लालाजी कुमारेश को देखते हुए बोले—आओ कुमारेश भैय्या ! दाखिला तो हो गया होगा ?

जी ।

अच्छा चलो, कुछ कपड़े नपालो आवश्यकता पड़ेगी ।

कुमारेश ने एक बार लालाजी को ओर देखा, फिर मूर्ति की भांति दर्जी के पास खड़ा होगया । कपड़ा की नपाई देने के उपरान्त वह सीधा अपने कमरे में आया, और बिस्तर पर पड़ रहा कुमारेश अपने जीवन में मातृ प्रेम और पितृ प्रम की झलक न पाया था, सो उसे पितृ और मातृ दोनो प्रेम की झलक एक साथ लालाजी में दिखाई पड़ी । वास्तव में पूर्व जन्म का हम लोगों में कोई सम्बन्ध था, कुमारेश ने सोचा ।

भोजन करने के पश्चात कुमारेश को अनुभव हुआ कि वह एकाकी नहीं, वरन पूर्व सा उसका घर है । अर्चना और लालाजी एक दूसरे में, कुमारेश ऐसा घुला कि घुल कर एक हो गया । कुमारेश और लालाजी एक दूसरे को लाहौर में भली भाँति मानते थे ।

कुमारेश अर्चना को और अर्चना कुमारेश को जानती थे ।

परन्तु थोड़े दिन का संयोग ही दोनों परिवारों को मिल गया । आज कुमारेश लालाजी के घर का एक घर था ।

कुमारेश अपने जीवन में फिर आनन्द का अनुभव करने लगा । वस्तु के खोने का दुख प्रत्येक को होता है, पर उसके स्थान पर दिलासा देना ही दुख को दूर कर सकता है ।

लालाजी के अनुरोध पर कुमारेश दिल्ली घूमने भी गया। उसी दिल्ली में, जिसमें कि कुमारेश का प्रथम दिन अच्छा न लगा था, आज परिचित होने के कारण अच्छी लगने लगी थी। वह नगर की प्रत्येक प्रसिद्ध इमारत एवं स्थान को देख चुका था अब वह नगर की अधिकांश सड़कों से परिचित भी हो गया था।

अर्चना के साथ कुमारेश जा कर कुछ चित्र भी देख आया था। प्रत्येक शाम को वह कभी अकेला था कभी अर्चना के साथ किसी पार्क, या अन्य स्थान को सैर के खातिर निकल जाया करता था।

कुमारेश को सुखी देख, लालाजी के हृदय में आनन्द उत्पन्न होता था। अर्चना भी कम प्रसन्न न थी। वह भी कुमार भय्या को देख कर प्रसन्न होती थी, मानों स्वयं ही उसे कोई अपूर्व निधि प्राप्त हो गई थी।

कुमारेश नित्य प्रति कहीं न कहीं घूमने जाता था एवं अपने नये अनुभवों सहित प्रसन्न होता हुआ, घर आकर घंटों लालाजी एवं अर्चना से बातें लड़ाता।

१०

सुना कुमार भैय्या महात्मा गांधी ने कलकत्ते में आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया।

हाँ अर्चना मैंने सुना कलकत्ते में साम्प्रदायिक दंगों से दुखी होकर महामानव ने एकता के हेतु अपने जीवन की बाजी लगा दी।

मैं पूछती हूँ कि भैय्या जब हिन्दू और मुसलमान के नाम पर राष्ट्र का विभाजन हुआ। पश्चिमी पाकिस्तान में उसके परिणाम स्वरूप भयानक हत्याकांड हुये तो अब किस प्रकार हिन्दू मुसलमान में एकता हो सकती है। प्रतिकार और प्रतिशोध की भावना प्रत्येक में हुआ करती है।

यह बेकार की बातें हैं अर्चना। तुम कहती हो कि एकता नहीं हो सकती, न हो, पर हम लोगों को तो सम्हल कर रहना है। महात्माजी ने ठीक ही तो कहा कि यदि प्रतिकार और प्रतिशोध की भावना चलती रही तो सारे भारत में न हिन्दू बचेगा और न मुसलमान फिर मुसलमानों के तो कई राष्ट्र हैं। हिन्दुओं का तो केवल हिन्दुस्तान ही है। हिंदुस्तान से निकल कर हिन्दू कहाँ जायेगा।

यह ठीक है भैय्या पर अपने ही राज्य में अल्पमतों की रक्षा का भार हम्हीं पर है और किसी पर नहीं।

बहन वह राज्य कैसा जिसमें कि केवल एक ही जाति निवास करे और उसी जाति के लोग देश पर राज्य करें। खैर जाने दो जो आज अल्पमतों की रक्षा नहीं कर सकते तो वह कल स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकते।

फिर भी मुझे महात्मा जी की अहिंसा नीति पसंद नहीं।

कपड़े पहनते हुये कुमारेश बोला—अर्चना यदि महामानव की अहिंसा वाली राजनीति न होती तो आज स्वतंत्रता न मिल पाती।

और यदि आज यह नीति न होती तो हम लोग लाहौर से इस प्रकार भगाये न जाते। अर्चना बोली।

इन्हीं के कारण हम लोग स्वतंत्र हुये। वरना न जाने कितने साल अभी और गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहते।

इन्हीं के कारण हमने अपना सब कुछ खोया।

कोट पहनते हुये कुमारेश ने कहा—लगीं करने स्वार्थ को बातें। इन्हीं के कारण क्यों। स्वतंत्रता इतनी सस्ती नहीं होती है जो यों ही मिल जाय उसके लिये बलिदान की जरूरत होती है। तुम्हें दो चार आदमियों के मरने का दुःख है पर तुम सम्भवतः भूल गई हो कि सन् सत्तावन, इक्कीस, इकतिस बयालीस के अन्दोलन में लोगों की जानें इतनी सस्ती हो गयी थीं कि खानदान के खानदान साफ हो जाते थे।

फिर यह अहिंसा कैसी।

कुमारेश ने चलते हुये कहा—अर्चना यह तो अपना २

मत है तुम सारा इतिहास खोज डालो पर तुम्हें कोई ऐसी स्वतंत्रता का उदाहरण न मिल सकेगा जो कि थोड़ी ही खून खराबी के बाद मिल गयी हो। यह अहिंसा नहीं तो और क्या है।

अर्चना उठते हुये बोली—अच्छा जाइये जानती हूँ बड़े सिद्धांतवादी बनते हैं।

कुमारेश बगैर कुछ बात बढ़ाये हुये कोठी से साइकिल उठा कर घूमने चल दिया।

कुमारेश घूमने तो चल दिया था पर आज उसका चित्त खिन्न था। वह सोच रहा था कि महात्मा जी ने जो एकता का बीड़ा उठाया है वह अब बहुत ही मुश्किल है प्रथम निर्वाचन के होते हुये ही हिन्दू मुसलमान अलग २ हो गये थे। पाकिस्तान बनने के उपरांत तो यह बेल इतनी जोर से जम गई थी कि अब उसका हटना कठिन था। फिर भी महा-मानव महान है। तभी तो वह ऐसे कठिन समय में भी अपने सिद्धांत का प्रतिपादन कर रहा है।

कनाट सरकस में अधिक भीड़ के कारण कुमारेश सायकिल से उतर पड़ा। सब अपने अपने कार्यों में मस्त थे। भीड़ के छट जाने पर कुमारेश फिर साइकिल पर सवार हो कर अपनी पूर्व चिंता में लीन हो गया। महामानव के इस अनशन का भारत पर क्या प्रभाव पड़ेगा यही उसके हृदय में बार बार प्रश्न उठ रहा था।

सड़क में आगे का दृश्य देखकर कुमारेश उतर पड़ा उसने आगे बढ़कर देखा कि एक युवती गुस्से से दो तीन लड़कों को डाट रही थी।

कुमारेश ने आगे बढ़कर पूछा—क्या हुआ है श्रीमती जी।

कुछ नहीं आप जाइये इन सब को एक एक को बँधवा दूँगी। ये ऐसी बातें करते हैं कि मानो इनके घर में कोई है ही नहीं। युवती गुस्से से फफकारते हुए बोली।

कुमारेश लड़कों की ओर घूमते हुए बोला—तुमको लज्जा आनी चाहिए जोकि तुम पढ़े लिखे होने पर भी ऐसी हरकतें करते हो कुछ भी तो समझ से काम लिया करो मेरे भाई।

हम लोगों ने क्या किया है सब लड़के बोल पड़े।

युवती चप्पल उतारते हुए बोली—बताती हूँ क्या किया। कुमारेश की डाट और युवती के साहस से सब लड़के रफ़ूचक्कर होने लगे।

कुमारेश युवती की ओर देखते हुए बोला—क्या कर रही हैं आप श्रीमतीजी। भीड़ बढ़ रही है इस जगह पर न बोलना ही ठीक है। आप घर चली जाइये। इधर लड़के भी मौक़ा पाकर निकल भागे।

युवती कुमारेश की ओर देखकर साइकिल उठाकर चल पड़ी। कुमारेश भी सायकिल उठाकर चल पड़ा।

रास्ते में चलते हुये कुमारेश ने युवती के साइकिल के

पीछे बँधे हुये अखबारों को देखते हुये कहा—क्षमा कीजियेगा आपके अखबार शायद बता रहे हैं कि ...... ——

जी मैं साम्यवादी दल की हूँ।

ओह ठीक है तभी तो 'जनयुग' और 'पीपुल्स एज' बँधे हुये देख रहा हूँ।

जी इन्हीं के लिये आफिस जा रही थी कि रास्ते में यह कांड हो गया।

जी यह तो होता ही रहता है। बिघ्न बाधायें तो जीवन में साथ साथ चलती ही हैं। मैं भी जीवन के पथ पर सीधे साधे जाने की सोच रहा था पर जीवन पथ में ऐसी विपदायें आयीं कि कहाँ से कहाँ पहुंच गया।

युवती ने कुमारेश की ओर देखते हुये कहा—शायद आप कहीं बाहर से आये हुये ज्ञात हो रहे हैं

जी मैं अभागा लाहौर से आ रहा हूँ।

क्षमा कीजियेगा मैं आपका नाम पूछ सकती हूँ?

जी मेरा नाम कुमारेश है। एक शरणार्थी और आप का।

मेरा युवती ने हँस कर कहा—मुझे तो भारती कहते हैं।

भारती नाम और आप साम्यवादी दल में कितना आश्चर्य है। भारती होकर रूस के सपने देखना कहाँ का व्यवहार है।

जी आज हमें समानता का सपना देखना है। चाहे रूस से उठ रहा हो या और कहीं से।

ठीक कहती हैं आप।

भारती ने उँगली उठा कर कहा—कुमारेश बाबू वह रहा ऑफिस चलिये आपका मैं अपने आफिस सेक्रेट्री से परिचय करा दूँ।

जी मुझे क्यों ले जायेंगी आप। मैं तो आपके दल का हूँ नहीं।

दल के न होने से क्या होता है। आपने आज मुझ पर दया की क्या वह कभी भूली जा सकती है।

दया किस बात की।

किसी को भी नहीं।

कामरेड अनन्तराम ने कुमारेश को देख कर पूछा—भारती यह कौन हैं, तुम्हारे साथी।

जी यह कुमारेश हैं रास्ते में लड़कों ने मुझे तंग करना शुरू किया था। समय पर आकर आपने उन्हें डाट कर भगा दिया, लाहौर से आ रहे हैं।

और आप अनंतराम, मेरे आफिस सेक्रेट्री।

ठीक है अनन्तराम भारती की ओर मुड़ कर बोला—अच्छा तुम अपने स्केटर में बताया हुआ काम कर आयीं।

जी।

जनयुग की कापियों को लेते हुये अनन्तराम ने कहा—अच्छा भारती अब तुम जा सकती हो कल साम्यवाद में नारी का स्थान पर लेख भी लिख लाना है।

जी बहुत अच्छा ।

कुमारेश बाबू आप ।

अनन्तराम बोल उठे—भारती तुम जाओ मैं कुमारेश बाबू से कुछ बातें करूँगा ।

ठीक है ।

भारती के चले जाने के उपरांत अनन्तराम ने कुमारेश से प्रश्न किया—कुमारेश बाबू आपको दिल्ली आये कितने दिन हुये ।

जी आठ नव दिन हुये होंगे ।

आप यहाँ किस जगह रह रहे हैं ।

गोल बाजार में ।

क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप के विचार राजनीति में किसके साथ मेल खाते हैं ।

जी मेरा विचार । मुझे शांति चाहिये, इसी कारण मैं केवल महामानव के सिद्धांतों पर विश्वास रखता हूँ ।

जी ठीक है । आप समानता पर विश्वास रखते हैं अथवा नहीं ।

जी मैं समानता के पक्ष में हूँ गरीब अमीर सब एक पिता की संतान हैं सुख और शांति से रहना प्रत्येक का अधिकार है ।

आप का हम लोगों के दल में क्या विचार है ।

मेरा आपके दल से कुछ विशेष बुरा विचार नहीं पर मुझे प्रत्येक बात में विदेशी उदाहरण पसंद नहीं ।

विदेशी कैसे कुमारेश बाबू ? हम लोग तो उसी से उदाहरण देते हैं जहाँ से साम्यवाद का जन्म हुआ।

आप का कहना उचित है कामरेड पर भारत में तो अन्य साम्यवादी देशों का अनुकरण नहीं हो सकता।

क्यों।

क्योंकि यहाँ की परिस्थिति गवाही नहीं देती।

परिस्थितियों से विवश कौन है।

ईश्वरवाद।

ईश्वरवाद, आप ईश्वर पर विश्वास करते हैं।

जी।

क्या आप का विचार है कि राजनीति के साथ साथ धर्म को भी स्थान दिया जाय।

जी नहीं मैं यह नहीं कहता कि राजनीति में धर्म शास्त्र को भी स्थान दिया जाय पर देश में धर्म को कोई स्थान तो देना चाहिये।

खैर जाने दीजिये इन बातों को आपको हमारी पार्टी से कुछ हमदर्दी है।

कुछ क्या अनन्तबाबू बहुत गरीब और मजदूरों के साथ जहाँ तक सम्पर्क है वहाँ तक मैं निश्चय ही कह सकता हूँ कि आप की पार्टी ने बहुत काम किया।

आपने हमारी पार्टी का कुछ साहित्य पढ़ा है।

जी मुझे ऐसा सौभाग्य तो प्राप्त नहीं हुआ फिर भी रूस

की लाल क्रांति मार्क्स तथा लेनिन की पुस्तकें, एवं भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी से निकले हुये पैम्फलेट्स पढ़ लिया करता हूँ।

आप जनयुग तथा पीपुल्स एज को कैसा पत्र समझते हैं।

बातों को बढ़ा चढ़ा कर बताने वाले साम्यवादी दल के प्रमुख पत्र।

कुछ देर और रुक कर कुमारेश उठ खड़ा हुआ और नमस्ते करता हुआ बोला—अच्छा अनन्तबाबू चला।

अनन्तराम ने उठते हुये कहा—कल आइयेगा कुमारेश बाबू बातें होंगी।

कुमारेश ने उत्तर दिया—प्रयत्न करूँगा।

जब कुमारेश आफिस से चला तो भारती और अनन्त की बातें ही चक्कर काट रही थीं। कैसी बातें करते हैं ये लोग तर्क वितर्क की रीति तो सम्भवतः इन लोगों के स्कूल की प्रथम शिक्षा है।

घर आकर कुमारेश ने भारती एवं आफिस वाला हाल लालाजी व अर्चना को सुनाया।

सुनकर लालाजी बोले—बच कर रहना कुमार भय्या, बड़ी जल्दी से ही यह लोग अपने फंदों में फांस लेते हैं यदि तुम वहाँ जाते रहे तो एक दिन पक्के साम्यवादी होकर निकलोगे।

तो आप को साम्यवाद से चिढ़ क्यों।

कुमारेश भैय्या हमें साम्यवाद से चिढ़ नहीं वरन भारतीय

साम्यवादियों से चिढ़ है वे बात बात पर रूस की लाल क्रांति का उदाहरण देते फिरते हैं।

ठीक है लालाजी अपने अपने दल के स्वतंत्र विचार हुआ करते हैं।

यह तो होता ही है कुमारेश भैय्या—अर्चना बोल उठी।

११

दिल्ली आकर कुमारेश को जीवन और राजनीति के नये नये अनुभव हुये । विश्वविद्यालय तो उसे राजनीति का बाजार सा लगा । मानों वह विद्या का स्थान नहीं वरन् राजनीति का अखाड़ा हो । विश्वविद्यालय में पहुँच कर कुमारेश को नित्य नयी बातें सुन पड़ती थी । सब अपने २ रागों में मस्त थे ।

आज अँगरेजी के प्रोफेसर नहीं आये थे इस कारण कुमारेश रीडिंग रूम में बैठा हुआ कलकत्ते का समाचार पढ़ रहा था । जिसमें कि एक भीड़ ने महात्मा गाँधी पर कल सन्ध्या को हमला कर दिया था । वह समाचार पढ़ ही रहा था कि दो तीन लड़के कुमारेश के पास आकर बैठ गये ।

एक ने पूछा—क्षमा कीजियेगा आप सम्भवतः पंजाब से आये हैं ।

जी मैं लाहौर से आ रहा हूँ । कुमारेश ने उत्तर दिया ।

दूसरे ने प्रश्न किया—सुना है भाई साहब वहाँ पर यवनों ने बहुत अत्याचार मचा रक्खा है । हिन्दुत्व का नाश किया जा रहा है ।

सो तो होंगे ही, केवल पूर्वी पंजाब ही क्या उसके प्रतिकार में भारत का मुसलमान तबाह हो जायेगा ।

कुमारेश भौंचक्का सा तीनों का मुख देखता रहा. पहले ने शुरू किया—जब हम लोग कहते थे कि भारत विभाजन करोगे तो पछताओगे। तब अब हम लोगों की खिल्ली उड़ाई जाती थी। हम पर हँसा जाता था पर आज, आज सरकार हमारे प्रश्नों का उत्तर इतनी सरलता से नहीं दे पाती। उसका मुँह चुप है भारत विभाजन कर पाकिस्तान के हिन्दुओं की जान उन गुन्डों के हाथ में सौंप दी गई, जोकि जानते नहीं कि मानवता क्या होती है जिन्हें पता नहीं कि भ्रातृ व्यवहार क्या वस्तु है। जिन्हें केवल मालूम है अन्धविश्वास हिन्दुओं की हत्यायें और कन्याओं का अपहरण। अब मजा आयेगा कांग्रेसी सरकार को क्यों ठीक कहा है भाई साहब ?

कुमारेश केवल सिर हिला कर रह गया।

दूसरे लड़के ने झोले से कापी निकालते हुये कहा—तो आप क्या नाम है।

क्यों क्या है ? कुमारेश ने उत्सुकता से पूछा।

कुछ नहीं सदस्य नामावली है।

किसकी।

एक ने कहा—किसकी के क्या अर्थ, आज के युग में भारत की एकमात्र विश्वशनीय एवं धार्मिक संस्था।

आखिर कौन।

हिन्दू महासभा।

जी मैं नहीं बनना चाहता हूँ इस संस्था का सदस्य।

क्यों ? सबने एक स्वर में पूछा।

क्यों का कोई प्रश्न नहीं मेरे सिद्धांत और आपकी संस्था के सिद्धांतों में महान अन्तर है। मैं हूँ एक अहिंसावादी और आपकी संस्था———

हिंसावादो एक ने मुस्कराते हुये कहा—भाई आपका विचार गलत है। हम लोगों का उद्देश्य घृणा का प्रसार नहीं वरन एकता के बीज बोना है। हम लोग हिन्दुत्व की रक्षा करते हैं, किसी दूसरी जाति पर अथवा दल पर हमला नहीं।

तभी तो आप शायद प्रतिकार की भावना में भारत के मुसलमानों को डुबा देना चाहते हैं।

जब हम पर कोई हमला करेगा। हम सताये जायेंगे, तो उसके परिणाम स्वरूप हम चुप न रह सकेंगे।

कुमारेश ने घृणा से मुँह बनाते हुये कहा—यदि एक का घर जला दिया जाय तो दूसरे का घर जलना आवश्यक होता है या दूसरा घर जलने से प्रथम घर तैय्यार हो जाता है।

हाँ जलना आवश्यक होता है भाई साहब यदि एक अत्याचार करे और दूसरा चुप रहे तो आप उसका परिणाम जानते हैं क्या होगा। प्रथम के अत्याचार पराकाष्ठा की चोटी पर पहुंच जायेंगे और दूसरा अत्याचारों से पिसता हुआ रसातल में पहुँच जायेगें।

मैं आप से सहमत नहीं हूँ।

एक ने आश्चर्य की मुद्रा बनाते हुए कहा—आश्चर्य है

कि आप मुसलमानों के अत्याचारों से पीड़ित हो कर लाहौर से भागे फिर भी आपको उन लोगों से सहानुभूति है।

सहानुभूति होना तो मानवता का धर्म है।

तो फिर आप एक ओर मानवता और एकता रखिये और दूसरी ओर दानवता और घृणा, देखना है विजय किसकी होगी ?

कुमारेश ने कहा—खैर जाने दीजिये इन बातों को। आपको पार्टी का पिछला इतिहास क्या है ? आप के नेताओं ने देश की सेवा में क्या त्याग किया ? आपके हिन्दुओं ने क्या त्याग किया ?

एक गरम होकर बोल उठा—यदि आपको पार्टी का इतिहास नहीं मालूम तो आपको तर्क करने का क्या अधिकार ? आप प्रश्न करते हैं हिन्दुओं ने क्या त्याग किया। मैं कहता हूँ कि हिन्दू जाति ने जो त्याग किये, वह आज भी इतिहास में लिखे हैं। आप त्याग जानना चाहते हैं, तो मैं कहना चाहता हूँ कि आप सोचिये दधीच ने क्या त्याग किया, मर्य्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने क्या त्याग किया, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने क्या त्याग किया, शिवाजी और प्रताप ने क्या त्याग किया ? आप पुराने इतिहासों को छोड़ कर नये इतिहास को देखें, आधुनिक इतिहास को देखें तो आपको पता चलेगा कि वीर सावरकर ने क्या त्याग किया ? गोली बारूदों से बचता हुआ साहसी युवक हाहाकार करते हुये समुद्र को पार कर

गया। वर्षों जेल में सड़ा। फिर आप देखें भाई परमानंद एवं धर्मवीर डाक्टर बी.एस. मुजें ने क्या त्याग किया। पिछले जमाने के पन्ने उल्टकर देखें तो आपको पता चलेगा कि महामना मालवीय ने इसकी स्थापना क्यों की ?

उठता हुआ कुमारेश बोला बस कीजिये मैं और कुछ सुनना नहीं चाहता। अपने ही जाति और गौरव का गुण-गाने से आज के युग में बेड़ा नहीं पार हो सकता। गांधी जी भी तो हिन्दू हैं जो कि हिन्दुत्व को पूर्णरूप से समझकर गीता के बताये हुए अधिकांश आदर्शों पर चलते हैं।

गांधी हिन्दू। सब हँस पड़े। कुमारेश जान बचा कर भाग खड़ा हुआ, दर्जे में जाकर वह संताप की सांस लेने लगा। उसे न पता था कि गांधी ऐसी महान आत्मा की भी खिल्ली उड़ायी जा सकती है। वह दुःख से डेस्क पर सिर रख कर बैठ गया। एक साथी ने कुमारेश की पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—कुमारेश भाई क्या हो गया है आपको ?

कुमारेश सिर उठाते हुए बोला—कुछ नहीं भाई, मेरा सिर चक्कर खा रहा है। तुम मुझे अकेला छोड़ दो।

जैसी तुम्हारी इच्छा, कहकर साथी चला गया।

कुमारेश जी कुमारेश जी।

कौन है ?

आपका ही एक भाई।

कुमारेश ने सिर उठाते हुए कहा—आप कौन है। मैं आपको नहीं जानता हूँ।

लेकिन मैं तो आपसे परिचित हूँ।

किस नाते से? कुमारेश ने प्रश्न किया।

हिन्दू के नाते से।

तो आप भी तो कहीं हिन्दू धर्म वादी नहीं है?

जी नहीं।

फिर आपका मुझसे क्या काम है?

कुछ नहीं योंही मिलने चला आया। सुना था कि आप पंजाब से आ रहे हैं। हिन्दू होने के नाते मैंने विचार किया कि चलो आपसे मिल लें।

आप क्या विश्वविद्यालय में ही पढ़ते हैं—कुमारेश ने पूछा।

जी हाँ। उसने उत्तर दिया।

आपको कोई विशेष कार्य हो तो आप कह सकते हैं।

जी विशेष कार्य तो नहीं, पंजाब में आप कहां व्यायाम के हेतु सुबह या शाम जाते थे?

सुबह शाम, लाहौर में, जी नहीं मैं तो नहीं जाता था। क्यों?

योंही पूछा। सुना है लाहौर की स्थिति बहुत बिगड़ गई है।

कुमारेश ने प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—हां स्थिति तो पूर्वी और पश्चिमी पंजाब दोनों की खराब है। दोनों जल रहे साम्प्रदायिकता की अग्नि में।

हाँ यह तो मैंने भी सुना है। वहाँ पर सुना है स्वयंसेवकों ने बहुत महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

कौन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघवालों ने? हाँ, आग लगाने के साथ-साथ कहीं स्त्रियों की मर्यादा को बचाया भी है।

महाशय प्रसन्न होकर बोले—आपने ठीक कहा, मैंने भी उन लोगों की वीरता की कथायें सुनी हैं। आप वहाँ कभी शाखाओं पर जाते थे।

कुमारेश ने प्रश्न का उत्तर न देते हुए पूछा—क्यों आप जाते हैं?

मैं, जी हाँ मैं तो जाता हूँ।

क्षमा कीजियेगा अब आप जा सकते हैं।

क्यों क्या बात कुमारेश जी?

जी, बात कोई नहीं, मेरा सर भन्ना रहा है, मुझे आराम की जरूरत है। मैं आपकी कोई सेवा नहीं कर सकता आप जा सकते हैं।

अरे भाई मैं आपसे कब कह रहा हूँ कि आप शाखा जाइये। मैं तो केवल आपसे पंजाब का विवरण जानने आया था।

कुछ भी हो भाई, मुझे इन संस्थाओं से कोई सम्बन्ध नहीं?

क्या आप हिन्दू-जाति, हिन्दू संगठन पर विश्वास नहीं करते?

कुमारेश चीख कर बोला—करता हूँ अवश्य करता हूँ। पर

इस रूप में नहीं, जैसे तुम लोग सिखाते हो। हमें हिन्दू संगठन के साथ-साथ सच्ची एकता चाहिए। साम्प्रदायिक झगड़ों से मैं कोसों दूर रहना चाहता हूँ। साथ-साथ उन दलों से भी जोकि आपस में फूट डालते हैं।

तो आप का क्या विचार है, संघ दो जातियों में फूट डलवाता है, यह विचार आप का असत्य है। संघ प्रेम और एकता की शिक्षा देता है। हिन्दू जीवन के धार्मिक अंगों को पुष्टि तथा प्रतिपादन करता है। हिन्दू जीवन में शङ्खनाद की ध्वनि डाल कर उत्तेजना प्रदान करता है। संस्कृति एवं सभ्यता की रक्षा करना यदि साम्प्रदायिकता है, तो अवश्य संघ साम्प्रदायिक है।

भाई साहब एक युग आयेगा जब आप अनुभव करेंगे, कि केवल धार्मिक संकीर्णता से संसार में कार्य नहीं चल सकता।

तो आप कहते हैं संघ धार्मिक संकीर्णता का मार्ग दिखलाता है, यदि संघ में आज यह चीज होती—

कुमारेश अब उठकर खड़ा होगया और कड़क कर बोला— खैर जाने दीजिये मुझे कोई वादविवाद तो करना नहीं है। आप अपने पथ पर ठीक हो सकते हैं, मैं अपने पथ पर।

घंटा बज जाने के पश्चात् भी कुमारेश को क्लास में जाने की इच्छा न हुई। उसका सिर भन्नाने लगा था। कुछ देर गार्डन में घूमकर वह सायकिल उठाकर घर को ओर चल पड़ा।

विश्वविद्यालय के आज के वातावरण ने उसके मस्तिष्क में

एक दर्द सा भर दिया था। कुमारेश ने दिल्ली में आकर जितने भी लोगों से बातें की, उनमें से ९५ प्रतिशत लोग कांग्रेस की निन्दा एवं सभा व संघ की बड़ाई करने में तल्लीन थे। उसे खबर मिल चुकी थी कि संघ की संख्या दिन प्रति दिन दूने और चौगुन वेग से बढ़ रही है। सभा आये दिन आन्दोलन एवं भाषणों की भरमार लगाये हुए है। तो क्या सारे भारत के अधिकांश लोग गुमराह हुए जा रहे हैं। कुमारेश ने सोचा ऊँह गुमराह कैसे। यह तो राजनीति है जिसको जब अवसर मिला तब वह उठा। सम्भवत: राजनीति भी अवसरवादी होती है, सोचकर कुमारेश हँसा।

घर पर जल्दी आते देख, अर्चना ने पूछा—कुमारेश भैय्या आज जल्दी क्यों चले आये?

कपड़े उतारते हुए कुमारेश ने कहा—कुछ नहीं अर्चना। आज विश्वविद्यालय में बिलकुल मन न लगा। कुछ तर्क-वितर्क के कारण मन बिलकुल उचट सा गया, फिर क्लास जाने का साहस न हुआ, इसी कारण घर चला आया।

क्या बात हो गई थी, विश्वविद्यालय में?

कुछ नहीं अर्चना आज सब अपने-अपने सिद्धान्तों को भूल दूसरों का अनुकरण कर रहे हैं। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, कि आखिर कांग्रेस में कौन गुण नहीं है, जो लोग उसे छोड़-छोड़ कर भाग रहे हैं। नेताओं की कमी नहीं, विद्वानों

की कमी नहीं, कार्यकर्ताओं की कमी नहीं, फिर क्या कमी है इसमें ?

अर्चना ने कहा—नीति की, कुमारेश हँसा—नीति तो कांग्रेस की सबसे अच्छी है। एकता के बीज बोने से भविष्य में उसका फल बड़ा सुन्दर मिलेगा अर्चना। हाँ यह मैं मान सकता हूँ, कि आज युग के बहाव के साथ लोग राजनीति के बहकावे में आकर कांग्रेस के सिद्धांतों को नहीं समझ पा रहे हैं। बापू के सिद्धांत राजनीति जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हमें उन्हीं के बताये हुए सिद्धान्तों पर चलना चाहिए।

अर्चना बिगड़ उठी—जब देखो तब बापू, बापू, अहिंसा, अहिंसा। बापू की नीति हमें कायर बना रही है। हम बुज़दिल हुए जा रहे हैं। बापू पर तो मुझे——————।

अर्चना मेरे सामने बापू के विरुद्ध एक शब्द भी न निकालो। मैं जानता हूँ कि आज लोग बापू को समझ नहीं पा रहे हैं उनकी उपेक्षा कर रहे हैं, पर एक समय आवेगा जब भारत क्या सारा विश्व उनका आदर करेगा। वह महान् आत्मा हैं उन्होंने धर्म के गूढ़ से गूढ़ सिद्धांतों को पहचान लिया है। तभी उन्हें गीता, कुरान, बाईबिल में एक ही ब्रह्म दिखता है। राम उनके उपासक हैं, और रामराज्य की स्थापना उनका दृढ़ संकल्प है। वे महान है। हम लोग ऊपरी दिमाग से उनको नहीं समझ सकते, उसको समझने के लिये अध्यात्मिक शक्ति चाहिये।

भैय्या मैं आपका भाषण सुनना नहीं चाहती हमें अपने

कार्यों से मतलब होना चाहिए। राजनीति को लेकर हमें चाटना नहीं है।

कुमारेश अपने कमरे में जाकर पलंग पर पड़ रहा। उसका चित्त खिन्न था एवं शांति भिन्न कुमारेश ने जीवन में प्रथम बार ही इतना विशाल वादविवाद किया था वह अपने सिद्धांतों का प्रचार नहीं; वरन उनकी रक्षा करना चाहता है।

कुमारेश ने आज जाना कि जनता किस ओर बहकी जा रही है। धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, संस्कृति के नाम पर आज लोगों को भड़काया जा रहा है। एक भय दिखा कर उन्हें अपनी ओर मिलाया जा रहा है। पर यह क्या उचित है। —ईश्वर जाने।

१२

शाम को इच्छा न होने के पर भी कुमारेश सायकिल उठाकर घूमने चल पड़ा। रास्ते में नाना प्रकार के राजनैतिक जीवन के पहलू उसके नजरों के सामने नाच रहे थे। प्रत्येक राजनैतिक नेता आज के युग में अपने दल के सिद्धांतों का प्रतिपादन करने में इतने व्यस्त थे, कि कुमारेश को देखकर आश्चर्य होता था। सुबह शाम संघ की रैलियां। सभा नेताओं के उत्तेजना पूर्ण भाषण। साम्यवादियों का भारत में गड़बड़ मचाना। समाजवादियों की चालें। सब जनता पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं। सब अपने-अपने सिद्धांतों का प्रतिपादन कर, अपने दल की शक्ति बढ़ाना चाहते हैं। कुमारेश को राजनीति, राजनीति न लगी वरन् एक खेल खेलने का खिलौना, शतरज की चाले चल कर प्रत्येक दल विजयी होना चाहता था।

पीपुल्स बुक हाउस से भारती को जाते देख कुमारेश ने सायकिल बढ़ा दी।

ओह भारती, आप, नमस्ते—कुमारेश ने कहा। जी नमस्ते। कुमारेश बाबू?

कहो, क्या है भारती?

मेरे जाने के बाद कामरेड अनंतराम से क्या-क्या बाते हुई थी।

कुमारेश ने उत्तर दिया—जी कुछ विशेष नहीं राजनैतिक विषयों पर तो कोई विशेष बात नहीं हुई, हाँ विचारों के बारे में पूछा गया था। पूछ रहे थे कि आप ईश्वरवाद में विश्वास करते हैं।

भारती ने उत्सुकता के साथ पूछा—आपने इस प्रश्न का क्या उत्तर दिया था ?

कुछ नहीं। मैंने केवल इतना ही कहा था कि जी मैं ईश्वर को मानता हूँ, और ईश्वरवाद पर श्रद्धा रखता हूँ।

खिलखिला कर भारती ने पूछा—तो सम्भवतः आप भाग्यवादी भी होंगे ?

जी क्यों ? हाँ मैं भाग्यवादी भी हूँ।

यों हीं। मेरा विचार है कि ईश्वरवादी का भाग्यवादी भी होना जरूरी है।

तो सम्भवतः आप मेरी खिल्ली उड़ा रही हैं।

खिल्ली कैसी कुमारेश बाबू ?

ईश्वर के मानने पर।

जी नहीं। खिल्ली की कौन सी बात है। हाँ 'बिजी लाइफ" में ईश्वर की आवश्यकता नहीं।

भारती क्षमा करना, मैं ईश्वर और ईश्वरवाद को तर्क वितर्क की बात नहीं समझता, और न उस पर कोई तर्क ही करना चाहता हूँ। यह तो अपनी अपनी श्रद्धा का प्रश्न है।

जी आपने ठीक कहा। भारती सकुचा कर बोली—आप कहाँ जारहे है इस समय कुमारेश बाबू।

क्यों कहाँ के क्या अर्थ। आफिस जा रहा हूँ।

आफिस, किसका आफिस ?

आप लोगों का और किसका ? कमारेड अनंतराम ने मुझसे आज आने को कहा था।

तब तो ठीक है।

आफिस आने पर कामरेड सादिक से पूछने पर ज्ञात हुआ कि अनंतराम कुछ रिपोर्ट देने हेड आफिस गये हैं, आध घंटे में आ जायेंगे।

कुमारेश की ओर देखते हुए भारती बोली—चलिये कुमारेश बाबू तब तक अपने सेक्रेटरी के रूम में बैठे चल कर।

बैठने के बाद कुमारेश ने सहसा एक बात याद कर भारती से पूछा—क्षमा करना क्या आप साम्यवाद में नारी का स्थान लेख लिख कर ले आईं ?

क्यों ?

योंही पूछा।

जो लिख लाई हूँ।

कुछ भी हो, पर मेरे विचार से साम्यवाद में भारतीय नारी, एवं पुरुष सफल न हो सकेंगे।

क्यों कुमारेश बाबू ?

इतना भी नहीं जानती भारती। आदिकाल से भारत में

धर्म और ईश्वर का पूजन होता आरहा है। भारत के शत प्रतिशत मानव ईश्वर को मानते हैं। उनमें ईश्वर और ईश्वर में वह ऐसे घुलमिल गये हैं कि वे अब पृथक नहीं किये जा सकते। आज के युग में प्रत्येक भारतवासी उठते बैठते, चलते फिरते, ईश्वर और भाग्य का मान करता है। फिर हिन्दू धर्म जिसका कि इतिहास आदि काल से है, उसके सामने साम्यवाद का स्थान टिक न सकेगा। धर्म के नाम पर श्रद्धा से लोग अपने प्राण दे देंगे। सोमनाथ के मन्दिर की घटना आज भी इतिहास के पन्नों में मौजूद है। भारतवासी सब कुछ त्याग कर सकते हैं, पर वह अपने धर्म पर कुठाराघात होते हुए नहीं देख सकते। फिर भारतीय स्त्रियाँ वह तो ईश्वर भक्त होती हैं। इसके अतिरिक्त उनको ऐसी स्वतंत्रता भी नहीं मिली है जिससे कि वह आगे बढ़ सकें।

यही तो कमजोरी है कुमारेश बाबू।

कमजोरी हो, या लाचारी। यही बात आप लोगों के मार्ग में बाधा बन कर आयेगी।

इसी को तो हम लोगों को दूर करना है।

भारती, इसका दूर होना कठिन ही नहीं, वरन् असम्भव है।

असम्भव को ही सम्भव कर दिखलाना है कुमारेश बाबू।

भूल जाओ भारती, यह वह असम्भव नहीं है जो सम्भव में परिवर्तित किया जा सके। यह वह कठिनाई नहीं, जो कुछ प्रयत्नों के बाद हल हो जाय। तुमको भारत में पूँजीपतियों से

लड़ना होगा, भारतीयों के मस्तिष्क में वर्षों से भरी हुई जातीय भावना को नष्ट करना होगा। स्त्री स्वातंत्र्य और राजनैतिक जीवन पर जोर देना होगा, रूस के उदाहरणों को भूल कर भारतीय उदाहरणों को रखना होगा केवल गरीब मजदूर नहीं, वरन सब पीड़ित मानवों की देख रेख रखनी होगी। तब तुम लोग कहीं जाकर सफल हो सकोगे। इन सब पर विजय पाना तुम लोगों की वस की बात नहीं।

है। अवश्य है। समय आने पर स्वयं ज्ञात हो जायेगा।

वह समय जब आवेगा, तब न हम जीवित होंगे न आप। पर भूल न जाओ हमारी आने वाली संतानें इस समय को देखेंगी, कहते हुए कामरेड अनंतराम कमरे में घुस आये।

आप कुमारेश उठ खड़ा हुआ—नमस्ते।

नमस्ते। बैठिये।

अनंतराम कुमारेश की ओर मुड़ता हुआ बोला—कुमारेश बाबू मैंने आप लोगों की काफ़ी बातें सुनी, पर मैं क्या पूछ सकता हूं कि संसार में आप गरीब मजदूर शोषित वर्ग का भला नहीं चाहते।

अवश्य चाहता हूँ कामरेड, और मैंने इसी लिये कल कहा था कि गरीब मज़दूरों के सम्बन्ध में मुझे आपकी पार्टी से बहुत काफ़ी हमदर्दी है। फिर भी स्थिति और समय देख कर काम किया जाता है। शोषित वर्ग का ध्यान रखने के साथ साथ शोषण करने वालों का भी तो ध्यान रखना चाहिए। शोषण

कारी वर्ग को आप बदले के रू। में शासित वर्ग बना दे, ऐसा तो चाहिए नहीं। दूसरी बात नारी विषय में है, यह कि भारतीय नारी अभी वर्षों तक रूसी नारी की समता नहीं कर सकती। उसके सामने कठिनाइयाँ है। वैदिक रीतों के विवाहो के साथ साथ, उनमें भक्ति और भावना की बातें पिरोई जाती है। इन सबको दूर करना होगा।

कामरेड अनंतराम गरम होकर बोले—आप भूलते हैं। यदि आपने रूस को लाल क्रान्ति को ध्यान से पढ़ा होता तो आप ऐसी बहकी-बहकी बातें न करते। समय के परिवर्तन के साथ-साथ ही हम लोगों का बढ़ना है। यदि हम कठिनाइयों से ही घबड़ा जायें, तो कोई काम ही नहीं हो सकता, पग-पग पर कठिनाइयाँ हम लोगों के सन्मुख आती हैं। ऐसे तो हम लोग हिम्मत हारने वाले नहीं हैं।

जी आप ठीक कहते हैं। कुमारेश ने कहा।

कुमारेश बाबू आप हमारी पार्टी का साहित्य पढ़ें तो आपको ज्ञात होगा, कि रूस, चीन आदि देशों में क्या-क्या परिवर्तन हुए। हम लोगों के साहित्य को पढ़कर ही आप परिस्थितियों का अच्छा अनुभव कर सकते हैं। लेनिन, मार्क्स एवं स्टेलिन की पुस्तकों को पढ़कर देखिए, आपको ज्ञात होगा कि हम लोगों ने किस प्रकार से परिस्थितियों पर विजय पाई। और आप साम्यवाद में नारी के स्थान की बातें करते हैं तो आप "लेनिन आन विमेन क्वेश्चयन" 'विमेन एंड सोसाइटी'

पॅम्फलेट्स पढ़ें, तो आपको नारी स्थान का अच्छा अनुभव होगा।

क्षमा कीजियेगा अनंत बाबू। आपके साम्यवाद में एक कुँवारी कन्या एवं विवाहिता स्त्री से पुत्र उत्पन्न होने में कोई भेद नहीं रक्खा जाता। क्या यह उचित है?

हाँ। हम लोगों के विचार से भेद रखना अनुचित है।

एक कुवांरी कन्या से पुत्र उत्पन्न होना क्या अर्थ रखता है?

कुछ नहीं।

क्या यह लज्जा की बात नहीं है?

इसमें लज्जा की क्या बात। विवाह एक सोशल कान्ट्रेक्ट है। इसी प्रकार से किसी मनुष्य का किसी लड़की से सोशल कान्ट्रेक्ट हो सकता है।

यहाँ पर मैं आपकी बातें नहीं मानता।

क्यों मानेंगे आप। विश्वामित्र से उत्पन्न शकुन्तला, भीमसेन से उत्पन्न "घटोत्कच" आदि सोशल कान्ट्रेक्ट नहीं तो और क्या है।

कुमारेश ने बात बदलते हुए कहा—कामरेड इन बातों में क्या रक्खा है। मैं एक अहिंसावादी हूँ। मुझे अर्थ की बातों से कोई सम्बन्ध नहीं, फिर भी मैं कहूँगा कि आपका साम्यवाद और भारत की परिस्थिति मेल नहीं खाती।

मेल न खाये, समय आयेगा, तब स्वयं सब ठीक होजायगा। हम लोग तो कार्य करते जायेंगे, क्योंकि हमें करना है।

अच्छा अनंत बाबू मैं चला। नमस्ते, भारती नमस्ते।

अच्छा कुमारेश बाबू फिर मिलेंगे। हाँ, यह "फाल्सी फाउंस आफ हिस्ट्री" पुस्तक आप लेते जाइये। इसे ध्यान से पढ़ियेगा आपको इसके अन्दर बहुत कुछ मिलेगा।

कुमारेश ने किताब हाथ में लेते हुए कहा—देखिये प्रयत्न करूँगा। अनंत बाबू अच्छा चला।

कुमारेश के जाने के बाद अनंतराम ने भारती से कहा—भारती लड़का अच्छा है अहिंसावादी हुआ तो क्या, पार्टी से हमदर्दी तो है इसे। अपना साहित्य इसे पढ़वाना है। हो सकता है कि यह हमदर्दी सिद्धांत के रूप में परिवर्तित हो जाय।

जी आपने ठीक कहा।

पूरे चार मील का चक्कर लगाकर कुमारेश घर लौटा। बैठक में लाला जी बैठे हुए समाचार पत्र देख रहे थे। कुमारेश को देखकर बोले—कुमार भैय्या कहाँ गये थे ?

कहीं नहीं लाला जी, जरा आफिस चला गया था, वहीं पर घंटों अनंतराम व भारती से बातें होती रहीं।

तो उन लोगों ने तुम्हें पार्टी में फँसाना शुरू कर दिया।

वाह लाला जी क्या मैं बच्चा हूँ, जो फँस जाऊँगा और फिर मेरे सिद्धांत स्वयं इतने कमजोर नहीं हैं, जोकि छोड़े जा सकें। हमें तो अपने सिद्धांतों में ही आनन्द आता है।

ठीक है। ध्यान रखना, हाँ कुछ पढ़ लिया करो कुमार भय्या। कोर्स पिछड़ा है तुम्हारा।

जी आप ठीक कहते हैं।

अच्छा जाओ, अर्चना खाना लिये बैठी है। मैं खा चुका हूँ। लालाजी बोले।

अच्छा जाता हूँ लाला जी।

१३

कुमारेश एक शान्तिप्रिय युवक है। प्रतिकार और प्रतिशोध यह दो शब्द उसे बड़े अजब से लगते हैं, फिर भी वह कभी-कभी भावना में बह जाया करता है। जब वह लाहौर से भगा तब उसके हृदय में शान्ति के स्थान पर अशान्ति आ बिराजी थी। उसका हृदय डाँवाडोल हो गया था। मस्तिष्क पर तूफ़ानी विचार छाने लगे थे। परन्तु फिर भी उसके हृदय में ऐसी संस्थाओं के प्रति सहानुभूति नहीं उपजी थी, जोकि उसको दृष्टि में साम्प्रदायिकता को ज्वाला भड़काती थी। वह अपने को हिन्दू कहता है। सच्चा हिन्दू। इसी के परिणामस्वरूप उसका मस्तिष्क ठीक होते ही वह शान्ति के स्थान में फिर लौट आया। भावना की बहिया जो उसे अपने पथ पर हटाकर दूर ले आयी थी, समय के साथ-साथ कुमारेश को भी वपास ले आई।

आज कुमारेश को अपने पर गर्व होता था, कि नाना प्रकार की परिस्थितियों पर भी वह अपने पथ से न हटा। भाव, विचार एवं कल्पना ने भी समय पर कुमारेश को धोखा देना चाहा, पर दे न सके। इसके अटल सिद्धान्त थपेड़ा खाकर डगमगा तो अवश्य गये, पर नष्ट न होसके। सत्य की विजय उसके हाथ में लगी, और वह पूर्व की भाँति अहिंसा और सत्य को साथ ले पथ पर चलने लगा।

कुमारेश जो गान्धीजी के अनशन के बारे में चिन्तित था आज खुश नजर आ रहा था। पूज्य बापू के अनशन भंग होने का समाचार पढ़ उसको एक अपूर्व प्रकार का अह्लाद हुआ था। ५ सितम्बर का अखबार लिये वह खुशी से फूला नहीं समा रहा था। प्रान्तीय अधिकारीवर्ग एवं नेताओं के आश्वासन पर महात्माजी ने श्रीसुहरावर्दी के हाथ से नींबू का रस पिया था। कुमारेश के हृदय में श्रद्धा और प्रेम की रोशनी जल रही थी। महान् आत्मा आज फिर बच गई।

हृदय में उल्लास लेकर कुमारेश विश्वविद्यालय आया। उसका हृदय सोच रहा था कि विश्वविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी पर आज प्रसन्नता की रेखा होगी। पर उसका विचार असत्य निकला। विश्वविद्यालय के कल और आज के दिन में कोई अन्तर न था। कल तक लोग गान्धीजी के अनशन के बारे में बातें करते थे। पर आज—आज अधिकांश लोग उनकी बुराई में तल्लीन थे।

कुमारेश घर से चला था, तब उसके हृदय में उमंगें थीं, आशा हिलोरें ले रही थी। रास्ते में वह सोच रहा था कि ईश्वर उसे पंख दे दे तो वह शीघ्र से उड़ कर विश्वविद्यालय पहुँच कर अपने साथियों से अनशन समाप्त होने की खबर सुनावे, महान आत्मा पर कुछ बातें करे। पर यहाँ आकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही; अधिकांश विद्यार्थी गांधी जी की उपेक्षा कर रहे थे। कुमारेश ऐसे स्थानों पर न रुक सका।

रीडिंग रूम में जाकर वह अख़बारों का अवलोकन करने लगा।

अरे कुमारेश, कैसे बैठे हो ?

कुछ नहीं दयाशंकर आओ बैठो।

धन्यवाद जो आपने आज बैठने को कहा। उस दिन गरम होकर भाग खड़े हुए थे।

कुछ नहीं भाई मैंने अपने जीवन में कभी भी ऐसी संस्थाओं पर विश्वास नहीं किया है, इसी कारण मुझे इन संस्थाओं के सदस्यों से स्नेह नहीं होता है, पर चार पाँच दिन में मुझे तुममें वैसे गुण मिले जिससे कि मैं जान गया कि तुम अन्य लोगों की तरह नहीं हो। जो तुम हो, वह तुम्हारे साथी नहीं, इसी से तुम मेरे दोस्त हो गये।

धन्यवाद।

वैसे ही दोस्त जैसा कि मैं आपसे बतला चुका हूँ हरीश था। हिन्दुत्व ही राष्ट्रीयत्व का प्रतिपादन उसका भी नारा था।

उसका क्या कुमारेश भाई, आज के युग में करोड़ों हिन्दुओं का यही नारा है। तुम्हारे जैसे ही कुछ चपड़घन्टू मौजूद हैं जो कि अहिंसा अहिंसा चिल्लाते हैं।

कुमारेश हँसता हुआ बोला—कुछ भी कह लो।

दयाशंकर अब तो सब तुम्हारे लिये क्षम्य है पर यदि तुम अपरचित होते तो मैं नाराज हो जाता।

इस पर दयाशंकर हँसते हुये बोले—अच्छा कुमारेश।

तुम्हारे बापू ने अनशन समाप्त कर दिया, इसका मतलब हिन्दू मुसलमान एकता हो गई ?

अवश्य हो गई है, दयाशंकर जी इसी प्रकार से यदि सारे भारत में प्रेम और एकता का प्रयत्न किया जाय तो एकता असम्भव नहीं ?

मैं नहीं मान सकता कुमारेश। भारत में अब ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गयी हैं कि हिन्दू मुसलमान एकता होना इस युग में नहीं वरन अगले युग में होगी।

तो इसका उपाय ?

जातीय संगठन।

क्या बकते हो दयाशंकर जी। तुम जातीय संगठन की बात करते हो। हमें संकीर्णता का मार्ग दिखलाना चाहते हो, वह मार्ग जिस मार्ग से हम कभी भी उच्च स्तर तक न पहुँच सकेंगे। विश्व बन्धुत्व स्थिर रखने का उपाय जातीय संगठन है। वाह रे मेरे यार जातीय संगठन में विष भरकर तुम लोग, भारत के घर घर को जलाना चाहते हैं। सभा का उद्देश्य आज भारत में आग फैला रहा है।

वाह कुमारेश बाबू। दयाशंकर जी बात काट कर बोले — बड़ी दूर तक जाते हो। आज तुम्हें, तुम्हारे जैसे लोगों को सभा से चिढ़ है। आप सोचते हैं कि सभा के उद्देश्य धार्मिक बोट में अन्य जातियों को मिलाना चाहते हैं, पर आप भूलते हैं। आज आप "प्रजुडिस" दिमाग से सभा को घृणा की दृष्टि से देखते

हैं। सभा जातीय संगठन चाहती है, पर जातीय संगठन में जो छिपा है वह आप नहीं जान सकते। जातीय संगठन के गर्भ में प्रेम और एकता छिपी है, वह प्रेम और एकता जो धर्म से मिल सकती है। धर्म! यदि आज प्रत्येक हिन्दू धर्म के गूढ़ अर्थ और सिद्धांतों को समझ ले, तो भारत की सारी समस्यायें हल हो सकती हैं। जातीय धर्म हमें प्रेम और एकता एवं समानता की शिक्षा देता है। जिस दिन लोग सभा के सिद्धांतों का प्रतिपादन कर धर्म को समझने लगेंगे उस दिन भारत में सुख और शांति का साम्राज्य हिलोरें लेता हुआ दिखाई देगा। न भारत में कोई गरीब होगा और न कोई दुःखी।

कुमारेश हँसता हुआ बोला—वाह मेरे भाई खूब सब्ज बाग दिखलाते हो। जातीय संगठन में प्रेम और एकता नहीं मिलती, वरन् घृणा का साम्राज्य मिलता है। धर्म में विश्व-बन्धुत्व की भावना नहीं वरन् एक उत्तेजना मिलती है। जातीय संगठन में संकीर्णता का संकुचित दरबार मिलता है, दूसरों के प्रति प्रेम नहीं। सच्ची शांति, प्रेम एवं एकता अहिंसा में है। वह अहिंसा जो कि महात्मा बुद्ध ने अपनायी, वह अहिंसा जो कि आज के युग में महामानव ने अपनायी। सच्ची एकता प्रेम और शांति अहिंसा में है। वह अहिंसा जिसने कि अशोक के मस्तिष्क को पलट दिया। वही अशोक जिसने कलिंग के युद्ध में लाखों का खून बहाया था, अहिंसा ने ही उसको सुपथ पर ला दिया।

बात काटते हुए दयाशंकर जी बोले—वाह आप हमें चूतिया बनाना चाहते हैं। अहिंसा ने अशोक के मस्तिष्क को नहीं पलटा, पलटा है गरम आग ने। याद रक्खो दो लोहे गरम हो जाने के उपरान्त ही जुड़ते हैं, ठंडे में नहीं। अशोक और उसके विपक्षी अंत में लड़खपकर शांत हो गये। तभी अशोक के हृदय में अहिंसा की बात आयी। कुमारेश ने रोक कर प्रश्न किया—तो आपका मत है कि दो जातियाँ आपस में लड़ती रहें।

जी नहीं मैं यह नहीं कहता पर आपको गलत जाते हुए देख मुझे रोकने की इच्छा हुई।

गलत मैं नहीं, दयाशंकर जी आप जा रहे हैं। जातीय संगठन की संकीर्णता के उन्माद में आप ऐसे बह गये हैं, कि आपको विश्वधर्म से कोई सम्बन्ध नहीं।

वाह कुमारेश बाबू "घर के बच्चे जाड़ों मरें और बिल्ली के बाधें गाती" वाली मसल आप कर रहे हैं। घर में आग लगी है तो आप बचाने की सोच रहे हैं दूसरों को। घर को सम्हालिये फिर बाहर को सोचिये। नींव पक्की करने के उपरान्त ही महल खड़ा हो पाता है। घर की नींव को पक्की करिये, वरना सारा विश्वबन्धुत्व भरभरा कर गिर पड़ेगा। यदि आपको सपने देखने हों, तो कल्पना के पंखों द्वारा सपनों में विश्व-बन्धुत्व के दृश्य देखिये। काल्पनिक बातों को छोड़कर व्यवहारिकता पर आइये, तब आपको ज्ञात होगा कि आप कितने

पानी में हैं। हिन्दुत्व की बातें तक सुनना नहीं चाहते। हम लोगों को बातों से चिढ़ने वाले लोगों को तो हम कहते ही आये हैं और कहते ही रहेंगे, कि पहले हमें अपना जातीय संगठन करना है। जातीय धर्म के किले को सुन्दर बनाकर हम लोग फिर लोकधर्म और विश्वधर्म की सोचेंगे।

तब तक तुम्हारा जीवित रहना ही मुश्किल है, दयाशंकरजी।

क्यों ?

कई बार कह चुका भाई जातीयता का प्रतिपादन करने पर, विरोधी संस्थायें भी प्रतिपादन करेंगी। फिर तुम उसे और बढ़ाओगे। फिर वे बढ़ायेंगे। इसी प्रकार तुम्हें जातीय संगठन से ही छुट्टी न मिल पायेगी और तुम्हारा लोक-धर्म और विश्व-धर्म धरा रह जायेगा।

धरा क्यों रह जायगा कुमारेश बाबू? युग के साथ साथ हमारी शक्ति बढ़ रही है। अपने गौरव के साथ-साथ फिर हम लोग उठ रहे हैं। आज जातीय भावना बड़े जोरों से पनप रही है। हमें अभिमान है कि वर्षों से सोये हुये हिन्दुओं को हम अपने शंखनाद से जगा चुके हैं। हम हिन्दुत्व पर अभिमान करते हैं और करते रहेंगे। हमें आनेवाली दुर्घटनाओं से लड़ना है। हिन्दुत्व मरा नहीं है।

ठीक है, दयाशंकर जी हिन्दुत्व मरा नहीं है, यह मैं भी जानता हूँ। हमें भी अपने हिन्दू होने का अभिमान है। हिन्दुत्व हम में है, पूज्य बापू में भी है। पर हमारे और तुम्हारे

हिन्दुत्व में अंतर है। हमारा हिन्दुत्व प्रेम और शांति की शिक्षा देता है, और तुम्हारा हिन्दुत्व घृणा का। हमारा हिन्दुत्व विस्तृत है विशाल सागर की भाँति, और तुम्हारा हिन्दुत्व संकीर्ण है तालाब की भाँति। हमारा हिन्दुत्व स्थिर है, गंगा नदी की भाँति, और तुम्हारा हिन्दुत्व बरसाती नाले की भाँति। हम अपने हिन्दुत्व से प्रेम और शांति सीखते हैं, पर तुम अपने हिन्दुत्व से दूसरी जातियों का नष्ट करना। बहुत अंतर है भाई हमारे और तुम्हारे हिन्दुत्व में। यदि अंतर न होता तो तुम हिन्दुत्व रखते हुए यह न कहते कि कुमारप्पा अभी क्या प्रतिकार के रूप में भारत के अल्पसंख्यकों को तबाह होना पड़ेगा। हमारा हिन्दुत्व तो कभी नहीं कहता। फिर तो मैं जान गया हूँ भाई मेरे, तुम्हारा हिन्दुत्व क्या चाहता है, और मेरा क्या, और तुम बातें करते हो प्रेम और एकता की। बरसाती नाले की भाँति कभी अधिक और कभी पतली धार से चलते हो। प्रतिकार की आँधी में, उस दिन हिन्दू होने के नाते भारत के सारे मुसलमानों को भयंकर हवा के थपेड़ों में उड़ा ले जाना चाहते थे, और आज प्रेम और एकता की बातें करते हो। पल पल पर रंग बदल कर नया रूप तैय्यार करने की शक्ति तुम लोगों में अवश्य है। कल तक ख़ून का बदला ख़ून से लेंगे का नारा लगानेवाले, प्रेम और शांति चाहते हैं। धर्म की टट्टी में आज शिकार खेलना चाहते हो। भूल जाओ दयाशंकर जी भारतीय अभी पतित नहीं हुआ है। उसे अपने धर्म पर

अटल विश्वास है, और उस अतीत के गौरव का अभिमान है वह हिन्दू के घर उत्पन्न हुआ ह, और याद रक्खो कि हिन्दू होने के नाते वह घृणा नहीं चाहता, वह अन्य धर्मों का भी सम्मान करता है, अपमान नहीं।

कुमारेश के इतने लंबे चौड़े व्याख्यान से दयशंकर सहम सा गया। रीडिंग रूम के लड़के कुमारेश की प्रतिभाशाली एवं तर्क-पूर्ण बात सुन कर सन्न हो गये थे। दयाशंकर चुप हो गया था। आज वह तर्क में हारा जा रहा था। सारे लड़के उसकी ओर उपेक्षा की दृष्टि से देख रहे थे, वह मारे शर्म के भूमि में धँसा जा रहा था। कुमारेश की अपनी ओर देखते हुए दयाशंकर जी धीरे से बोले—भाई वह तो भावावेश था।

कुमारेश हँसता हुआ बोला—अब तुमने ठीक बात कही, भावावेश में सब क्षम्य होता है। यदि तुम अपने उद्देश्यों पर चलते हो उसके अतरिक्त और कुछ गड़बड़ी नहीं करते, तब तक मैं तुम्हें एक संस्था का सदस्य अवश्य कह सकता हूँ। भावना में तो प्रत्येक बहता है। मैं भी लाहोर से आते हुए भावना में बह गया था। भावना के बहाव के उपरान्त मेरे नेत्रों में जो दृश्य आये थे, उन्हें मैं ठीक समझता था; पर आज समझने पर मैं ठीक हो गया ।।

दयाशंकर जी घंटे की आवाज सुनते ही चल पड़े। ओह बड़ी देर में पीछा छूटा। नाक में दम मचा दिया था, इस

अहिंसावादी कठपुतले ने। घंटा न बजता तो न जाने क्या दुर्गत बना देता मेरी।

इधर कुमारेश भी फाइल लिये हुए क्लास की ओर जा रहा था। वह सोचता जा रहा था, कि जिसकी भित्ति ही सुदृढ़ नहीं उसे वह कहाँ तक रोक सकता है एक न एक दिन उसे अवश्य गिरना होता है। आज वह प्रसन्न था, आज तर्क द्वारा उसने अपने प्रतिद्वंदी को वार्तालाप में हराया था।

१४

कुमारेश के जीवन में एक नयी वस्तु का समावेश हुआ था, वह था तर्क। अपने पिछले जीवन में जहाँ तक उसे याद है, उसने तर्क का रास्ता पकड़ा ही न था। वह उसे केवल सर दर्द ही कहा करता था। पर दिल्ली आते ही वह केवल तर्क करना सीखा ही नहीं, वरन् उसे तर्क से प्रेम होगया था। वह वाद-विवाद जिससे कुमारेश घबड़ाता था, आज उसका जीवन है। समय काटने का सबसे उत्तम साधन?

कुमारेश को शान्ति से प्रेम था। वह एक कांग्रेसवादी था, और साथ-साथ महात्मा की अहिंसा पर विश्वास एवं श्रद्धा रखता था। वह अपने जीवन में प्रेम और एकता को सामान्य रूप से देखना चाहता था, इसी कारण वह गांधी के सिद्धांतों को छोड़ और किसी दल अथवा संस्था के सिद्धान्तों पर विश्वास न रख सका था। जातीय संगठन और साम्प्रदायिक दलों से उसे चिढ़ थी। हिन्दू महासभा और मुस्लिम लीग राष्ट्रीय स्वयं-सेवक संघ, मुस्लिम नेशनल गार्ड से उसे घृणा थी।

कुमारेश आज दयाशंकर से की हुयी बातों पर विचार कर रहा था, कितना संकुचित क्षेत्र है उस नवयुवक का। कल्पना की उड़ान में वह सत्य और असत्य का निर्णय नहीं करता। उसे हिन्दू शब्द से प्रेम है, हिन्दुत्व के नशे में वह

संसार में क्रान्ति का डंका बजाना चाहता है। कहता फिरता है कि "मैं उस आदर्श भारतवर्ष की कल्पना में हूँ जब कि हमारी मानवता तथा जातीयता का गौरव उत्थान के पथ पर जा पहुँचेगा। भारत के हिन्दुओं का एकमात्र पवित्र भगवाध्वज हिमालय पर लहरा कर अपने गौरव के गीत गर्व से गायेगा।" कितनी व्यर्थ की बात वह करता फिरता है।

मानवता और दानवता कितना अन्तर है दोनों में, क्या यह कभी मिल सकेंगे ? मानवता की बातें इस प्रकार से नहीं हो सकतीं जैसी कि दयाशंकरजी बताते हैं। संघ की ये लाइनें, "संसार झुकेगा, हम न झुकेंगे" इतना दम्भ और गर्व आज के संसार में न चल सकेगा। सोचकर कुमारेश को हँसी आगयी।

कुमार भय्या।

चौंकता हुआ कुमारेश बोला—कौन अर्चना क्या बात है ?

कैसे लेटे हो, कहीं शाम को बिस्तर पर लेटा जाता है। चलिये हमको बजार जाना है।

बजार। नहीं अर्चना तुम नौकर के साथ चली जाओ, मैं न जा सकूंगा मुझे दूसरी जगह जाना है।

दूसरी जगह जाना है, दूसरी जगह जाना है, जब देखो तब जाना ही है। मैं नहीं जाने दूंगी आप को। आज आपको मेरे साथ चलना होगा।

जैसो मर्जी आप की।

अर्चना कुर्सी से उठती हुयी बोली—तो उठिये चलकर भोजन कर लीजिये बन गया है, फिर देर तक घूमेंगें ।

अच्छा ।

खाते समय लालाजी ने कुमारेश से पूछा—भैय्या पढ़ाई ठीक से चल रही है ।

जी लालाजी ।

हाँ बेटा पढ़े जाओ । मेहनत कर पास होना है, कोर्स काफी बदल गया होगा ।

कुछ नहीं लालाजी, सब ठीक हो जायेगा ।

यही तो आशा करता हूँ कुमार भैय्या ।

× × ×

ओह अर्चना मैं तो अब थक गया हूँ चलकर कहीं आराम करें । कुमारेश चलता हुया बोला ।

कुमार भैय्या, बस चले चलो ; घर चलकर आराम करेंगे ।

नहीं भाई, नहीं मैं, एक कप चाय पिये बिना घर न जाऊँगा, कहकर कुमारेश ने अपने पैर होटल की ओर बढ़ा दिये ।

चाय पीते हुए कुमारेश ने अर्चना से कहा—सुना है अर्चना, बापू कल यहाँ के लिये कलकत्ते से चल देंगे ।

तो मैं क्या करूँ ?

वाह मुझे तो बड़ा आनन्द है रोज प्रार्थनासभा में जाऊँगा, दर्शन का अवसर प्राप्त होगा ।

ऊह भय्या तुम्हें राजनीत को छोड़ कर और किसी प्रकार की बातें आती ही नहीं। कभी सभा कभी संघ कभी कम्युनिस्ट पर बातें? कभी और किसी पर। आप मुझ से ऐसी बातें न किया करें। मुझे पीड़ा होती है सुन कर जब आप ऐसी संस्था की बुराई करते हैं, जिनकी कि आज के युग में माँग है।

तो आप भी सभा, संघ का पक्ष लेती हैं।

भय्या मैं सभा संघ का पक्ष नहीं लेती, वरन् बतलाना चाहती हूँ, कि हिन्दू मुसलमान के नाम पर भारत का बटवारा हुआ है। ऐसे समय में हिन्दू महासभा और संघ की आवश्यकता है।

खैर जाने दो बहन, मैं तुमसे तर्क नहीं करना चाहता चलो अब घर चला जाय।

अर्चना और कुमारेश जब घर जाने लगे तो रास्ते में भारती मिल गयी। कुमारेश ने भारती से अर्चना का परिचय कराते हुए कहा कि भारती, यह है हमारी बहन अर्चना।

और अर्चना यह है भारती, जिनके कि बारे में मैं तुमसे पूर्व बता चुका हूँ। आप साम्यवादी दल की सदस्या हैं।

अर्चना ने भारती की ओर देखते हुए कहा—बहन आपसे मुझे मिलकर बड़ी खुशी हुई।

मुझे भी भारती ने सौम्यता से उत्तर देते हुए कहा।

कुमारेश बढ़ता हुआ बोला—लो अर्चना तुम इतनी बड़ी

दिल्ली में अकेली थीं, तुम्हें सहेली की आवश्यकता थी सो मिल गई, अब तो तुम्हें मिठाई खिलानी चाहिए मिठाई।

मुँह बना कर अर्चना ने कहा—मिठाई कैसी भैय्या ?

× × × ×

अर्चना के कहने पर भारती उस दिन थोड़ी देर के लिये अर्चना के घर आयी। अर्चना, जब तक भारती रही, अपने सुख दुःखों का हाल बताती रही। जब भारती चली तो अर्चना ने उसे दरवाजे तक पहुँचाते हुए कहा—बहन कभी कभी घर आ जाया करो जी ऊबा करता है।

सायकिल पर चढ़ते हुए भारती ने कहा—देखो प्रयत्न करूँगी।

दूसरे दिन सुबह कुमारेश जल्दी उठ पड़ा। आज उसे कामरेड अनंतराम से मिलना था शीघ्र ही दैनिक कर्मों से निवृत्त हो कुमारेश सायकिल उठा कर "कम्युनिस्ट" आफिस की ओर चल पड़ा। जब वह आफिस पहुँचा तो अनंतराम कुर्सी पर बैठे हुए समाचार पत्र देख रहे थे।

कुमारेश को देखकर अनंत बोला—ओह कुमारेश बाबू। आइये बैठिये। मुझे तो पूर्ण आशा थी ही कि आप अवश्य आयेंगे।

सौम्यता से उत्तर देते हुए कुमारेश ने कहा—कामरेड ने बुलाया और मैं न आता।

धन्यवाद।

धन्यवाद की कौन आवश्यकता है कामरेड।

अच्छा आप हम लोगों का साहित्य ध्यानपूर्वक पढ़ रहे हैं।

जी, मुझे आपके साहित्य में आनन्द आ रहा है।

आनन्द के साथ साथ कुछ परिवर्तन भी ?

नहीं कामरेड, मेरा सिद्धान्त ऐसा कच्चा घड़ा नहीं है, जो कि कंकड़ी लगते ही फूट जाय। ऐसी परस्थितियों के आने पर जिसके कि द्वारा विचलित होने की सम्भावना भी थी, मैं विचिलित न हुआ तो अब इन पुस्तकों से क्या हो सकूँगा।

कुमारेश बाबू मेरा यह अर्थ नहीं, मैंने तो केवल इतना जानना चाहा था, कि आपने इस साम्यवादी साहित्य की कुछ पुस्तकों को पढ़ कर क्या समझा।

समझने की क्या बात करते हो कामरेड, जो वस्तुएँ इसमें लिखी हैं उनमें अधिकांश भारत के लिये स्वप्न हैं। कल्पना से राजनैतिक क्षेत्रों में कार्य नहीं चल सकता, वरन् इसके लिये सत्य की भी आवश्यकता होती है। सत्य, अनुरूप और व्यवहारिकता से ही राजनीत में कार्य चलता है, केवल सब्जबाग दिखलाने से नहीं।

तो कुमारेश क्या आपका विचार है कि हम लोगों में व्यवहारिकता ही नहीं है।

मैं कब कहता हूँ कि आप लोगों में व्यवहारिकता नहीं है। आप लोगों में व्यवहारिकता बहुत काफी है, इसी कारण आप लोग नित्य प्रति बढ़ते जा रहे हैं। संघ अपने व्यवहारिकता के

कारण बढ़ा। उसका उद्देश्य चाहे जो कुछ हो, पर उन स्वयं-सेवकों में कार्य करने की अपूर्व क्षमता होती है। लोक व्यवहार में निपुण होने के कारण ही वे आज उन्नति के पथ पर बढ़ते जा रहे हैं।

कुमारेश आपको संघ सभा ऐसी संस्थाओं से क्या सहानुभूति है ?

कामरेड कैसी बातें करते हो मुझे इन संस्थाओं से न कभी सहानुभूति हुई है न होगी। मैं साम्यवादी दल के आफिस में आ सकता हूँ, पर इन संस्थाओं से दूर रहना चाहता हूँ। साम्प्रदायिकता की अग्नि से मैं बचना चाहता हूँ, मुझे तो केवल शांति चाहिए।

शांति और, अहिंसा बुजदली की निशानी है कुमारेश बाबू।

जी नहीं अनंतराम जी।

अहिंसा क्षमा और वीरता का लक्षण है। होने दीजिये।

कुमारेशजी आज का युग क्या माँग रहा है, हमें देखना है। आज के युग में किसान की भूखी और सूखी आँखें कुछ माँग रही हैं, मजदूरों की दर्द भरी आवाजें कुछ चाहती हैं, मज़दूर स्त्रियों के दर्द भरे गीत दुख दर्द का पैगाम सुना रहे हैं। अहिंसा यहाँ पर काम न करेगी। हमें साम्राज्यवाद से लोहा लेना है। भारत स्वतन्त्र होगया है, तो क्या अभी हमें मजदूरों और किसानों को स्वतन्त्र कराना है ? उनके हृदय से गुलामी और कायरता के जजबे को निकाल फेंक कर आजादी के गीत

गवाना है। उनकी इज्जत, अस्मत की रक्षा करनी है। उनके रोते, बिलखते, चीखते बच्चों को रोटी का टुकड़ा देना है! आज स्वतन्त्र भारत का मजदूर भी कीड़ों की भाँति सड़ रहा है। पूंजीवाद, साम्राज्यवाद उसे डस रहा है। उसे दूर करना है, नहीं तो मानवता का नाश हो जायेगा। अहिंसा हमें बुजदिली सिखाती है बुजदिली।

कुमारेश गरम होकर बोले—वाह मानवता के ठेकेदार गरीब, किसान, मजदूरों की स्थिति को सुधारना चाहते हैं, उनके जीवन में स्वतन्त्रता का राग फूंकना चाहते हैं, और कहते हैं, कि अहिंसा बुजदिली सिखाती है। क्या आप लोगों ने किसान, मजदूरों की दशा सुधारने की बपोती लिखा रक्खी है। क्या आज कांग्रेस इनकी दशा सुधारना नहीं चाहती। क्या बापू को गरीबो से प्रेम नहीं। गरीब, मजदूर की स्थिति सब जानते हैं, प्रेम और शान्ति के साथ-साथ सभी सुधरता है, शीघ्रता से कार्य नहीं बनता, वरन् बिगड़ता है। यदि आपको गरीब मजदूर की दशा सुधारनी है, तो ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।

भारती जो इस बीच में आ गयी थी कुमारेश की इस छोटी और चुभती हुई बात पर विचार कर रही थी। ठीक ही तो कहा है कुमारेश बाबू ने। पर वह क्या सोच रही है, नहीं उसे अपने पक्ष का समर्थन करना चाहिए। कुमारेश बाबू अच्छा आपको अहिंसा का रूप परिवर्तित होता है या नहीं।

होता है।

कैसे ?

जैसे श्री गान्धी ने एक स्थान पर कहा है

पुकार कर कहा है, कि अहिंसा क्षमा वीरता

मरने की शक्ति हो वही मारने से अपने को रोक सकता है। मेरे लेखों से तुम भीरु । मान लो तो ? अपने लोगों की रक्षा करने के धर्म को खो बठो तो ? मेरी अधोगति हुए बिना न रहे। मैंने कितनी बार लिखा है, और कहा कि कायरता कभी धर्म हो ही नहीं सकता।" अनन्त बाबू और आप कहते हैं कि अहिसा हमें बुजदिली सिखाती है।

अनन्त निरुत्तर होगया भारती भी एकटक इस युक्तपूर्ण बात को सुनकर सन्न रह गयी। अहिंसा कितना गोरखधन्धा है बापू जी कभी कुछ कहते हैं कभी कुछ।

अनन्तराम ने कहा— मान गया कुमारेश, हालाँ कि मैंने भी गान्धीवाद पढ़ा है, पर धर्म के हेतु मुझे उस पर विश्वास नहीं।

तभी सम्भवतः ! आप अहिसा को बुजदिली कहते हैं।

कुमारेश एक प्रश्न अनन्तराम से पूछने जा रहा था कि एक कामरेड ने आकर सूचना दी, कि बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ होने जा रही है।

अनन्तराम उठता हुआ बोला—चलिये कुमारेशजी बैठक में चला जाय।

चलिये कहता हुआ कुमारेश उठ खड़ा हुआ। वह सोच रहा था कैसे हैं ये लोग, जो आज बापू को गलत समझे हैं।

१५

देश की परिस्थिति सुधरने के बजाय निरंतर गिरती जा रही थी। आज पंजाब का हत्याकांड देश में एक विचित्र प्रकार का क्षोभ और ग्लानि भर रहा था। आते हुए शरणार्थी अपनी विपदाओं को सुनाकर लोगों को और उत्तेजित कर रहे थे। आज मानव क्रोधित था, उसकी आत्मा मर चुकी थी। वह केवल प्रतिकार चाहता था।

ऐसे ही समय में विपक्षी दल उठ रहे थे। भारत विभाजन के उपरांत उनकी शक्ति दूनी चौगुनी हो गई थी। कहीं से धर्म खतरे में है, का नारा बुलंद किया जा रहा था, तो कहीं से साहित्य, संस्कृति सभ्यता और जाति रक्षा की चर्चा की जाती थी। प्रत्येक मानव पर, आज के वातावरण का पर्दा पड़ा हुआ था। जो कुछ शांति के पुजारी थे भी, सो उनके प्रयत्नों से कुछ हो भी नहीं पा रहा था। सब पर आज साम्प्रदायिकता का जोश चढ़ा हुआ था। सब बदला लेने की भावना में थे। सब कुछ खोकर आया हुआ मानव दूसरों को भी वैसा बना देना चाहता था। विपक्षी जाति को यहाँ पर सुख और निश्चिंतता के साथ घूमते देख एक ईर्ष्या उत्पन्न होती थी मानव के हृदय में।

विश्वविद्यालय पहुँचते ही कुमारेश की दयाशंकर से भेंट हो गई। दयाशंकर, कुमारेश के साथ चलते हुये बोले—कुमारेश बाबू आज शाम को हम लोग "पंजाब डे" मना रहे हैं, आप सभा में अवश्य आइयेगा।

कुमारेश चौंका और सम्हल कर बोला—मैं अच्छा आ जाऊँगा, पर पंजाब डे मनाने का कौन सी आवश्यकता है। दयाशंकर जी।

आवश्यकता? आवश्यकता तो है ही तभी ता मनाया जा रहा है। आये हुए पंजाब के शरणार्थियों, एवं इस समय भी पंजाब में होते हुए हत्याकांड के विरोध में प्रदर्शन करना है हो, आप चाहते हैं कि यह भी न किया जाय।

अवश्य किया जाय, पर सोच विचार कर। आज भरे हुए घाव की पपड़ी उकेलने को कोई आवश्यकता नहीं। सोये शेर को जगाना उचित नहीं। भूली बात को उभारना ठीक नहीं। तुम आग बुझाने के धोखे में जल के स्थान पर पेट्रौल छोड़ रहे हो। सांत्वना प्रदान करने के स्थान पर उनके हृदय में प्रतिकार की भावना भर रहे हो। ऐसे समय में सभाओं और भाषणों की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है कैम्पों में सेवा करने को समझे।

दयाशंकर मुह बनाते हुए बोले—आप मुझे क्या समझाने चले हैं। कुमारेश बाबू एक अहिंसावादी वीरता के स्थान पर कायरता की ही बातें करते देखा गया। गांधी के सिद्धांतों पर

चलने वाला व्यक्ति आज बुजदिल हो गया है। आज गांधी हमारे उत्तेजनापूर्ण खून को अहिंसा का नश्तर चुभा कर चुप करना चाहता है। हम वीर की संतान है, राणा, शिवा की संतान हैं के गौरव को भुलाकर बुजदली सिखाना चाहता है.

बुजदली कुमारेश को हँसी और क्रोध एक साथ आया। वह गुस्से से बोला—भाई गांधो की उपेक्षा करते हुए आपको लज्जा आनी चाहिए। बगैर बात को समझे हुए उस बात की खिल्ली उड़ाना कहाँ तक उचित है। अहिंसा के ऊपरी माने लगा कर ही तुम गांधी की उपेक्षा करने लगते हो। हाँ गांधी जी शांति के पक्षपाती हैं हिंसा के विरोधी हैं। पर साथ साथ उन्होंने यह भी कहा है "मेरे अहिसा धर्म में खतरे के वक्त अपने अजीजों को मुसीबत में छोड़कर भाग खड़े होने की जगह नहीं। मारना या नामर्दी के साथ भाग खड़े होना, इनमें से मुझे किसी बात को पसंद करना पड़े तो मेरा वसूल कहता है कि मारने का हिंसा का रास्ता पसंद करो"। कुछ पढ़ कर और समझकर बात किया कीजिये दयाशंकरजी।

कुछ भी हो कुमारेश। आज इस सभा की आवश्यकता है वहाँ पर उत्तेजना नहीं वरन दुःखी हृदयों को शांति मिलेगी। प्रतिकार की भावना नहीं, वरन प्रेम और एकता का संदेश मिलेगा। इसी कारण आज शाम को हिन्दू विद्यार्थी संघ ने सभा का आयोजन किया है। आशा है, आप अवश्य आयेंगे

जी, मैं, हाँ इस युग में तो आवश्यक हो गया है, कि प्रत्येक

संस्था के विचारों को सुने। यदि पहले की बात होती।

तो सम्भवतः आप न आते। मुसकराते हुए दयाशंकर ने कहा।

क्लास में कुमारेश पढ़ न सका। उसे दो विरोधी मित्रों की बातें आनन्द प्रदान करती रहीं। एक है जातीय संगठन पर जोर देता है, दूसरा साम्यवाद के सपने देखता है। एक विश्वबन्धुत्व की भावना रखता हुआ सारे विश्व को साम्यवादी बनाने के सपने देखता है, तो दूसरा अपने जातीय संगठन के विचारों की पुष्टि करता है। दोनो सिद्धांतों में महान अन्तर है दोनों एक दूसरों के विरोधी ही क्या, महान विपक्षी हैं। वे दोनों आपस में जीवन भर नहीं मिल सकते। एक की बुनियाद समानता की भूमि पर है। एक धर्म की उपेक्षा करता है, दूसरा धर्म का जीवन समझता है। एक धर्म को कोई भी स्थान नहीं देता, दूसरा धर्म से मानवता ढूढ़ता है दोनों कभी नहीं मिल सकते। कुमारेश ही ऐसा बीच का खम्भा है, जो दोनों को मिलाये है। कुमारेश हँसा। ओह अनंत-राम और दयाशंकर मे महान अंतर है। अलग अलग रास्तों के चौराहे पर कुमारेश खड़ा है। उसका स्वयं भी रास्ता है, जोकि बिलकुल सीधा है, कहीं मोड़ नही। वह धर्म को मानता है, धर्म को वह दैनिक जीवन का अंग समझता है शांति उसका अन्तिम लक्ष्य है। इसी कारण उसका रास्ता सीधा है। पर जब कुमारेश चोराहे पर खड़ा होकर दयाशंकर और अनंतराम के रास्ते को देखता है, तो उसे टेढ़े-मेढ़े रास्ते दिखलाई पड़ते हैं।

रास्तों के बीच कहीं कहीं पर खाई है। कुमारेश इन रास्तों को देखकर हँसने लगता है और अपने पथ को सरल मान कर निश्चितता से सांस लेता है। ओह यह "मिल्टन" कहाँ से आ गया। कुमारेश चौंक पड़ा उसने अपना सारा ध्यान पढ़ने की ओर केन्द्रित कर दिया।

शाम एक उत्साह लेकर आई। हिन्दू-विद्यार्थी संघ के कार्य-कर्ताओं पर विजयश्री की रेखा खिंच गई। विशाल जन समूह भाषण सुनने के लिए आ गया था। हिन्दू संघ के आज के भाषण तथा पहले के भाषणों में महान अन्तर था। जब हिन्दू विद्यार्थी संघ सभा आयोजित करता था, तब सौ दो सौ से अधिक लोग दिखाई न पड़ते थे, पर आज, आज हजारों का जन समूह था। "पंजाब डे" नाम में एक ऐसा आकर्षण था, कि लोग खिंचे आ रहे थे, विशाल जन समाज के बीच बीच में हिन्दू विद्यार्थी संघ का भगवा ध्वज लहरा रहा था। विशाल मंच पर श्रीदयाशंकर जी सभापति के आसन पर पदासीन थे। जनता की भरमार थी। बल्ब चमक रहे थे। एक तेज रोशनी श्रीदयाशंकर जी के मुख पर पड़ रही थी। राष्ट्र के प्रति, पंजाब के अत्याचारों के प्रति, कवितायें हो रही थीं। कुमारेश दूर सायकिल को टेक लगाये हुए दयाशंकर की ओर एकटक देख रहा था। पाँच हजार के जन समूह के भाषण में सभापति के पद पर बैठे हुए दयाशंकर हिन्दू युवकों के नेता हैं। आज यह युवक हिन्दू विद्यार्थियों का प्रतिनिधित्व करता है, और

आज इसके पीछे चलने वाले भी बहुत लोग हैं। क्या कारण है? कुमारेश कुछ समझ नहीं सका।

न जाने कितने अवसरवादी नवयुवक, नेता बनने के लोभ में निकल आये और "पंजाब डे" पर जोशीले भाषण देकर अपने स्थानों पर बैठ गये। कुमारेश कुछ सुन रहा था, कुछ नहीं। जितने भी युवक भाषण दे गए थे सब आग उगल कर गये थे। जहर उगल उगल कर "पंजाब डे" मनाया जा रहा था। कुमारेश दूर खड़ा इन युवकों को देख रहा था, जोकि अवसर पाकर आग उगल रहे थे।

तालों की गड़गड़ाहटों को सुन कर कुमारेश चौंका, चौंक कर उसने देखा श्री दयाशंकर जी सभापतित्व का भाषण देने के लिए उठ खड़े हुए थे।

सारी जनता समापति का भाषण सुन रही थी। कुमारेश परिचित होने के नाते दयाशंकर की प्रत्येक बात सुन रहा था, जो चिल्ला चिल्ला कर पंजाब के अत्याचारों का वर्णन कर रहे थे। शांति के धोखे में वह अशांति की शिक्षा दे रहे थे। प्रतिकार और प्रतिशोध को दबाने के लिए, उसको उभाड़ रहे थे। पंजाब का विवरण देते हुए आपने कहा "कि मैं पूछना चाहता हूं कि कांग्रेसियों को हिन्दू शब्द से चिढ़ क्यों है। भारत विभाजन दो राष्ट्र वाले सिधांत पर हुआ। फिर भी हिन्दुस्तान में हिन्दू नहीं हिन्दुस्तानी हैं। मैं कहता हूँ कांग्रेसियों से कि वे अपने पुराने कांग्रेसी नेताओं की पुस्तकों और सिद्धांतों को पढ़े

फिर बतावें कि जब उनको हिन्दू शब्द से चिढ़ न थी तो उनको क्यों ? भागवान् तिलक ने स्वयं चिल्ला कर कहा था "हिन्दू" यह शब्द कहते ही प्रत्येक हिन्दू के मन में एक प्रकार की ईर्ष्या, आवेश, अभिमान तथा उत्साह उमड़ना चाहिए। उन्होंने ही कहा था जिसे स्वधर्म स्वराष्ट्र की श्रेष्ठता का अभिमान नहीं है उसे दूसरे धर्म पर कैसे होगा। वह हम रूप भूल गये। जब उन्होंने कहा "कि अपना हिन्दू धर्म द्वेष करना, अथवा आपस में लड़ना नहीं सिखाता। पृथ्वी पर भिन्न भिन्न धर्मों के सब लोगों को परस्पर प्रेम से व्यवहार करना चाहिए यह कहने वाला केवल हिन्दू धर्म ही है। तब कुछ विरोध न हुआ था, और आज, आज इसी शब्द से चिढ़ है। आखिर क्यों ? क्या हम हिन्दू पतित हैं, या हम लोगों ने ऐसा कोई अपराध किया है जो कि हमारी जाति पर कालिख पोती जाय। अतः मैं कहता हूँ कि हम लोग हिन्दू हैं और रहेंगे। हम अपनी जातीयता को बलिदान न होने देंगे, हम उनकी संतानें हैं, जोकि हँसते-हँसाते जाति के हेतु बलिदान हुये।

क्या बेकार की बातें सुन रहे हो, कुमारेश बाबू।

कुमारेश ने घूम कर देखा—ओह कामरेड तुम यहाँ कैसे।

जी योंही चला आया सोचा कि चलो देखें क्या रंग-ढंग हैं।

रंग-ढंग क्या देख रहे हो कामरेड! आग उगल रहा है आग। जैसे तुम लोग बात का बतंगड़ बनाना जानते हो। वैसे यह लोग भी कम नहीं। जैसे झूठी बातें तुम लोग उड़ाना जानते

हो, उसी प्रकार यह लोग भी इस कार्य में सिद्धहस्त हैं। एक साम्यवादी तो, दूसरा सभावादी। सब मुझे अपनी ओर खींचना चाहते हैं। साम्यवादी मुझे अपनी ओर मिलाने का प्रयत्न करता है, तो सभावादी अपनी ओर मिलाने के लिये धर्म का मन्त्र फूँकता है। जैसे तुम लोग, वैसे यह लोग। रंग-ढंग दोनों ही के खराब हैं।

कुमारेश बाबू ऐसी बातें आपको न करनी चाहिए। ये लोग साम्प्रदायिकता की अग्नि फूंकना चाहते हैं, और फिर मुझे आश्चर्य है कि इनकी सभा में जहाँ पर सौ आदमी भी इकट्ठा नहीं होते थे, आज हजारों की संख्या में।

समय का फेर है कामरेड। वरना यहाँ पर कोई झाँकने भी न आता।

हाँ कुमारेश बाबू मुझे तो इन लोगों से बड़ा भय लगता है। ऐसी बातें न जाने कहाँ कहाँ से खोज लाते हैं, और जनता को गुमराह कर रहे हैं।

कामरेड तुम नहीं जानते, दयाशंकर बड़ा तर्क करनेवाला व्यक्ति है उसकी वाणी के ओज तथा व्याख्यान शैली का भास तो तुम्हें हो ही रहा है। ऐसा बोलता है कि जनता को थर्रा देता है। देखो न कैसे हाथ चला चलाकर भाषण दे रहा है, और जनता कैसी स्तब्ध होकर सुन रही है। यही तो और गड़बड़ मचाता है।

देख रहा हूँ, कुमारेश बाबू। इन लोगों से आज जनता

को बचाना है। धार्मिक हवा चला चलाकर जनता को ये गुमराह बना देंगे। जनता विभाजन के बाद इनकी ओर परिणाम न जाने हुए भागती चली आरही है, इसे रोकना है। सभा, संघ के कार्य देश के लिये घातक हैं। यह भारत में वैमनस्य फैला कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं । मेरा बस चले तो मैं इन संस्थाओं को गैरकानूनी करार दूँ।

हाँ कामरेड वह सेर भर, तुम सवा सेर। वह है सभावादी तुम हो साम्यवादी, कितना मतभेद है तुम दोनों में। तुम एक रास्ते पर चलते हो, वे ठीक उल्टे रास्ते पर। फिर मेल कैसे हो सकता है तुम लोगों में। तुम्हें तो सभा से———

मुझे क्या कुमारेश, सबको गुमराह करनेवाली संस्था से डरना चाहिए।

दयाशंकरजी की जय हो। हमारे नेता दयाशंकरजी की जय हो। हिन्दू विद्यार्थी संघ जिन्दाबाद, क्रान्ति अमर हो।

अच्छा कामरेड चलो, अब चलना चाहिए सभा समाप्त हो चुकी है।

अनन्तराम और कुमारेश सायकिल पर चढ़कर चल दिये।

कुमारेश ?

क्या है कामरेड।

भारती तुम्हारी बहन अर्चना को पूछ रही थी, कल शाम से उसे बुखार हो आया है।

कुमारेश चौंक कर बोला—आपने मुझसे पहले क्यों नहीं बताया।

कोई विशेष बात नहीं थी अर्चना को केवल पूछ रही थी, इसी कारण मैं विश्वविद्यालय होकर घर को आ ही रहा था कि तुम मिल गये।

अच्छा कामरेड मैं चला, अर्चना को खबर देने। इन दोनों में कुछ ही दिनों में काफी हेल-मेल हो गया है।

हाँ कुमारेश बाबू जब देखो तब भारती अर्चना की बातें करती रहती है कहती है कि बड़ी अच्छी लड़की है।

जी बड़ी मित्रता है दोनों में।

अच्छा चला।

नमस्ते।

नमस्ते।

भारती के जीवन में उसकी बूढ़ी माँ को छोड़कर और कोई न बचा था। एक चचेरा भाई है, वह भी घर नहीं आता वरन् कलकत्ते में ही व्यापार करता है। भारती अपने सारे समय को प्रारम्भ से ही गरीबों के प्रति लगाती थी। स्वयं विपत्ति पड़ने पर उसने जाना था, कि गरीबों का दुःख कैसा होता है। भाई रुपया भेज देता था, इसके अतिरिक्त भारती ने दो ट्यूशन भी कर रक्खे थे। इसी कारण घर का खर्च चला जाता था। दुखियों का प्रेम कुछ समय उपरान्त सिद्धान्त के रूप में बदल गया तभी से भारती साम्यवादी दल की सदस्या हो गयी।

अपने जीवन के अनुभव द्वारा ही भारती के हृदय में शोषित वर्ग के प्रति प्रेम उपजा था। उसने पिता की मृत्यु के बाद कुछ दिन भूखे रहकर काटे थे। पढ़ी लिखी होने के कारण उसे अधिक ठोकरें न खानी पड़ीं, और शीघ्र ही उसे दो ट्यूशन मिल गये। भारती का इसी कारण सिद्धान्त अब परिपक्व हो गया था, और वह साम्यवादी दल की एक सदस्या थी।

१६

जब कुमारेश और अर्चना भारती को देख कर घर लौट रहे थे, तब दस बज चुका था। आकाश पर बादल छाये हुए थे। पानी के असार दिखलाई पड़ रहे थे। कुमारेश जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा रहा था।

कुमार भैय्या धीरे-धीरे चलो, मुझ से इतनी जल्दी नहीं चला जा रहा है।

अरी बहिन चल, नहीं तो यदि पानी आजायेगा, तो दोनों भीग जायेंगे। सवारी भी कहीं दिखायी नहीं पड़ रही है।

अर्चना ने लाचार होकर चाल तेज कर दी।

कुमारेश के साथ-साथ चलती हुई अर्चना बोली—भैय्या एक दिन ही में भारती का कैसा चेहरा उतर गया। बुखार में बेसुध पड़ी थी बेचारी। फिर भी मुझे देखकर मुस्करा दी थी, कितना स्नेह मुझ से करती है।

हाँ अर्चना लेकिन कोई विशेष चिंता की बात नहीं मलेरिया मालूम देता है, दो चार दिन में उतर जायेगा।

ईश्वर करे ऐसा ही हो भैय्या। मुझे तो उससे बड़ा प्रेम होगया है।

हाँ अर्चना भारती का स्वभाव बड़ा मधुर है। जसी उसकी माँ है वैसे ही भारती। दोनों का स्वभाव एक सा है।

जब कुमारेश और अर्चना घर पहुँचे तब बूंदी पड़नी शुरू होगयी थीं। लालाजी बरामदे में बैठे हुए हिसाब देख रहे थे। कुमारेश और अर्चना को देखकर बोले—बेटा देख आये भारती को, कैसा हाल है उसका ?

कुमारेश ने उत्तर दिया—लालाजी बुखार तो अधिक है, पर कोई चिन्ता की बात नहीं मलेरिया मालूम देता है एक दो दिन में उतर जायगा।

हूँ मलेरिया मे तो एकदम जोरो से बुखार आता है। अच्छा कुमारेश कुर्सी पर बैठो, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं। और अर्चना तुम जाकर स्वयं खा लो और कुमारेश बाबू को थाली यहीं पर ला आओ।

कुमारेश कुर्सी पर बैठते हुए बोला—हाँ लालाजी कहिये। क्या बात है ?

कुमार भय्या, हम सब कुछ खोकर लाहौर से आये हैं। मेरे केवल अर्चना बची है। मेरी भी अवस्था अब अधिक होगई है, न जाने कब यह टिमटिमाता दीप बुझ जाय। हृदय रोग फिर से उभड़ चुका है। इस कारण मेरी इच्छा है कि कहीं से सुयोग्य वर ढूंढ़कर शीघ्र से शीघ्र अचना के हाथ पीले कर दूँ। तुम्हें मुझे इस कार्य में मदद करनी होगी।

लालाजी आप कैसी बातें करते हैं, जिस प्रकार अर्चना आपकी पुत्री है उसी प्रकार हमारी बहन। इस स्थान पर संकोच और लज्जा की आवश्यकता नहीं वरन् उत्साह की है।

हाँ बेटा मेरा शरीर तो अब निर्बल होगया है। ईश्वर तो सहायता करता ही है इस कारण ही तो उसने तुमको भेजा।

लालाजी ईश्वर ने आपकी नहीं वरन् मेरी सहायता की है। वरना न जानें कहाँ-कहाँ ठोकरें खाता फिरता। दैवीशक्ति थी, जिसने मुझे आपसे मिला दिया।

थाली आगई थी। कुमारेश ने भोजन करना प्रारम्भ कर दिया। अर्चना भी अपने कमरे में चली गयी। कुमारेश भोजन करते हुए बोला—लालाजी आप मुझे पता बताइये, मैं दौड़धूप कर अर्चना के लिये सुयोग्य वर तलाश कर लूंगा।

हाँ बेटा जिस प्रकार से हो इस जाड़े में अर्चना का विवाह होजाय फिर मैं भी अपना बचाखुचा जीवन ईश आराधना में लगा देना चाहता हूँ।

भोजन करने के पश्चात् कुमारेश जब अपने कमरे में गया तो उसकी आँखें नींद से झुकी पड़ रही थीं। कुमारेश ने कपड़े उतार कर सोने के कपड़े पहने और बिजली बुझाकर पलँग पर लेट रहा।

सुबह कुमारेश देर तक सोता रहा। अर्चना चाय बनाकर लायी तब कुमारेश सो ही रहा था। अर्चना के बार-बार जगाने पर ही कुमारेश जग सका। आलस्य से भरी आँखों से एक बार अर्चना की ओर देखकर उसने चाय पीनी शुरू कर दी।

भय्या तुम भी आजकल कितनी देर तक सोते हो। सुबह देर तक सोना अच्छा नहीं, देखो न कितनी धूप चढ़ आयी।

हाँ अर्चना आज मैं देर तक सोगया। कल बहुत थक गया था। अब भी अंग अंग टूट रहा है।

कुमारेश शीघ्रता से चाय पीकर उठ पड़ा। जैसे ही उसने सब कार्यों से छुट्टी पाकर कपड़ा पहन कर सायकिल उठायी वैसे ही उसके कानों में ध्वनि पड़ी।

भैय्या।

क्या है अर्चना, घूम कर कुमारेश ने पूछा।

कहाँ चले।

भारती को देखने।

मैं भी चलूंगी।

तू इस समय नहीं शाम को जाना। कहकर कुमारेश सायकिल ले बाहर निकल गया।

कुमारेश के हृदय में स्नेह का मधु बहुत अधिक था, जिससे स्नेह होजाता था, उसको कुमारेश सारे जीवन मानता और चाहता रहता है। यह गुण है, अथवा दुर्गुण पर कुमारेश में है अवश्य।

जब कुमारेश भारती के घर पहुँचा तब भारती की माँ भारती के सिरहाने बैठी हुयी सिर दाब रही थी।

कुमारेश ने पुकारा—माँ।

कौन कुमारेश बेटा, आ जाओ।

कैसी तबियत है, माँ, अब भारती की ?

वैसा ही हाल है बेटा मुझे तो मियादी का भय होता है।

नहीं माँ मियादी नहीं, मौसमी बुखार है ठीक हो जायगा।

देखो बेटा ईश्वर की जो इच्छा होगी वही होगा।

माँ दवा ठीक से चल रही है न।

हाँ बेटा अभी अनन्त तथा उसके साथ दो तीन लड़के आये थे फल और दवा रख गये हैं।

जो ठीक। अब आप आराम कर लीजिये माताजी, रात भर जगने के कारण थक गयी होंगी।

कैसा आराम बेटा। आराम तो भारती के पिता के मरते ही खत्म होगया था। अब तो जीवन में दुःख ही दुःख बदा है। एक भारती थी वह भी हमारी न रही। वह अब तो दूसरे लोगों की होचुकी। उसका जीवन मजदूर गरीब आदमियों के लिये होगया।

नहीं माँ आपको ऐसी बातें न करनी चाहिए आपको तो चिन्तामुक्त होना चाहिए। ईश्वर, सब देखता है।

हाँ बेटा वह तो सबका पालनहारा ही है, वह न होता तो संसार चल ही न पाता।

पर माँ तुम्हारी भारती तो धर्म-कर्म को कुछ नहीं मानती।

बेटा वह पगली है। जो धर्म पर विश्वास नहीं करता तो क्या कर सकेगा जीवन में।

कुमारेश। तू जरा बैठ मैं भारती के लिये दूध तो गरम कर लाऊँ।

हाँ, आप जाइये।

माँ, माँ।

क्या है भारती। कुमारेश ने पूछा।

भारती ने वेसुध अवस्था में आँखें खोलते हुए कुमारेश का ओर देखते कहा—आप।

हाँ भारती, मैं कुमारेश हूँ कुमारेश।

आपने क्यों कष्ट किया कुमारेश बाबू।

भारती क्यों व्यर्थ की बातें करती हो, इसमें कष्ट की कौन सो बात है मानव, मानव हो के काम आता है, किसी दूसरे की सहायता करना, या हाल चाल पूछना कष्ट नहीं है भारती।

कितने अच्छे है, आपके विचार।

मेरे विचार। भारती क्या कहती हो। मैं तो एक साधारण सी बात कहता हूँ, विचार के अच्छे होने की बात नहीं।

माँ को बुला दीजिये।

क्यों क्या कोई आवश्यकता है भारती ?

जी, जी, नहीं, हाँ जरा दवा पीनो है।

कौन सी दवा भारती लाओ मैं पिला दूँ।

मुझे दुःख है भारती, मुझे तुम इतना पराया समझती हो कि दवा तक नहीं पीना चाहती।

यह बात नहीं कुमारेश बाबू।

फिर क्या ? कौन सी दवा है।

वह मेज पर मिकश्चर है।

कुमारेश ने उठ कर भारती को सहारा देकर दवा पिलादो।

भारती।

क्या है ?

तुम्हारी आँखों में कृतज्ञता को भावना टपक रही है ?

जी हाँ।

यह क्यों ?

कुछ नहीं, कुमारेश बाबू। यही सोच रही हूँ कि आपको कितना स्नेह है मुझसे।

स्नेह, हाँ है मुझे तुमसे। मानव को मानव से स्नेह न होगा तो क्या और किसी से होगा।

जी।

भारती बेटा लो दवा पी लो। मैं दूध ले आयी हूँ।

कौन माँ लाओ दूध दो, दवा मुझे कुमारेश बाबू ने पिला दी।

दूध का गिलास देते हुए माँ ने कहा—बेटा क्यों व्यर्थ में कष्ट दिया कुमारेश बाबू को।

माँ इसमें कष्ट की कौन सी बात ?

कुमारेश उस दिन विश्वविद्यालय न जा सका। सारे दिन भारती के घर रहा। भारतो के बहुत जोर देने पर कुमारेश ने अपना दोपहर का भोजन भारती के ही यहाँ किया। सारा

दिन वह भारती और भारती की माँ को अपनी लाहौर की दुर्दशा का वर्णन सुनाता रहा। भारती का दिल बहलाने के लिये, बच्चों की भांति कुमारेश ने कहानियाँ सुना सुनाकर समय काटा।

जब शाम को कुमारेश घर की ओर चला तो रास्ते में उसे नौकर के साथ अर्चना मिल गयी।

अर्चना बहन कहाँ जा रही हो।

मैं, भैय्या, मैं तो भारती के घर जा रही हूँ, पर आप बताइये, आज आप दिन भर कहाँ रहे, जो सुबह का भोजन भी नहीं किया।

अर्चना के साथ चलता हुआ कुमारेश बोला—कुछ न पूछो अर्चना भारती के ही यहाँ रह गया। बुखार अधिक था उसका। वहीं पर भोजन भी कर लिया।

अच्छा कुमारेश बाबू अब आप घर जाइये, मैं भी कुछ ही देर में भारती को देख कर लौट आऊँगी।

अच्छा।

कुमारेश जब सायकिल पर सवार होकर घर की ओर चला तो उसका सिर भन्ना रहा था। सारा दिन कुमारेश ने बैठे-बैठे गुजार दिया था। कितना सुन्दर स्वभाव है उन दोनों का कुमारेश ने सोचा। भारती कुछ भी हो, किसी दल की सदस्या हो, उन व्यक्तियों से श्रद्धा रखती है, जिससे प्रत्येक मानव को रखनी चाहिए। भारती की माँ ईश्वर को मानती है, पर भारती

नहीं। कितना सुन्दर मतभेद माँ, पुत्री में है। ईश्वर करे उसका बुखार ठीक हो जाय। कैसा चेहरा उसका सूख कर रह गया है ?

कुमारेश घर आकर सीधे अपने कमरे में चला गया उसका शरीर पसीने से तरबतर था। पंखा खोलकर वह बिस्तरे पर लेट रहा। थकावट थी और साथ साथ गर्मी।

कुमारेश उस शाम को कहीं घूमने न जा सका। घर पर ही रहा किताबों के पन्ने उलटने पलटने के सिवा वह कुछ न कर पाया।

१७

कुमारेश का एक नारा है, मानवता की जागृति। उसने अपने जीवन का उद्देश्य शांति और मानवता में ही सीमित कर रक्खा है। एक युवक होते हुये गरम खून रखते हुए भी वह उग्र स्वभाव का व्यक्ति नहीं है। वह शांति चाहता है, मानवता के शत्रुओं से उसे जरा भी सहानुभूति नहीं है। जब कोई व्यक्ति या संस्था मानवता का दावा रखते हुए भी दानवता से भी गर्हित कार्यों को करता तो कुमारेश के हृदय में उस संस्था के प्रति घृणा से भर जाता। वह शांति का पक्षपाती एवं अहिंसा के सिद्धांत का मानने वाला व्यक्ति था। इसी कारण उसने अहिंसा के सिद्धांतों को भली भांति समझ लिया था। वह अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना चाहता तो अवश्य था पर तर्कों द्वारा उनको वृद्धि करना उसको उचित न लगता था।

इसी कारण एक शरणार्थी और अपरिचित होने के नाते संस्थाओं के कार्यकर्ताओं द्वारा हिन्दू सभा, हिंदू विद्यार्थी संघ विद्यार्थी संघ एवं स्वयं सेवक के बन जाने की बातें चलायी तो उसे आश्चर्य और ग्लानि हुई।

कुमारेश में एक गुण था वह अन्ध विश्वासी न था। भावना में वह जाना तो मानव की एक सबसे बड़ी दुर्बलता है। इससे

कुमारेश वंचित न था। फिर भी वह भावना में वह जाने के पश्चात ही शीघ्र अपने पथ आ जाता था।

परिस्थितियों के बदलते हुए भी कुमारेश ने अपने सिद्धांतों को न छोड़ा। उसके विपक्षी संस्थाओं के मित्र होने पर भी वह उनके चंगुल में न फंस सका। क्योंकि वह अवसरवादी अथवा अन्ध विश्वासी नहीं था।

जब कुमारेश ने दयाशंकर से आज विश्वविद्यालय में जाकर उसके परसों के भाषण की प्रशंसा की तो दयाशंकर खुशी से फूला न समाया।

उसने सकुचते हुये कुमारेश से पूछा—कुमारेश बाबू आप को मेरा भाषण अच्छा लगा, एक बात मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि उस दिन जो मैंने बात कही वह तर्क पूर्ण और सत्य थी अथवा नहीं।

जी, दयाशंकर जो आपकी बातें उस दिन सब तर्क पूर्ण थी। ऐसी तर्क पूर्ण बातें जिसका कोई विरोध कर ही नहीं सकता था। आग उगल उगल कर मानव को पथ भृष्ट करना। शांति के युग की मांग में अशांति का बीज बोना, हिन्दू, हिंदुत्व के ओट में धर्म के नाम पर जनता को धोखा देना, संस्कृति और वैभव के नाम पर मानवता की खिल्ली उड़ाना, वास्तव में आपके उस दिन के तर्क महत्व पूर्ण स्थान रखते हैं।

इसका अर्थ क्या है कुमारेश बाबू? जी अर्थ कुछ नहीं आपने पूछा मैंने बतला दिया। मुझे न किसी की चापलूसी

करनी है न किसी की निन्दा। मैं स्पष्ट बात कहूँगा और कहता आया हूँ। उस दिन के भाषण ने वास्तव में लोगों के हृदय में प्रतिज्वाला भड़का दी थी।

तो इसके लिये मैं उत्तरदायी नहीं हूँ कुमारेश बाबू चोट खाया हुआ व्यक्ति यदि चोट करे तो कौन आश्चर्य, आप मुझे बदनाम करते हैं। एक विपक्षी होने के नाते। राजनीति में अपना-अपना मत और अपने-अपने उद्देश्य होते हैं। मुझे आज अभिमान है कुमारेश बाबू कि मैं हिन्दू सभा का सदस्य हूँ ऐसी संस्था का सदस्य जिसकी कि नीव ही सुदृढ़ है। यह ऐसी संस्था नहीं है जो कि गिर सके, आज लोग इसे माने या न माने पर एक समय आयगा जब लोग यह अनुभव करेंगे कि वास्तव में इसकी आवश्यकता है। मोजले भी तो नेता हैं उसकी संस्था के यदि सौ प्रतिपादन करने वाले हैं तो दो सौ विरोध करने वाले राजनीति शतरंज का खेल है कुमारेश यदि समय मिला तो ऐसी शह देता कि बाजी की बाजी धुल जाती है।

कुमारेश कुछ सुन रहा था कुछ नहीं दयाशंकर की बात समाप्तकरते हुये देख वह बोला—वाह, दयाशंकर जी आप बात तो ऐसी मजे की करते हैं कि मानोआपका कोई दोष नहीं, आप धर्मात्मा हैं। मैं पूछता हूँ कि आखिर उस दिन आपको ऐसा भाषण देने की कौन सी आवश्यकता थी।

कैसा भाषण, मैंने कोई गलत बात नहीं कही, असत्य नहीं बोला। सत्य और सिद्धांतिक बातों का कहना क्या पाप है।

आज के युग में हमारा कर्तव्य है कि हम लोग जनता के सम्मुख सब बातें साफ साफ खोल कर रखदें फिर जनता जिस ओर जाना चाहती है जा सकती है । सत्य और युग प्रधान बातों के कहने की आज आवश्यकता है, भूली हुई भारतीय जनता को अपना पिछला गौरव का ज्ञान कराना कोई अपराध नहीं । मानवता की होती हुई नृशंश हत्या को बतलाना कोई अनुचित बात नहीं । अत्याचारों के नीचे पिसती हुई हिन्दू जनता, नारी की लुटती हुई लाज को बचाने के लिये पुकारना कोई अपराध नहीं । फिर मेरे भाषण में कौन सी ऐसी बात थी जो आपको अनुचित लगी । क्या मैंने सत्य का सम्मुख रखने के कारण कोई गुरुतर अपराध किया है । बोलिये, कुमारेश बाबू मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये ।

कुमारेश ने उत्तर देते हुए कहा—मेरे भाई वास्तव में तुमने आज की परिस्थिति का ज्ञान कराया है पर दूसरे रूप में इस प्रकार से तो आज के युग में कार्य चल नहीं सकता । आपने सच्चे ज्ञान कराने के कारण पश्चिम पंजाब के अत्याचारों का वर्णन तो किया पर प्रतिकार के रूप में होने वाले पूर्वी पंजाब के दंगों को भूल गये । आपने पश्चिमी पंजाब का विवरण ज़ोर शोर से दिया पर पूर्वी पंजाब का नाम न लिया आपने अपने पिछला गौरव बतलाया, राणा, शिवा, बन्दा वैरागी, गोविन्दसिंह के उदाहरण तो दिये पर उसके अंतरहित में छिपी हुई भावना को पहचानते हुए भी न कह सके । सत्य

को निस्पक्ष रूप में कहना चाहिए। एक सत्य का विवरण देकर दूसरे सत्य को छिपाना कहाँ का इन्साफ है आप सोचते हैं कि मैंने भी बड़ा काम किया। आपका जो उस दिन वाला भाषण पाँच हजार आदमियों ने सुना कुछ तो उन पर असर होगा। यदि आप सत्य को खोलते समय दोनों जातियों का विवरण रखते तो आप महान कार्य करते। तब आप प्रेम और शांति उपजा पाते। विश्वबन्धुत्व का विवरण देते तो लोगों के जले हृदय पर मरहम लगता। होते हुए दंगों की हानि बतलाते तो शांति होती पर मेरे मित्र तुमने शांति के स्थान पर अशांति फैलाया। जले हुए घाव पर मरहम लगाने के स्थान पर नमक छिड़का है कुछ सोचो।

दयाशंकर गुस्से से तमतमाया हुआ बोला—कुमारेश बाबू आपको हमारी हर बात में साम्प्रदायिकता की बू झलकती है। हमारे प्रत्येक कार्यों में आप हिन्दू मुसलमान वैमनस्य पाते हो। आखिर क्यों हम लोग हिन्दू हैं हिन्दुस्तान में हिन्दू निवास करते है, हिन्दू बहुसंख्यक प्रांतों में भी हम लोग अपने प्राचीन काल के आदर्शों का नाम न लें। चन्द मुसलमानों के पीछे प्रताप, शिवा, वैरागी को भूल जायँ। अपने देश में उनकी त्याग और सेवाओं के उपलक्ष्य में हम उन पर गर्व और बातें न कर सके। आखिर क्यों? हम कोई भी बात करें तो अनुचित है। हम किसी क्रान्ति के लिये तो उभाड़ नहीं रहे हैं। हिन्दू धर्म, दूसरे धर्म पर दबाव डालना तो जानता नहीं। हम

दूसरे धर्मावलम्बियों को अपने धर्म में तो मिला नहीं सकते। हम तो अभिमान और गौरव के भूखे हैं। अत्याचार क्या होता है यह तो हिन्दू करना जानता ही नहीं।

हाँ आप लोग अभिमान और गौरव के भूखे हैं। हम लोग नहीं! आप दूसरे हिन्दू हैं मैं दूसरा या मैं हिन्दू ही नहीं। हम लोगों का भी गौरव की चाह है अभिमान की भूख है। मैं भी जानता हूँ अपने आदि काल का इतिहास, शिक्षा का गौरव। तपस्वी मुनियों द्वारा पढ़े हुए बालक विद्याध्यन के पश्चात ऐसे निकलते थे जोकि सारे संसार को थर्रा देते थे। यह हमको भी ज्ञात है। राम, लक्ष्मण, कृष्ण का जीवन उनकी अमरवाणी, गीता का गौरव पूर्ण संदेश हमने पढ़ा है। शिवा राणा के कार्य, लक्ष्मी, पद्मनी की वीरता पर हमको भी अभिमान है। अपना गौरव न कभी कोई भूल पाता है न भूल सकता है। पर अपने अभिमान की बर्फ की चट्टान को कभी न कभी पिघलना ही पड़ता है। आज हमारे अभिमान की बर्फ की चट्टान पिघल गई है अब अभिमान केवल ही रह गया है। आज हमने अपने आदि काल के स्तर से बहुत नीचे गिर गये हैं क्योंकि हम आदि काल के बने हुए सिद्धांतों पर न चले। हम नीच हो गये क्योंकि गीता के बताये हुए समानता पर न चले आदि काल के प्रेम और ऐक्य भावना का न पहचाना। विपक्षियों से घृणा की, दूसरी जाति वालों को घृणा की दृष्टि से देखा। इसी कारण हम सब भूल गये।

अभिमान और गौरव की झूठी आशा में हम प्रेम और एकता की भावना को ले डूबे। हम भूल गये समानता की भावना को। आज लोग साम्यवाद और समाजवाद के चक्कर में पड़े है, पर वे भूल गये पिछला इतिहास राम, कृष्ण के समय में भी तो समानता थी क्या तब समाजवाद न था। हम भूल गये अपना गौरव हम भूल गये अपना अभिमान और आज के युग में गौरव, और अभिमान की लाश अपने बदन से चिपटाये हुए हम लोग मूर्खता की हँसी हँस रहे हैं, क्या यह उचित है दयाशंकरजी। अब भी समय है हम लोग शांति रूप से लोगों को राम राज्य का स्मरण करावे। साम्यवाद और समाजवाद चिल्लाने वाले व्यक्तियों को बतलावे कि तुमने कोई नयी बात नहीं खोजी यह हम लोगों के यहाँ आदि काल से थी। हम भूल गये हैं अन्यथा किसी दूसरे रूप में कार्य करने से लाभ के स्थान पर हानि ही होगी।

दयाशंकर आश्चर्य की मुद्रा बनाते हुए कुमारेश से पूछा—मुझे आश्चर्य कुमारेश बाबू आपकी और मेरी बातों में कोई अन्तर नहीं फिर हम लोगों से चिढ़ क्यों।

चिढ़ नहीं दयाशंकर जी हम दोनों एक चीज को धर्म आदि काल के गौरव एवं अभिमान को मानते है पर हमारे और आपके मार्गों में अंतर है। आप का मार्ग साम्प्रदायिकता का है जातीय संगठन का इसी कारण वह ऊबड़ खाबड़ है आपके मार्ग में कठिनाइयाँ हैं और मेरा मार्ग सीधा है बिलकुल सीधा। विश्वबन्धुत्व

के महल तक जाने वाला जहाँ पर हम लोग पहुँच महल की खिड़की से गर्व से झांकेंगे। आपका मार्ग भी विश्व बन्धुत्व तक आता है पर नदी नाले भयानक जीव जन्तु, खांई खन्दक के कारण विश्वबन्धुत्व तक पहुँचना असम्भव ही नहीं वरन् कठिन है। हम लोग अपने गौरव और अभिमान के साथ आदि काल के इतिहास के साथ विश्वबन्धुत्व के महल तक पहुँच जायेंगे बिना किसी अड़चन व कष्ट के।

दयाशंकर उठता हुआ बोला—ठीक है कुमारेश' बाबू अपना अपना विचार है।

अखबार उठाते हुए कुमारेश ने सोचा जब समझ में न आया सिद्धांत कमजोर पड़ा तो अपना अपना विचार है कह कर चल दिये। वाह रे राजनीति।

१८

कुमारेश ने एकाग्र चित्त होकर भारती को सेवा की। धर्म कर्म का उद्देश्य लेकर सेवा भाव की भावना रखता हुआ वह अपने उद्देश्य में रत रहा। जब कर्म भावना प्रधान हो जाया करती है तब मानव को कुछ नही सूझता वह केवल कार्य चाहता है। कुमारेश के हृदय में शांति और अहिंसा के साथ साथ कर्म भावना भी अधिक थी। इसी कारण वह भारती की सेवा तन मन से करता रहा।

आज सात दिन के पश्चात् भारती का बुखार उतरा था। शरीर निर्बल हो गया था चलने फिरने की शक्ति न होते हुए भारती प्रसन्न थी। बुखार उतरने का समाचार सुनते ही कुमारेश का हृदय प्रसन्नता से डोल उठा था। उसे अपने कार्य का फल मिल गया था। एक निष्काम भावना से भक्ति करते हुए भक्त को जब सुन्दर फल मिलता है तब वह नाच उठता है, वही हाल आज कुमारेश का था, कि भारती शीघ्र से शीघ्र अच्छी हो जाय उसका परिणाम कुमारेश को मिल गया था।

अपने बुख़ार के दिनों में भारती को नया अनुभव हुआ, कुमारेश से वह परचित थी पर वह परिचय केवल वार्तालाप तक ही सीमित था। अर्चना से परिचय होने पर, वह कुमारेश

को कुछ समझ सकी थी, पर वह पूर्णतया कुमारेश को पहचान न पाई थी। इन बुखार के दिनों में भारती कुमारेश को समझ पाई थी। अन्तरात्मा को टटोल टटोल कर भारती ने कुमारेश के मनोभावों को समझने का प्रयत्न किया था और वह सफल भी हो पायी थी। भारती की धारणा कुमारेश के प्रति कितनी असत्य निकली उसका अनुभव उसे आज ही हुआ था। आत्मभावों का विश्लेषण हो जाने के उपरांत ही भारती जान सकी थी कि कुमारेश और साधारण नवयुवक से भिन्न हैं, वह अपने सिद्धांतों पर जान देता है पर किसी दूसरे की उपेक्षा नहीं करता। निस्पक्ष व्यक्तियों से भारती को श्रद्धा थी। उसमें कुमारेश भी एक था।

कुमारेश में उसने एक और गुण पाया था वह था उसका निर्भयता से बातें करना, वह वाद-विवाद निस्पक्ष रूप से करता था। साथ साथ में कुमारेश के हृदय में सहानुभूति का भंडार भरा पड़ा था। प्रेम, शान्ति, एकता और लौकिक व्यवहारों में कुमारेश अद्वितीय था।

भारती ने अपने बुखार के अनुभव में ही जाना कि कुमारेश के सिद्धांत सच हैं। अहिंसा वास्तव में क्षमा और वीरता का लक्षण हैं। सत्य तर्कों को सुनकर भारती का मन मोर की भांति नाच उठता था। बिस्तर पर पड़े पड़े अपने सिद्धांतों पर तर्क-वितर्क कितनी शान्ति पूर्वक होता था उसकी कल्पना भारती आज कर रही थी।

वह कामरड थी। साम्यवादी दल की सदस्या, कामरेडों से और उनके पदाधिकारियों से भारती का परिचय था। वह लोग भी भारती को देखने आये, पर कुमारेश का व्यवहार और उसकी मधुर वाणी एवं कार्य की समता कोई न कर पाया। बड़े बड़े बालों वाले तथा विचित्र पहनावों के साथ कामरेडो और उसके बीच खड़े हुए कुमारेश को देखकर भारती को बड़ा विचित्र सा लगता। अचकन पतलून में, और विचित्र प्रकार की शक्ल बनाये हुए कामरेडों को देखकर और कुमारेश को धोती कुर्ता चप्पल में देख कर भारती दोनों की मन में समता करती तो उसका हृदय एक को आडम्बर बताता एवं दूसरे को सत्य।

इन दिनों कुमारेश के सम्पर्क ने भारती को कुमारेश के पास और पहुंचा दिया था। पहले कुमारेश भारती से केवल परचित था, वह परिचय भी एक संयोग था। परिचय होते हुए भा भारती कुमारेश से विशेष बातें न करती थी। अर्चना के मिलने के बाद भारती कई बार अर्चना के घर भी गई, फिर भी भारती कुमारेश के प्रति विशेष नहीं झुकी, पर इस बुखार के संयोग में बिस्तर पर पड़ी हुई भारती के हृदय में कुमारेश के प्रति श्रद्धा और ममता एक साथ उपजी थी। लाहौर में सब कुछ खो कर आया हुआ कुमारेश उसकी सेवा में तन्मयता से तल्लीन था, यह देखकर भारती के आखों से आँसू भी ढुलके थे। अंतरात्मा से उसकी चीख भी उठी थी कि वास्तव

में कुमारेश उच्च है। इसी कारण भारती का परिचय श्रद्धा में में बदल गया और श्रद्धा में बदलने के उपरान्त आकर्षण में। कुमारेश को आते ही भारती तो प्रसन्नता से खिल उठती। अर्चना और कुमारेश का नाम सुनते ही भारती के हृदय में एक विचित्र प्रकार का आनन्द उत्पन्न हो जाता, यह कुमारेश के प्रति आर्कषण नहीं तो और क्या था।

भारती, भारती देखो कुमारेश बेटा आया है।

क्या मां, भारती कुछ सोचते हुए बोली। कुमारेश आया है।

ओह कुमारेश बाबू आइये बैठिये।

पास कुर्सी पर बैठता हुआ कुमारेश बोला—भारतो अच्छी तो हो।

हाँ कुमारेश बाबू, बुखार उतर ही गया है कमजोरी बाकी है।

वह तो कुछ दिन रहेगी ही, क्या विचार कर रही थी इस समय।

कुछ नहीं कुमारेश बाबू, यही सोच रही थी कि आपने ही मेरी बीमारी में जितनी सेवा की, वह भूली नहीं जा सकती।

कैसी सेवा भारतो। मेरे भो घर में लोग थे दुर्भाग्य से आज नहीं, भाभी प्यारी भाभी जो साथ कभो छोड़ती ही न थी, हर समय डाट कर प्यार कर काम लिया करती थो वे भी आज नहीं, मुझे काम करने की लत पड़ गयी है भारती, इसे मैं कैसे दूर कर सकता हूँ।

कुमारेश बाबू आप कितने दयालु हैं जानती हूँ ।

भारती नारी जरा से कार्य पर आशीर्वाद देने लगती हैं। नारी नारी ही है, फिर नारी भावना स्वभावत: कोमल होती है।

जाने दीजिये कुमारेश बाबू इन बातों को, मैं आपसे आज यह प्रश्न पूछना चाहती हूँ कि आपके सिद्धांत में कायरता का महत्व पूर्ण स्थान कौन सा है, और उसका सम्बन्ध कायरता से क्या हैं।

क्यों बच्चों की सी बातें करती हो भारती किसी के भी सिद्धांत में कायरता को स्थान नहीं। कायरता वह शब्द है जिस को कि किसी भी मानव को मुख पर लाना न चाहिए। हमारा सिद्धांत वीरता सिखलाता है कायरता नहीं। ऐसी वीरता जो कि शौर्य सम्बन्धी बड़े बड़े सिद्धांत तक नहीं सिखला पाते। हमारी अहिंसा वीरता सिखलाती है, और उसके साथ साथ, क्षमा, दया, सत्य, बुद्धि और अक्रोध। हमारी अहिंसक वीरता दूसरों पर संहार नहीं वरन् रक्षा करती है। कायरता तो दूसरे संस्थाओं के सिद्धांतों में है, महामानव की अहिंसा में नहीं। कायरता नामर्दी का लक्षण है, वीरता अथवा शौर्यता का नहीं।

जी आपने ठीक कहा, पर मैं पूछती हूँ कि अहिंसा और धर्म क्या अलग अलग नहीं चल सकते।

चल सकते हैं भारती, अवश्य चल सकते हैं, आप धर्म को आवश्यक नहीं समझतीं तब भी अहिंसा का प्रतिपादन करती

हुयी चल सकती है। मैं धर्म को तर्क की वस्तु नहीं समझता, फिर भी मैं इतना कहूँगा कि धर्म ही मानव का लौकिक और पारलौकिक जीवन सुधारता है। धर्म ही एक ऐसा शस्त्र है जो कि मानव की समस्त कुत्सितयों को दूर कर सकता है। महामानव का धर्म अहिंसा और शान्ति है। धर्म और कर्म का गूढ़ सम्बन्ध है, इस कारण जो धर्म पर श्रद्धा रखता हुआ आत्मा परमात्मा के सम्बन्ध को मानता है, वह बुरे कर्मों से डरता है, इस कारण धर्म और अहिसा साथ साथ चला करते हैं, यदि कोई मानव धर्म पर विश्वास करता है और श्रद्धा रखता है और अहिंसा पर विश्वास करता है, तो आगे चल कर अहिंसा ही उस मानव का धर्म हो जाता है। कोई भी जगह धर्म से वंचित नहीं, आपके समक्ष में साम्यवाद ही धर्म और कर्त्तव्य है। धर्म और अहिंसा अथवा अहिंसा धर्म एक ही वस्तु है.।

लीजिये कुमारेश बाबू मां चाय बना लाई है पीजिये।

मां की ओर देखता हुआ कुमारेश बोला—मां क्यों आप व्यर्थ में इतना कष्ट उठाती हैं। चाय तो पीकर मैं घर से चला था, फिर बनाने की क्या आवश्यकता थी।

अरे बेटा चाय में भी कुछ होता है क्या ? लो पियो कष्ट की क्या बात, बेटा तुमने भी तो भारती की सेवा की।

बात को बदलते हुए कुमारेश ने कहा—मां देखो, आपकी भारती अब भी धर्म की उपेक्षा करती है।

कुमारेश भय्या यह मूर्ख है। साम्यवादी दल की है, इसी कारण ईश्वर को भूले बैठी है, लाख बार कहा कि तू लड़की की भांति घर में बैठ बाहर जाने की कौन आवश्यकता, पर जब मैं इससे कुछ कहती हूँ तब कहती है—मां तुम भी इतनी भोली हो, देखो युग कितना बढ़ गया है। हमारे पास का मजदूर गरीब सुखी नहीं है, शोषणकर्ता उसका रक्त चूस रहे हैं, हमें उनकी सहायता करनी चाहिए। मैं यह सब सुनकर चुप हो जाती हूँ। अकेली है इसी करण कुछ नहीं बोलती। नहीं तो...

नहीं मां ठीक है, भारती जो करती है सो बुरा नहीं हमें दूसरों का तो ध्यान रखना ही चाहिए, पर यह एक हिन्दू लड़की हो कर भगवान को नहीं मानती यह बुरा है।

क्या करू बेटा, जब कहती हूँ कि भगवान को प्रणाम करो बेटा, तब कहती है कि मां मुझे फुरसत नहीं है, और फिर पत्थर के भगवान होते हैं भला।

मुझे बड़ा भय लगता है इनकी बातों से। क्यों भारती भला तुम्हें ऐसी बाते करनी चाहिए। कुमारेश ने पूछा।

हां कुमारेश बाबू मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या पत्थर के भगवान होते है। पत्थर पूजा मुझे ढकोसला लगता है।

कुमारेश डांटकर बोला—भारती मुझे पता न था कि धर्म के नाम पर यहाँ तक बढ़ गई हो, कि पत्थर कहकर पुकारते, तुम्हें लज्जा नहीं आती। हिन्दू होकर अपने भगवान की खिल्ली उड़ाती हो, तुम नहीं जानती यह मूर्ति पूजा हम लोगों में कैसे

आई पूर्वकाल में हम लोग कुछ उच्च गुण वाले व्यक्तियों को ही भगवान का प्रतीक मान कर पूजते थे। युग के साथ साथ उन लोगों में वैमनस्य बढ़ा और बुराइयां भी आई। एक दुर्गुण से भरे हुए व्यक्ति को पूजना हास्यप्रद बात थी, इस कारण उनके स्थान पर मूर्तियों की स्थापना की गई और मूर्तियों को ही भगवान का प्रतीक मान लिया गया। यह पत्थर की मूर्ति तो केवल एक केन्द्र है, जिस केन्द्र पर अपने मन को स्थिर रखकर ब्रह्म को खोजते फिरते हैं। ईश प्राप्ति अपने सारे दुर्गुणों को दूर कर निश्चित बनाने का साधन मात्र है।

भारती की बूढ़ी मां, धर्म से प्रेम करनेवाली मां कुमारेश की ओर निहार रही थी, बात खत्म होते हुए बोली—लो सुन भारती, हम मूर्खों को चूतिया बना सकती थी, पर अब कुमारेश बाबू को जवाब दे, तुझसे ज्यादा पढ़े लिखे हैं फिर भी ईश्वर को मानते हैं, कैसा अच्छा उदाहरण आज दिया, रोज तू मुझे बेवकूफ बनाती थी, आज बोल। न जाने किसके चगुल में फँस गयी जो अपने भगवान को बिसारे दे रही है।

भारती चुप चाप कनखियों से कुमारेश को निहार रही थी। वह आज शर्म से झुकी जा रही थी। कुमारेश बाबू जो युवक है, शांति एवं अहिंसा के पक्षपाती, उनका धर्म पर अडिग विश्वास है। कुमारेश भारती की मां से, भारती को लक्ष्य करके धर्म के गूढ़ अर्थों पर देर तक बातें करता रहा।

१६

कुमारेश के जीवन में एक नये सत्य का आगमन हुआ था, जिससे वह अति प्रसन्न था वह था, बापू का आगमन। अभी तक वह अपने जीवन में केवल बापू के सिद्धांतों को जान सका था, उनके रूप को न देख पाया था। जब उसने प्रथम बापू को देखा तो उसे ज्ञात हुआ कि पत्र पत्रिकाओं में छपने वाले चित्र से बापू भिन्न है। उसे उनके मुख पर तेज और आभा की रेखा देख पड़ी थी। शांत मुखड़ा, पर प्रेम और एकता का संदेश था, उनकी मुस्कराहट, शरीर में एक विचित्र प्रकार का आनन्द भर देती थी, इसी कारण कुमारेश ने बापू के सत्य रूप को देखा।

कुमारेश का अहिंसा का सिद्धांत, विश्वास से श्रद्धा में बदल गया था। बापू के प्रवचन ऐसे सार गर्भित होते थे, जिससे कि कुमारेश कभी कभी आश्चर्य्यान्वित हो जाता था, कल्पना के उपरांत जब कुमारेश सत्य में पहुँचा तब उसे ज्ञात हुआ कि काल्पनिक जीवन और सत्यता में महान् अंतर होता है।

आज जब कुमारेश बापू के प्रवचन सुनकर लौटा तो उसे लालाजी से ज्ञात हुआ, कि उसको लालाजी के साथ मेरठ अर्चना की परीक्षा के हेतु चलना होगा, तो उसका मन खुशी से

नाच उठा, अर्चना उसकी बहन की बरीक्षा, बरीक्षा, टीका फिर विवाह। ओह कितने सुन्दर हैं ये शब्द।

और उसी रात को गाड़ी से कुमारेश और लालाजी मेरठ के लिये चल दिये। कुमारेश के हृदय में आनन्द हिलोरें ले रहा था, उसकी बहन अर्चना की बरीक्षा होने जा रही है। मेरठ के लड़के के बारे में कुमारेश लालाजी से काफ़ी सुन चुका था फिर भी उससे न रहा गया। उसने पूछा—लड़के को आपने देखा।

कुमार कैसी बातें करते हो, लड़के को हमने तुमने सबने देखा है, चार दिन पहले जो लड़का व्यवसाय के सिलसिले में हमारे यहाँ आया था वही तो है।

कौन शेखर ?

हाँ वही, पारसाल ही तो उसने "एम, काम" किया है। भरापूरा घर है। मां बाप भाई बहन सब तो है।

जी तब तो अति सुन्दर है।

दूसरे दिन शुभ मुहूर्त में बरीक्षा हो गयी। कुमारेश को शेखर बहुत ही मिलनसार जान पड़ा। बातों की निपुणता और चंचलता देख तो कुमारेश आश्चर्य से विस्मृत हो गया। सारे दिन शेखर ने कुमारेश को नहीं छोड़ा। जब शेखर कुमारेश को अपने कमरे में लाया तो कुमारेश उस कमरे की सजावट देख कर मुग्ध रह गया। स्थान-स्थान पर तैल चित्र, रेखा चित्र टँगे थे, शेर हिरन की खालों से कमरा सजा हुआ था।

कुमारेश कमरे की ओर देखते हुए कहा—शेखर बाबू

सम्भवतः आप एक कुशल चित्रकार हैं और साथ साथ शिकारी भी।

शेखर ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—जी मैं चित्रकार, हाँ थोड़ा-थोड़ा तो अवश्य हूँ और शिकारी वह बिलकुल नहीं, मुझे पक्षियों और जानवरों को मारते दुख होता है।

तो आप इसे पाप समझते हैं शेखर बाबू।

पाप, पाप कैसे कह सकता हूँ कुमारेश, हाँ किसी की हत्या करना अच्छा नहीं।

तो सम्भवतः आप गांधीवादी हैं शेखर।

शेखर इस पर खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला—यह आपने कैसे विचार कर लिया कि मैं गांधीवादी हूँ। मैं गांधी के सिद्धांतों पर विश्वास नहीं करता, फिर मेरे कमरे में लगे हुए चित्रों से ही आप अनुमान कर सकते हैं कि मैं कौन वादी हूँ।

कुमारेश ने अपना सिर उठाया—और चित्रों को ध्यान से देखने लगा। भगवान तिलक, महामना मालवीया, सावरकर मुंजे, परमानंद, केलकर। ओह तो आप भी सभावादी हैं शेखर।

क्यों, क्या सभावादी होना पाप है, मैं उस संस्था का सदस्य हूँ जिसकी नींव धर्म पर खड़ी है। मै धर्म को मानता हूँ धर्म मेरा, मैं धर्म का हूँ। धर्म पर जीवन बलिदान होना मेरे लिये सौभाग्य की बात होगी।

ओह! कुमारेश सोफे पर बैठ गया।

क्यों क्या हुआ, कुमारेश बाबू। शेखर ने चिंता से पूछा।

कुछ नहीं, आपके सिद्धांत पर मुझे दुःख हुआ।

दुख हाँ कुमारेश मैं सुन चुका कि तुम अहिंसावादी हो, इसी कारण सम्भवतः तुम्हें दुख हुआ होगा, पर मैं, मुझे इस पार्टी के सिद्धांतों से श्रद्धा है इसी कारण मैं इसमें हूँ।

पर शेखर कुछ भी हो अभी इसकी जनता में पैठ नहीं।

हाँ कुमारेश मैं जानता हूँ कि भारत के विभाजन होने पर भी आज जनता भूल में पड़ी है। वर्षों से प्रयोग कर करके उसे अन्धविश्वासी बना दिया गया है, इसे दूर करना है और मैं, मैं इसे दूर करने का प्रयत्न करूँगा।

आप ?

हाँ, मैं कुमारेश। मैं कवि नहीं हूँ, गीतकार नहीं हूँ, यदि होता तो कविता और गीता में जोश और भावना का स्वर भर कर रागनियाँ छेड़ छेड़ कर हिन्दुत्व को जगाता। गीत की लय में भारतीय जनता को डुबो कर उसके द्वारा जगाता। वह तो मैं हूँ नहीं, क्योंकि ईश्वर ने मुझे ऐसा बनाया नहीं है। मैं तो केवल एक छोटा सा चित्रकार हूँ, फिर भी याद रक्खो कुमारेश अपने चित्रों को मैं ऐसा बनाऊँगा कि लोग थर्रा जायेंगे। तूलिका चलाचला कर ऐसा रँग चढ़ाऊगा कि लोग बरबस रो पड़ेगे। मैं सिद्धांत और वास्तविकता का चित्रण अवश्य करूँगा चलो कुमारेश मैं तुम्हें कुछ चित्र, वास्तविकता के साथ बने हुये दिखाऊँ।

कुमारेश आश्चर्य पूर्ण मुद्रा बना कर शेखर के पीछे चल दिया।

देखो कुमारेश भाई, यह चार चित्र मैने अति परिश्रम करके बनाये हैं। परदा उलटते हुये शेखर ने कहा—कुमारेश यह है भारत विभाजन का चित्र, चलता हुआ आरा अभिशाप और करुण क्रन्दन का कहानी है।

चित्र देखते ही कुमारेश के मुख से निकल पड़ा वाह, और साथ साथ उसके नेत्रों में भारत विभाजन और परिणाम का चित्र घूमने लगा।

दूसरा चित्र खोलते हुये शेखर ने कहा—और यह दर-दर की ठोकर खाने वाले शरणार्थी।

ओह शेखर भाई वास्तव में तुम कलाकार हो, कुमारेश चिल्ला उठा।

और यह तीसरा चित्र मानवता और दानवता का युद्ध। देखो मानवता का गला घुटना।

और यह है, हिन्दू अबला की लुटती हुई लाज।

ओह ! कुमारेश चीख पड़ा, उसका सिर भन्नाने लगा, ओह शेखर इस चित्र को बन्द कर दो, मैं पागल हो जाऊँगा।

शेखर ने बन्द करते हुये कहा—केवल चित्र देख कर ही घबड़ा गये, असर पड़ा न, और तुम जब लाहौर से भागे होंगे तब तुम्हें कुछ न लगा था

कुछ नहीं शेखर तुम कलाकार अवश्य हो पर भयानक कलाकार।

हाँ कुमारेश जो कुछ भो समझो, मैं भयानक कलाकार हूँ अथवा सत्य को रखने वाला। पर इतना अवश्य याद रक्खो कि इन्हीं चित्रों द्वारा भारत में उथल पुथल मचा दूँगा। कवि को कविता से विप्लव की हिलोरें निकलती हैं, गीतकार के गीतों से दर्द भरे गीत, और चित्रकार के चित्रों से भयंकर आग यदि गीत और कविता वाले गुण होते तो संसार जाग गया होता।

आपको बड़ा अभिमान है शेखर बाबू।

अभिमान शेखर हँसा, क्यों न हो कुमारेश, हम कहीं भीख मागने नहीं जाते। अपने को बड़ा समझना चाहिए। हम लोगों को तो नूतन संसार की रचना करनो है, अहिंसा और बुजदली को छोड़, शौर्य और वोरता के गीत गाना है, शांति के गीतों को छोड़ कर भूषण, एवं चन्दवरदाई के गीतों का स्मरण कराना है। रागनियो से, शहनाई को ध्वनि से युद्ध गोत बजवाना है, चित्रों से मानवता के वास्तविक स्वरूप को दिखलाना है। युग के साथ संसार में महात्मा बुद्ध, महाबीर और गांधी ऐसे व्यक्ति पैदा हुए हैं, यदि महात्मा बुद्ध आदि व्यक्ति पैदा न हुए होते तो, भारत में आज विदेशी न होते, अभिमान हममें है, और जगाना इसका कर्त्तव्य है।

बड़े उच्च विचार है आपके शेखर।

आप मेरी खिल्ली उड़ाना चाहते है कुमारेश उड़ाइये खूब

उड़ाइये। राजनीत में कोई किसी की मजाक कर सकता है। आप अहिंसा में जीवन समझते हैं, मैं अपने जातीय संगठन पर जोर देता हूँ, तो आप विश्वबन्धुत्व के भूलने में भूलते हैं। भूलते हैं, भूलिये खूब भूलिये। पर याद रखिये, बिना जातीय संगठन के विश्वबन्धुत्व मुमकिन नहीं।

क्या व्यर्थ की बातें करते हो शेखर, कहने और करने में अन्तर होता है, भय दिखला कर किसी को बहकाया नहीं जाता, किसी को मिलाने के लिये आवश्यकता होती है त्याग की। आप क्या जाने बापू ने क्या त्याग किया, जिसके कि कारण वे विश्व में महान स्थान रखते हैं उन्हीं त्याग के परिमाण स्वरूप करोड़ों मानव उनके पीछे चलने को तैयार रहते है। कांग्रेस ने त्याग किया है, इसी कारण जनता उसके साथ में है।

आप त्याग की बात करते हैं कुमारेश, जिसके साथ जनता ही नहीं तो वह संस्था क्या त्याग कर सकती है। अकेले संस्था के कार्यकर्ताओं के जेल जाने से तो त्याग हो नहीं जाता।

फिर जब आप लोगों के साथ जनता नहीं है, तब आप की संस्था राजनैतिक जीवन में क्या महत्व रखती है।

आज जनता गुमराह है, उसे पथ पर लाना है तभी देश की रक्षा हो सकती है वरना नहीं।

और हम लोगों को तुम जैसे लोगों को राह पर लाना है जो वैमनस्य का बीज बोते फिरते।

वैमनस्य हँस कर शेखर ने कहा—कैसी निरर्थक बातें करते

हो कुमारेश, कुछ समझ से काम लिया करो हम लोग ऐसे पागल नहीं हैं जो कि वैमनस्य मुफ्त में मोल लें। आप ही बताइये हिन्दू पारसी में कभी युद्ध हुआ। दो भिन्न भिन्न जातियों के होते हुए भी युद्ध न हुआ क्योंकि दोनों एक दूसरे से लड़ाई नहीं चाहते। हिन्दू-मुसलमान के दंगे आये दिन होते हैं, वैमनस्य कौन फैलाता है।

आप निरर्थक बातें करते हैं शेखर।

और आप भी।

अच्छा कुमारेश बा , पहले ही दिन इतना वादविवाद हो गया, कुछ भविष्य के लिये भी तो छोड़ दो चलो खाया पिया जाय।

कुमारेश उठता हुआ बोला—ठीक है शेखर हम दो सिद्धांतो के मानने वाले व्यक्ति हैं, बहस तो होती ही रहेगी।

उसी शाम को बरीक्षा कर कुमारेश और लालाजी दिल्ली को रवाना हो गये। कुमारेश सोच रहा था कि अर्चना और शेखर की जोड़ी कितनी अच्छी है। दोनो के विचार भी मेल खाते हैं।

२०

जब कुमारेश और लालाजी घर पहुँचे तो सब सोता पड़ा हुआ था। कुमारेश ने आगे बढ़ कर आवाज़ दी तब नौकर आखें मल-मलाता हुआ उठा।

घर पहुँच कर लालाजी ने नौकर से कहा—बुधवा चाय तो बना ला।

अर्चना भी पिता जी की आवाज़ सुनकर जग पड़ी थी। आख मल-मलाती हुई वह लाला जी के पास आ खड़ी हुई।

अरे अर्चना बेटी तू जग गयी।

हूँ— बाबू जी, आपकी आवाज़ सुनते ही आँख खुल गई।

अच्छा।

अरे लाला जी इसी प्रतीक्षा में तो अर्चना बहन जग रही थी।

क्या भैय्या, व्यर्थ में आप मुझे बनाते हैं।

इसमें बनाने की क्या बात है बेटी! हाँ तो मुनीम जी की पत्नी और लड़की यहीं पर तेरे साथ रहती हैं।

जी जब से आप गये हैं, तब से आप के आदेशानुसार रह रही हैं।

अच्छा ठीक है, अर्चना बेटी कोई नवीन समाचार।

जी कुछ नहीं।

लाला जी ने बात रोकते हुए कहा—अर्चना बेटी ज़रा जल्दी से जाकर चाय का प्रबन्ध करवा दो।

अर्चना के चले जाने के बाद लाला जी ने कुमारेश से कहा—बेटा यह तो कार्य सब समाप्त हो गया है। अब तो सामान इत्यादि का प्रबन्ध करना है, मेरी इच्छा है कि नवम्बर या दिसम्बर माह तक अर्चना का विवाह हो जाय।

कुछ चिन्ता की बात नहीं लालाजी इस जाड़े में तो विवाह निश्चय ही हो जायगा। सामान का प्रबन्ध करना अभी से प्रारम्भ कर देना चाहिये।

हाँ ठीक कहते हो बेटा। लालाजी ने आगे बात करते हुये कहा—लड़का कैसा लगा तुम्हें कुमार।

जी लालाजी बड़ा ही सुन्दर है सर्वगुण सम्पन्न है। रूप, विद्या और धन के साथ साथ वह एक कुशल चित्रकार भी है। पर एक बुराई है उसमें।

वह क्या? लालाजी ने चिन्तित स्वर में पूछा।

वह कोई दुर्गुण नहीं लालाजी विचारों का मतभेद है। विचार उसके सभावादी हैं।

लालाजी ने हँसते हुये कहा—वाह कुमार भैय्या तुमने तो अभी मुझे संशय और घबराहट में डाल दिया था, मैं तो समझ रहा था कि उसमें कोई दुर्गुण है।

जो लालाजी ऐसी कोई बात नहीं बड़ा ही हँसमुख और शीलवान युवक ज्ञात होता है।

अर्चना चाय बना कर ले आई थी, चाय पीते समय कुमारेश ने कहा—अर्चना बहन मुझे मिठाई तो खिलाओ।

देखो भैय्या मुझे व्यर्थ में तंग न करो, नहीं तो मैं भाग जाऊँगी।

तंग करता हूँ, यही तो कहोगी।

इस समय अर्चना के मुख पर स्वाभाविक लज्जा व्याप्त हो रही थी। एक शर्म, घबराहट और लज्जा तीनों लक्षण उसके मुँह से टपक रहे थे।

चाय पीकर कुमारेश सोने के लिये चल पड़ा। लाख प्रयत्न करने पर भी वह सो न सका। बार बार शेखर की बातें, उसके बनाये हुये चित्र उसके हृदय में आ रहे थे। वास्तव में वह चित्रकार है, कुशल चित्रकार। सिद्धांत का प्रतिपादन उसके चित्रों से टपक रहा है। वास्तव में वह—— –

कुमारेश में एक बुराई थी, वह एक दृश्य को देख लेने के पश्चात भी कई दिनों तक स्मरण रखता था। उसे सोचने की लत थी, बुरी लत थी। जब वह खाली बैठता तो उसका ध्यान भविष्य की ओर बहुत कम जाता था वह केवल अतीत के सपनों की याद किया करता था। स्मरण शक्ति उसे अतीत की महत्व पूर्ण घटनाओं की ओर बरबस खींच ले आती थी।

सुबह दस बजे जब कुमारेश भारती के यहाँ जाने लगा तो अर्चना ने कहा—भैय्या मैं भी चलूँगी।

कुमारेश ने उत्तर देते हुए कहा—नहीं अर्चना तुझे घर पर रहना ठीक होगा, मैं आज वरीक्षा के उपलक्ष में भारती और उसकी माँ को निमंत्रण देने जा रहा हूँ।

बड़े वैसे हो भैय्या।

इसमें बड़े वैसे की क्या बात है बहन, लालाजी की यही आज्ञा है, आज जरा भोजन सम्हाल कर बनवाना।

जब कुमारेश भारती के घर पहुंचा तो भारती खिचड़ी खा रही थी।

अरे कुमारेश बाबू आप तो ऐसे गायब हो गये कि सुध ही न ली।

क्या बताऊँ भारती मैं अवश्य आना चाहता था, पर विशेष कार्य के कारण आ न सका।

मैं भी सुनू कि वह विशेष कारण क्या था।

ऐसा कारण, जिसको कि सुनकर तुम प्रसन्न हो उठोगी।

आखिर वह है क्या।

मैं और लालाजी इन दिनों अर्चना के विवाह के सिलसिले में मेरठ बरीक्षा करने गये थे।

सच।

और क्या झूठ।

माँ। माँ।

क्या है भारती ? भारती की माँ चौके से निकलते हुए बोली।

तुमने कुछ सुना है माँ, अर्चना का विवाह होने जा रहा है, इसी जाड़ों में होगा बरीक्षा भी हो गयी।

सच।

हाँ सच माँ, कुमारेश बाबू बतला रहे है।

ईश्वर यह कार्य, शीघ्र ही पूरा कर दे। प्रार्थना करती हुई भारती की माँ बोली।

कुमारेश ने माँ को प्रणाम करते हुए कहा—माँ, भारती और आपका आज हमारे यहाँ निमंत्रण है। अर्चना भी भारती की बहुत याद करती है।

बेटा मैं तो चली आऊँगी, पर भारती।

नहीं माँ आज आप दोनों को आना होगा। भारती और आप सवारी पर बैठ शाम को अवश्य आइयेगा।

अच्छा बेटा प्रयत्न करूँगी। हाँ तुमने यह तो बताया ही नहीं कि वर क्या करता है।

माँ गत वर्ष ही उसने "एम काम" किया है, व्यवसाय करता है। देखने में सुन्दर और बड़ा शीलवान लगता है।

ईश्वर दोनों की जोड़ी बनाये रक्खे।

बेटा।

क्या है माँ।

शाम का भोजन हम लोगों का तुम्हारे यहाँ है, इस कारण दोपहर का भोजन तुम्हें मेरे यहाँ करना होगा।

पर माँ मुझे जल्दी है।

जल्दी वल्दी कुछ नहीं बेटा। भोजन तैय्यार है, बस रोटियाँ सिकने की देर है, तब तक तू भारती के पास बैठ कर बातें कर, मैं आटा माड़ कर रोटी सेके देती हूँ।

पर माँ।

पर वर कुछ नहीं तू चुपचाप बैठ। माँ का क्या इतना भी कहना न मानेगा।

कुमारेश चुपचाप भारती के पलँग पर बैठ गया।

भारती ने खिचड़ी खाते हुए कहा—कुमारेश बाबू अर्चना के भावी पति का क्या नाम है।

शेखर।

बड़ा सुन्दर नाम है।

और साथ साथ तुम्हें जान कर खुशी होगी कि अर्चना का होने वाला पति एक कुशल चित्रकार है।। ऐसा चित्रकार जो अपने चित्रों द्वारा हँसते हुए लोगों को रुला सकता है उसका एक चित्र 'हिन्दू अबला' और भारत विभाजन का प्रत्येक दृश्य मेरे हृदय पटल पर अंकित है।

और उसके सिद्धांत।

सिद्धांत के बारे में कुछ न पूछो भारती। आज के युग के सिद्धांत, वह भी एक पक्का सभावादी है।

सभावादी, भारती ने आश्चर्य से पूछा।

हाँ सभावादी भारती, आश्चर्य क्या है इसमें। भारत विभा-

जन के पश्चात लाखों भारतवासियों के मस्तिष्क में साम्प्रदायिकता का दूषित विचार भर गया है आरती।

कुमारेश बाबू, मैं अभी तक यह नहीं समझ पायी कि इन लोगों की माँग क्या है।

माँग कुछ नहीं आरती। पथ की विभिन्नता के कारण माँगों में भी विभिन्नता आगयी है। जातीय संगठन पर विश्वास रखते हुए भविष्य में यह विश्वबन्धुत्व की भावना रखते हैं।

जातीय संगठन में विश्वबन्धुत्व की भावना, कैसे हो सकती है कुमारेश बाबू।

हो या न हो। पर वे लोग विश्वास रखते हैं। वे भारत भूमि को हिन्दुओं की जन्मभूमि मानते हैं। हिन्दुस्तान में हिन्दू सभ्यता प्राचीन है एवं हिन्दुओं का बहुमत है, इस कारण राजनीति में अन्य जातियों को उनकी हैसियत से अधिक सुविधा नहीं देना चाहिए। धर्म के साथ साथ जातीय भावना को हिन्दू भावना में परिवर्तित कर वे लोग ऊपर उठना चाहते हैं।

यह क्या सफल हो सकते हैं कुमारेश बाबू।

हो या न हो यह ईश्वर जाने, पर इतना विश्वास के साथ कहता हूँ कि धर्म के नारे के साथ-साथ इसकी शक्ति बढ़ेगी।

हिन्दू मुसलमान की भावना पैदा करना ऐसी सम्प्रदायिक संस्थाओं का ही काम है आरती, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा की आवश्यकता इस युग में नहीं है यह यदि बढ़ती रही तो

जातीय भावना इतनी गहरी हो जायगी कि हिन्दू मुसलमान मात्र से और मुसलमान हिन्दू मात्र से घृणा करने लगेगा।

भारती, हूँ कर रह गयी।

बातों के ताँते के साथ-साथ कुमारेश घण्टों भारती से बातें करता रहा फिर शाम को आने का स्मरण दिला, क्षमा माँग घर की ओर चल पड़ा।

२१

विवाह के दिन पास आते जा रहे थे। कुमारेश के हृदय में प्रेम और उल्लास की छाया प्रतिदिन बढ़ती जाती थी। भारती और अर्चना के साथ-साथ रहने के कारण, कुमारेश भी भारती के निकट आ गया था। समय बीत रहा था, और उसके साथ-साथ कुमारेश का नित्य प्रति दायित्व बढ़ता जा हरा था।

विवाह का केवल डेढ़ माह था। लाला जी के मुख पर एक उल्लास के साथ-साथ उदासी भी छायी हुयी थी। कुछ ही दिनों बाद उसकी अर्चना उससे बिछुड़ कर दूर चली जायेगी।

कुमारेश विवाह के उल्लास द्वारा पिछली समस्त बातों को भुला देना चाहता था, पर जब वह दिल्ली की सड़कों से गुजरता तब फिर उसको बीती बातें एक-एक कर याद आ जातीं।

अब दिल्ली पूर्णतया शांत हो चुकी थी। प्रतिकार और प्रतिशोध में उसने जो कुछ उगला था, वह दुहराने की आवश्यकता नहीं। प्रतिशोध की भावना ने अत्याचार कराया प्रतिकार की भावना ने शांति भंग करायी। मानवता के नारे में दानवता सा कार्य किया गया। प्रतिकार, प्रतिशोध की भावना जो पिछले महीनों लोगों के मस्तिस्कों में ठूसी गयी थी, उसका परिणाम, दिल्ली के दंगे के रूप में परणित हुआ।

हिन्दुओं ने मुसलमानों को मारा, मुसलमानों ने हिन्दू को। भ्रातृ-व्यवहार छोड़ सम्प्रदायिकता के हथकंडों द्वारा, मुसलमान, हिन्दू का और हिन्दू मुसलमान का शत्रु बन गया। दिल्ली का दंगा भी भारत पर अभिशाप बनकर आया था, पर बापू की अमर वाणी ने उसे शीघ्र शांत कर दिया था।

कुमारेश का ध्यान जब-जब इस घटना पर आता था, तब-तब उसके सामने, सभा, लीग के नेताओं के चित्र नाचने लगते थे। उन्हीं के पुण्य प्रताप का फल आज असंख्य हिन्दू, मुसलमानों को मिला। धार्मिकता का रंग आज फल लाया। मानवता के पद को दानवता में परिवर्तित किया। पशुओं से भी नीच व्यवहार मानव ने मानव पर किया। स्त्री, कन्यायें, पुरुष सबको मौत के घाट उतारा गया। यह आज की मानवता थी, सभ्यता का प्रथम चिन्ह था। और युग-युग तक ये दंगे भारत के इतिहास में दुःख दर्द की कहानी बनकर चमकते रहेंगे। यह अभिशाप नहीं तो और क्या है।

इसी कारण जब-जब कुमारेश की दयाशंकर से भेंट होती, तो वह खिंचा खिंचा रहता। बीते युग के कारनामों को देख कर वह इन संस्थाओं से घृणा करने के साथ-साथ दूर भी रहने लगा था। वह ऐसी बातें नहीं सुनना चाहता था, जिससे उसको दुख और ग्लानि मिलती हो। दयाशंकर से बातें करते समय जहाँ तक उससे बनता था, वह राजनीति पर बहस नहीं करता। वह जानता था कि तर्क द्वारा आग भड़केगी, शांति न हो सकेगी।

पर जब दयाशंकर ने आज उससे पूछा—कुमारेश बाबू आपने देख लिया, प्रतिशोध की अग्नि कैसी होती है।

तो कुमारेश से न रहा गया, उसने कहा—दयाशंकर जी, हाँ मैंने, प्रतिशोध की ज्वाला को देखा, वास्तव में बड़ी भयानक होती है। देखो न जरा सी हवा लगने पर ही वह न जाने क्या कर डालती है।

तो आप ठीक समझे हैं कुमारेश बाबू।

और साथ-साथ मैं यह भी समझ चुका हूँ, कि प्रतिशोध और प्रतिकार की भड़काने वाली संस्थायें भी कौन सी हैं।

क्या कहा आपने कुमारेश बाबू।

हाँ, आप ही दयाशंकरजी। दिल्ली की प्रतिक्षण बिगड़ती हुई परिस्थिति में आपने 'पंजाब डे' मनाया। आप आपके लोगों ने कस्बों में जाकर लोगों को उभाड़ा, उनमें बदला लेने की भावना डाली। आग भड़काई। फल देख कर आप कहते हैं देखा कुमारेश बाबू, प्रतिशोध की अग्नि कैसी होती है?

तो आपका मत है कि दिल्ली के दंगों में हिन्दुओं का ही केवल हाथ है।

दयाशंकर जी, मैं यह नहीं कहना चाहता की दिल्ली के दंगे हिन्दुओं ने कराये। ताली एक हाथ से नहीं बजती। मुसलमानों ने भी उपद्रव किया है, पर इसका परिणाम क्या हुआ मेरे भाई।

परिणाम मैं नहीं जानता कुमारेश, पर इतना याद रक्खो कि

होने वाली तलाशियों से यही ज्ञात हुआ था कि अंल्पसंख्यकों के पास उपद्रव मचाने के लिये पर्याप्त शस्त्र थे। यदि यह परिस्थिति इतनी शीघ्र साफ न हो गयी होती, तो दिल्ली की सुरक्षा खतरे में पड़ जाती।

खूब कहते हो दयाशंकर। एक तीर से दो शिकार खेलना खूब जानते हो। मैं जानता हूँ तुम लोगों ने क्या किया। मानवता के नाम दानवता को उभाड़ा। धर्म के नाम पर जाति को उभाड़ा, जातीय संगठन के नाम पर आपस में वैमनस्य का बीज बोया। बहुत कुछ किया आप लोगों ने। ऐसी देश की सेवा की है, जैसा कि शायद कोई भी संस्था कर पायी हो।

क्या व्यर्थ की बातें करते हो कुमारेश। बढ़िया रोकने के लिये बाँध की आवश्यकता पड़ती है, अन्यथा जल को हाहाकार करती हुयी लहरें लाखों गाँवों को बहा ले जाती हैं। हैज़ा से बचने के लिये टीके की आवश्यकता होती है, इसी प्रकार बढ़ते हुये वैमनस्य को दूर करने के लिये हम लोगों ने जातीय संगठन किया। अपना गौरव चिरस्थायी रखने के लिये पुरातन इतिहास को दुहराया। राम राज्य एवं मानवता का सन्देश देने के लिये भैरव नाद किया। गौरव, सभ्यता, मर्यादा की रक्षा हमारी ही संस्था कर सकती है।

हाँ खूब कर सकती है, तभी तो दिन-दहाड़े लोगों को भड़काया। प्रतिकार और प्रतिशोध के शब्दों को लाखों बार जोर २ से चिल्लाया। 'पंजाब डे' 'नोआखली डे' मना-मुनाकर हृदय में

साम्प्रदायिक विचारों को भरा। खूब रामराज्य एवं मानवता का संदेश दिया, खूब जातीय संगठन की पुष्टि की। याद रक्खो दयाशंकर दंगे मानवता के प्रथम शत्रु हैं। दंगा एक खाई है, वह खाई जोकि बन जाने पर कभी भी पाटी नहीं जा सकती। मानवता को सस्ती बनाना, लज्जा की बात है। अब भी समय है, मेरे भाई, प्रेम और एकता का संदेश घर-घर पहुँचा दो। अन्यथा, विहार, पंजाब, नोआखली ही क्या भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक प्रत्येक गाँव, शहर न बच सकेगा। दंगे की अग्नि लग जाने के पश्चात उससे छुटकारा पाना कठिन हो जायेगा। शान्ति और एकता की आवश्यकता है इस समय, प्रतिकार और प्रतिरोध की नहीं। भारत एक स्वतन्त्रता की माला पहने हुये विपदाओं के तट पर खड़ा है। स्वतन्त्रता का नवजात शिशु भारत है, इसको हमें धैर्य और सावधानी से पालना है। यह समय आपस में फूट का नहीं, वरन् एक हो जाने का है। यह युग एकता का है, विभिन्नता का नहीं। हमारी भारत माता एकता की भिक्षा माँग रही है, हमें एक होजाना चाहिये। हमारा युग प्रेम, एकता और शान्ति की प्रार्थना कर रहा है, उसे हमें निराश न करना चाहिये। हम एक होकर शक्तिशाली हो सकते हैं, अलग-अलग नहीं। आओ दयाशंकर तुम हमारे विपक्षी नहीं वरन् भाई हो।

पर कुमारेश भाई, यह एकता सम्भव कैसे।

सम्भव है, दयाशंकर जो। भारत के मुसलमानों में अब

इतनी शक्ति नहीं रह गयी कि वे स्वयं ही साम्प्रदायिक दंगों का सूत्रपात करें, हम यदि उनको न छेड़ें, हम लोग शान्तिपूर्वक रहें, तो वे कुछ न बोलेंगे। दबाव पड़ने पर तो छोटे से छोटा कीड़ा भी चोट करता है।

और उनकी देश भक्ति ?

देश-भक्ति इसकी क्यों चिन्ता करते हो। पुलिस तथा गुप्त-चर विभाग किस लिये है और देश-भक्ति उनको करनी ही पड़ेगी। वे भारत के नागरिक हैं, उन्हें भारतीय विधान के अनुसार चलना होगा। जो देशभक्त अथवा राजभक्त न होगा, उसको भारत की सीमा में रहने का अधिकार न मिल सकेगा। भारत में उसके लिये कोई भी स्थान नहीं होगा।

कुमारेश बाबू आप भूल पर हैं। आज भारत का मुसलमान एक है, पर कल सहायता पाकर फिर बिगड़ खड़ा होगा।

बिगड़ कैसे खड़ा होगा मेरे भाई। पंचमार्गी शक्तियों को कुचलने के लिये पुलिस और फ़ौज होती है। जो भारत के प्रति विद्रोह करेगा, उसको सरकार उचित दण्ड देगी।

हमें दुःख है कुमारेश, भारत के थोड़े से मुसलमानों के लिये हम अपने अधिकारों का बलिदान कर दें। भारत माँ के खंडन के उपरान्त भी हमें दबकर रहना है। क्या होने वाला है।

दब कर नहीं दयाशंकर जी यह राजनीत है। धार्मिकता के नाम पर कोई राज्य न टिक सका है और न टिक सकेगा। जिसने धर्म प्रथम और राजनीत को द्वितीय स्थान दिया वह

नष्ट हो गया। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण औरंगजेब है, वह धार्मिक ईंट की नींव पर राज्य का महल खड़ा करना चाहता था, नष्ट हो गया। मानवता को कुचलकर उसने धर्म को बढ़ाना चाहा, क्या परिणाम हुआ। शिवाजी ने भी हिन्दू राज्य में धर्म को प्रथम स्थान दिया पर अंत में असफल रहे। धर्म-युद्ध द्वारा राजनीति में कोई सफल हो पाया है? प्रताप ने प्रयत्न किया, असफल रहा। प्रेम और एक्य का संदेश लेकर जो चला वह सफल रहा। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण सम्राट (महान) अशोक और अकबर था। और—

बात काटते हुए दयाशंकर बोला—क्षमा करना भाई, औरंगजेब और शिवाजी में अंतर था। औरंगजेब धर्मान्ध था, अत्याचारी और निर्मोही था, वह इसलाम को बढ़ाने में ही सब कुछ आनंद का अनुभव करता था। शिवाजी महराज केवल जनता को औरंगजेग के चंगुल में फसाने से निकालना चाहते थे। वह हिन्दुत्व के पुजारी अवश्य थे पर हिन्दुत्व की भावना में वह औरंगजेब की भांति नीच न थे। इतिहास कभी भी यह नहीं बतलाता है कि शिवाजी महाराज के राज्य में कोई भी मुसलाम आदमी या अबला सतायी गयी हो। शिवाजी औरंगजेब की भांति भावना में बह जाना नहीं जानते थे, उन्हें अपने कर्त्तव्य का भी ज्ञान था गौहर वालो कथा आज भी इतिहास में सुनहले अक्षरों में चमक रही है। राणा, शिवा यह हमारे आदर्श थे, इनका उद्देश्य अत्याचार करना नहीं वरन

अत्याचारियों द्वारा पीड़ित जनता को छुड़ाना था। वे लोग औरंगजेब की भांति किसी प्रकार का अन्य धर्मावलम्बियों पर अत्याचार नहीं करते थे।

कुमारेश ने समझाते हुये कहा —दयाशंकर जी मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है, जोकि आप लगा रहे है। मैंने तो केवल उदाहरण दिया था।

तो जरा सोचसमझ कर उदाहरण दिया कीजिये। उदाहरण देते समय का ध्यान दिया कीजिये। आप समता करते हैं औरंगजेब और शिवाजी की, याद रखिये कुमारेश बाबू हिन्दू पतित नहीं होता। अपना धर्म स्वधर्म की रक्षा करना सिखाता है, दूसरे धर्मों पर अत्याचार नहीं। हिन्दुओं में दान, प्रेम और वीरता का एक साथ, साथ रहता है। याद न हो तो पृथ्वीराज का इतिहास पढ़ देखो।

तो दयाशंकर जी आप प्रतिकार और प्रतिरोध की बातें क्यों करते हैं। दूसरों को घृणा की दृष्टि से देखना क्या हिन्दू धर्म सिखलाता है।

हम किसी से घृणा नहीं करते कुमारेश बाबू। आप प्रतिकार और प्रतिरोध की बातें करते हैं, उसके उत्तर में मैं केवल इतना कहता हूँ कि बदला लेने की भावना साधारणतया प्रत्येक जीव में होती है।

उसी को तो जीतना है।

जीतना, कैसी बातें करते हो कुमारेश, यदि ईश्वर प्रदत्त

नियम प्रतिकार वाला हट जाय और लोग इसको जीत लें तो मानव मानव न रहे देवता हो जाय।

तभी तो महात्मा बुद्ध और गांधी देवता हैं।

कुमारेश बाबू आत्मा और परमात्मा को, ब्रह्म को समझने वाले व्यक्ति कम ही होते हैं। सब ब्रह्म की प्राप्ति नहीं कर पाते क्योंकि वह कठिन साधन है, व्रत है। इसी प्रकार प्रतिकार की भावना निकालना भी एक कठिन व्रत है।

मुझे आश्चर्य होता है कि आप जब मानते हैं कि कुछ व्यक्ति व्रत और साधना द्वारा लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार हम लोग भी धीरे धीरे इस पथ पर चलें, तो कुछ बुराइयाँ दूर हो सकती हैं। कल्पना करो दयाशंकर यदि हम प्रतिकार और क्रोध, लोभ की भावना छोड़ दें तो भारत स्वर्ग से भी अधिक सुन्दर बन जाय।

पर कुमारेश भाई यह कल्पना; कल्पना ही बनकर रह जायेगी सत्य असम्भव है।

क्यों ?

दयाशंकर उठता हुआ बोला—क्यों का कोई अन्तर नहीं कुमारेश जी, समझने की बात है।

२२

आज सुबह भारती जल्दी ही उठ पड़ी थी, आज ही तो बरात आयेगी। उस का मन प्रसन्नता से फूला नहीं समा पा रहा था। भारती ने उठते ही प्रभाती गाना शुरू कर दिया।

आज अर्चना रात्रि को वैदिक रीतों द्वारा शेखर को सौंप दी जायेगी, अर्थात आज हिन्दू रीतानुसार शेखर और अर्चना पति पत्नी बनेंगे। भारती और उसकी माँ लालाजी के विशेष आग्रह पर घर में ही टिकी थी।

भोर होने के साथ साथ घर में कोलाहल बढ़ता जाता था। लालाजी के दूर एवं पास के, सम्बन्धी आ गये थे। घर खचाखच भरा था। बाहर शहनाई बज रही थी। वन्दनवारों से सजा हुआ घर मूक भाषा में किसी विशेष उत्सव की सूचना दे रहा था।

भारती की प्रभाती, प्रभात होते होते समाप्त हो गयी थी। उसे ऐसा भास हो रहा था, कि मानो उसके पंख लग गये हों और वह हवा में उड़ रही हो। अर्चना से कोई रक्त का सम्बन्ध न होते हुए भी अर्चना उसके जीवन में बहन का सा पद रखती थी भारती की मां भी बुजुर्गों की भांति कार्य में जुटी थी।

आज घर का कोलाहल, बड़ा ही मंगल सूचक था। विवाह के साथ साथ अपने समाज में व्यवहारिकता का भी ध्यान रक्खा जाता था।

चाय पीते हुए कुमारेश ने कहा—भारती आज बड़ी खुश दृष्टिगोचर हो रही हो।

खुशी की तो बात ही है कुमारेश जी।

हां भारती तुम शेखर से मिलकर बड़ी खुशी होगी। बड़े मूल्य का आदमी है वह। कलाकार, भावुक, और साथ साथ हिन्दुत्व का कट्टर पक्षपाती, पक्का सभावादी है वह।

अर्चना सिमटती जा रही थी।

तब तो ठीक है कुमारेश बाबू पति सभावादी और पत्नी भी उन्हीं विचारों की।

अब अर्चना का मुँह खुला वह भारती पर कटाक्ष करती हुई बोली—आप साम्यवादी और आपको पति सम्भवतः अहिंसावादी मिलेगा।

कुमारेश समझ गया था कि यह बात किसके ऊपर लक्ष्य करके कही गयी थी।

भारती का मुख मंडल लज्जा से जगमगा उठा। क्यों क्या शरमा गई भारती?

हटो अर्चना हमें ऐसा मजाक अच्छा नहीं लगता।

जब मैं कुछ कह देती हूँ तब अच्छा नहीं लगता, और जो तू बकती रहती है वह सब अच्छा लगता है न!

अजी छोड़ो इन बातों को। चाय पीता हुआ कुमारेश बोला

वाह भैय्या क्यों छोड़ूं मैं, तुम भी भारती का पक्ष लेने लगे।

अच्छा भारती जाने दो इन बातों का, जरा सुनो तो।

क्या है कुमार बाबू।

सभावादी शेखर है, साम्यवादी तुम, सिद्धान्तो में महान अंतर है। तुम और तुम्हारे ओजा को तर्क से हो छुटकारा न मिल पाया करेगा।

वाह कुमारेश बाबू आपने खूब कहो।

सच भारतो।

हाँ।

भारती जब तुम शेखर को देखोगी, तो अनायास ही कह उठोगी, कितना सुन्दर मुखड़ा है। सच मानो भारती उसके एक एक अंग से कलात्मक संदेश टपकता है। भावुक होने के साथ साथ कुशल चित्रकार, ऐसा चित्रकार जो तूलिका से, भावनाओं में बहने वाले दृश्यों का चित्र खींच सकता है। इस समय यदि वह होता तो वह भी किसी के हृदय के अंदर मनोभावों को टटोल कर तूलिका द्वारा सन्मुख रख देता, सच मानों भारती !

अर्चना सर झुकाये सब सुन और समझ रही थी, बात बढ़ते ही वह उठ खड़ी हुयो और चीख कर बोला—भैय्या मुझे यह बात पसंद नहीं।

आखिर क्यों ? भारती मुँह बनाकर बोली।

कमरे से निकलते हुए अर्चना बोली—याद रख भारती

समय आयेगा तो ऐसा बनाऊगी कि याद आ जायगा तुझे, कि मैं चुप रहने वाली अर्चना, समय पर कैसा बनाती हैं।

भारती ने पूछा—सच।

नहीं तो और क्या झूठ।

कुमारेश ध्यान पूर्वक इन दोनो का वर्तालाप सुन रहा था। लाला जी ने कमरे में घुसते हुये कहा—अरे कुमार अभी तक तुम चाय तक न पी सके, जल्दी करो चाय शीघ्रता से पीकर देख आवो जनवासा साफ हो गया है अथवा नहीं।

कप रखते हुये कुमारेश बोला—अच्छा लाला जी मैं चाय पी चुका हूँ, बस जाता हूँ।

कुमारेश जब जनवासे की ओर चला तो उसके हृदय में भारती का चित्र वार वार खिंच जाता था। भारती जब प्रथम बार कुमारेश के परिचय में आयी थी, उस समय कुमारेश ने उसके प्रति शीलता का लौकिक व्यवहार किया था। आज उसे ज्ञान होता था कि वास्तव में कोई ऐसी आकर्षण की वस्तु है जोकि कुमारेश को बरबस भारती की ओर लिये जा रही है। भारती में कुमारेश अब एक नया अनुभव करता था। भारती के समीप कुमारेश बढ़ता गया था, उसी के कारण आजकल यदि भारती उसके नेत्रों से दूर होती थी तो कुमारेश को ऐसा भास होता था, मानों उसको कोई प्रिय वस्तु खो गयी। जितने समय भारती आफिस में रहती थी, उतना समय कुमारेश का बड़ी बेचैनी से कटता था।

भारती कुमारेश के रग रग में समा गयी थी। कुमारेश अब भारती को भारती के रूप में न देखता था, वरन किसी अन्य रूप में।

जब जब कुमारेश भारती के बारे में सोचता, तब तब उसके अंतरआत्मा से आवाज निकलती, भारती कुमारेश के जीवन के लिये आवश्यक है। तो क्या भारती से परिचय प्रगाढ़ मित्रता, श्रद्धा, सेवा से प्रेम में जा पहुँचा है? पर प्रेम भारती से, लाख प्रयत्न करने पर भी कुमारेश सोच न पाता।

कुमारेश को बहुत पहिले से ज्ञात हो गया था कि वह कुछ खोता जा रहा है पर क्या स्वयं प्रयत्न करने पर समझ न पाता था। भारती को देखते ही उसका मन बरबस डोल उठता था। अंतरात्मा से प्रतिक्षण आवाज आती थी कि तू किसी ओर बरबस बढ़ रहा है। कुमारेश समझता हुआ भी चुप रहता।

जनवासा को देख कुमारेश जब घर लौटा तब उसका हृदय विक्षिप्त सा था। आज प्रथम बार अंतरआत्मा ने कुमारेश से कहा था कि कुमारेश तेरा प्रेम भारती से है तू भारती को चाहता है भारती से तेरा स्नेह, प्रेम सब कुछ है।

कुमारेश कुछ अनुभव करता था कुछ नहीं। भारती की ओर दृष्टि उठाते ही उसकी नजरें झुक जाती थीं। भारती से प्रेम के विचार की पुष्टि होते ही वह भारती से बातें करने में भी सकुचाता था।

शाम एक खुशी का संदेशा लेकर आयी, बाजों के साथ साथ मोटरों की लम्बी कतार में बराती द्वाराचार के लिये आ रहे थे। लालाजी की एकमात्र पुत्री अर्चना का विवाह था, लालाजी ने कोई कसर उठा न रक्खी थी, घर दीपावली की भाँति जगमगा रहा था, छुटती हुई आतशबाजियाँ, बजते हुए बाजे, आती हुई बारात सब खुशी का संदेशा दे रही थी। द्वाराचार के समय भारती ने शेखर को देखा, वास्तव में सुन्दर है, भारती बुदबुदायी। द्वाराचार समाप्त होने के बाद शेखर को अन्दर बुला लिया गया।

आप हैं मिस भारती, अर्चना की सहेली।

और भारती आप हैं, मि० शेखर आप के जीजा। परिचय कराकर कुमारेश एक कुर्सी पर बैठ गया।

शेखर ने कुमारेश की ओर देखते हुये कहा—कहो कुमारेश कैसे हाल चाल हैं।

शेखर बाबू आप मुझ से हाल चाल पूछकर क्या कीजियेगा मैं ठहरा अहिंसावादी, यदि आपको बातें करनी हैं तो भारती से कीजिये?

शेखर ने आश्चर्य से पूछा—क्यों?

क्यों का कोई प्रश्न नहीं शेखर आप हैं समावादी और भारती है साम्यवादी, आप दोनों की बहसों में आनन्द आयेगा। मैं ठहरा एक बुजदिल कायर शांति का पक्षपाती, मेरे पास गरम खून कहाँ जिससे कि मैं आपसे जोरदार बहस कर सकूँ।

शेखर ने भारती की ओर घूमते हुये कहा—तो आप साम्यवादी दल की सदस्या हैं।

जी। क्या आपको कुछ आश्चर्य हुआ।

जी आश्चर्य तो नही हाँ अचम्भा अवश्य हुआ।

क्यों ?

क्यों का कोई प्रश्न नहीं भारती, तुम्हारे विचार सुनकर कि तुम साम्यवादी दल की सदस्या हो, मुझे कुछ अजब सा लगा।

क्यों क्या आपके विचार मे साम्यवाद कोई पाप है क्या। पाप, पाप तो मैं नहीं कहता। समानता प्रत्येक चाहता है। पर इस साम्यवादी दल से मुझे चिढ़ है।

लालाजी ने बाहर से पुकारा अरे कुमार लगन मुहूर्त में अब विशेष देर नहीं है, जा, जरा पंडित जी को शीघ्रता से बुला ला।

जाता हूँ कुमारेश कहता हुआ उठ खड़ा हुआ। भारती की ओर देखते हुए कुमारेश ने कहा—भारती मैं जा रहा हूँ जीजा जी का ध्यान रखना कोई कष्ट न होने पावे इनको।

आप जाइये तो शेखर हँसता हुआ बोला।

भारती ने प्रश्न करते हुए कहा—आपको चिढ़ क्यों ?

चिढ़ की बातें करती हो भारती, सोचो तो भारत की स्थिति ऐसे समय में मिल मजदूरों, गरीबों का प्रश्न भारत के लिये हानिकारक है। देश को कपड़ा, लोहा अन्न आदि सब उपयोगी वस्तु चाहिये। गरीब मज़दूर का प्रश्न भारतमें अशांति का बीज बो रहा है, भारत की उद्योग स्थिति को ठीक

करने के लिये हड़ताल नहीं, काम चाहिये। आपकी पार्टी हर समय किसी न किसी रूप में बाधा डाले रहती है मेरी चिढ़ का मुख्य कारण यही है।

और आपकी संस्था सम्भवत: शांति स्थापित करती फिरती है।

मैं, मेरी संस्था। भारती मैं अपनी संस्था की बड़ाई करता नहीं फिरता हूँ, पर याद रक्खो कि हमारी संस्था सरकार के कार्यों में रोड़े नहीं अटकाती है वरन् सहायता देती है। हम जातीय संगठन के साथ-साथ विश्वबन्धुत्व पर विश्वास रखते हैं। हम प्रथम अपने को सबल बनाना चाहते हैं फिर दूसरे की चिन्ता करेंगे।

मानव धर्म पर आप नहीं चलते जीजाजी।

मानव धर्म पर, भारती क्या बातें करती हो आज के युग में मानव धर्म पर बात करना, मजाक करना है स्वार्थ भरे युग के साथ-साथ हमें भी स्वार्थी बनना है। ऐसे समय में अस्वार्थ की बातें करना मूर्खता है। प्रत्येक देश, प्रत्येक जाति, प्रत्येक धर्म आज अपनी उन्नति में प्रयत्नशील हैं ऐसे समय में हमें हिन्दू की सोचना है सब जातियों की नहीं, हिन्दी सोचनी है हिन्दुस्तानी नहीं। जब सारा संसार जातीयता की पुष्टि कर रहा है तो हम क्यों न करें। हमको सबल बनना है, निर्बल नहीं और सबल बनने का एक मात्र साधन अपना सारा ध्यान जाति पर केन्द्रित करना पर—

अच्छा शेखर बाबू चलिये वेदी पर बातें फिर हुआ करेंगी।

शेखर उठते हुए बोला—मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई भारती जो कि मुझे एक साम्यवादी तो मिला, मुझे अपने सिद्धांतों को समझाने और प्रतिपादन करने का अवसर तो मिलेगा एक साम्यवादी को यदि सभावादी में परिवर्तित किया जाय तब तो महत्व की बात है।

भारती बोली—भूल जाइये आप। एक समानता देखने वाला व्यक्ति, समानता के साथ साथ विश्वबन्धुत्व देख सकता है, अपने समाज में जातीय संगठन और संकीर्णता नहीं। साम्यवादी जीवन भर सभावादी अथवा साम्प्रदायवादी हो ही नहीं सकता।

यही तो देखना है।

वेदों के मंत्रों की ध्वनि के साथ शेखर के बढ़ते ही वैवाहिक कार्य प्रारम्भ हुआ। वेद मंत्रों की ध्वनि और हवन का उड़ता हुआ धुआं कुमारेश के मन में आनन्द भर रहा था।

दूर दीवाल का सहारा लिये हुए भारती भी विवाह देख रही थी। बन्दनवारों से सजे हुए मंडप के नीचे अर्चना और शेखर बैठे हैं। हिन्दूरीतानुसार वैवाहिक रस्में हो रही थी। भारती एक साम्यवादी दल की सदस्या होने के नाते हृदय में विचार कर थी कि आखिर इस लोक व्यवहार की क्या आवश्यकता, क्या यह सब आज के युग में उचित है।

२३

विवाह के सब कार्य सम्पन्न हो जाने के पश्चात् लालाजी ने संतोष की सांस ली। बारात जा चुकी थी, केवल वर बिदा के वास्ते रोक लिया गया था। लाला जी ने इस विवाह में जो कुछ दिया वह बतलाने की आवश्यकता नहीं। अर्थात एक पिता अपनी इकलौती संतान के लिए जो करता है, वही लाला जी ने किया।

कुमारेश ने भी इस विवाह में कोई कम उत्साह नहीं दिखाया। अपनी बहन अर्चना के वैवाहिक कार्यों में वह मशीन की भाँति काम करता रहा। विवाह के प्रबन्ध की सफलता का सारा श्रेय कुमारेश का ही था।

भारती और उसकी माँ अब भी लाला जी के आग्रह से रुकी हुयी थीं। भारती भी अर्चना को बिदा करने के उपरान्त जाना चाहती थी। भारती इन दिनों लाला जी के घर से ही कुछ देर के लिए आफिस जाया करती थी।

भारती और शेखर का वादाविवाद कभी पराकाष्ठा पर पहुँच जाता था, और दलों के नेताओं के विषय में व्यक्तिगत आक्षेप भी होने लगते थे।

कुमारेश भी शेखर से विवाद करता था, पर जरा सम्हाल

कर। उसे साम्यवादी और सभावादी की बहस से बड़ा आनन्द आता था। कुमारेश को भारती के ज्ञान की पराकाष्ठा का अनुभव शेखर से बातें करने पर ही ज्ञात हो पाया था।

कुमारेश अब समझ पाया था, कि भारती ज्ञान का भंडार है।

वास्तव में भारती का अध्ययन काफी विस्तृत था। यहाँ तक कि उसे किताबी कीड़ा तक कहा जा सकता है। उसने अपने दल के इतिहास की मुख्य मुख्य पुस्तकों को तो पढ़ा ही था, उसके साथ साथ उसने अन्य विरोधी संस्थाओं के इतिहास का भी अध्ययन किया था।

कुमारेश को भारती की एक मधुर मुस्कान ही अब उसके शरीर को विचित्र वातावरण में छोड़ आती थी। वह भारती से अपने हृदय की बात कहना चाहता था, पर जब वह कहने को बढ़ता तो कोई उसकी जबान पकड़ लेता और कुमारेश के हृदय की बात हृदय तक ही सीमित रह जाती। कुमारेश की अंतरआत्मा पुकार पुकार कर कहती कि कुमारेश तुझे भारती की आवश्यकता है भारती की आवश्यकता है. वह इस आवाज को सुनकर विह्वल तो अवश्य हो जाता पर कह देने की शक्ति उसके मुख से लोप हो जाती थी। भारती, भारती का नाम लेते ही उसके हृदय में एक गुदगुदी भरा वातावरण छा जाता वह चाहता कि वह दौड़कर जाय और भारती से कहे कि वह तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता। वह यह करने

का प्रयत्न करता तो मानों कोई शक्ति उसके पैरों में बेड़ी डाल देती।

आज जब कुमोरेश सो कर उठा तो उसका मन विक्षिप्त था। सिर में दर्द के साथ साथ थकावट के कारण उसका बदन चूर २ हो रहा था। बिस्तर से उठने की इच्छा न होते हुये भी कुमारेश उठ पड़ा। मुँह हाथ धोकर जब वह बैठक में पहुँचा तब लालाजी, शेखर और भारती बैठे चाय पी रहे थे। कुमारेश के मुख पर उदासी देखकर लालाजी ने पूछा—कुमार भैय्या, आज सुस्त क्यों हो।

क्या बताऊँ लालाजी आज सो कर उठा हूँ, तब से सर भन्ना रहा है। सारा बदन भी थकावट से चूर २ है। शेखर ने कुमारेश के माथे पर हाथ रखते हुये कहा—और साथ साथ में थोड़ी हरारत भी।

हाँ, कुमारेश ने उत्तर दिया।

लालाजी ने कप बढ़ाते हुये कहा—लो कुमार एक कप चाय पीकर कमरे में जाकर पड़ रहो। काम के कारण थकावट और हरारत हो आयी है। सो लेने से सब शाम तक ठीक हो जायगा।

जी यही करूँगा।

कुमारेश चाय पीकर उठता हुआ बोला—अच्छा, शेखर बाबू मैं तो लेटने चला, शाम को मिलूँगा। कह कर कुमारेश भारती की ओर देख कमरे की ओर चला गया।

कमरे में लेटते ही अर्चना आ गयी। कुमारेश कुछ देर अर्चना से बातें करता रहा, मर दर्द के बढ़ने के कारण फिर वह आँख मूँद कर पड़ रहा।

कुमारेश जब दोपहर में सो कर उठा, तब भी उसका सर जोरों से भन्ना रहा था। जगने के पश्चात् उसने भारती को पास की कु ी पर बैठे देखा।

भारती।

क्या है कुमा रेश बा ? जग गये आप ? अब दर्द कैसा है ?

सर अभी तक जोरों से भन्ना रहा है।

जी। आपने काम भी तो विवाह में कितना किया, क्षण-भर को भी नहीं आराम कि या। चौबिसों घंटे मशीन की तरह जटे रहे। मर आपका दर्द न करता तो क्या मेरा करता।

भारती, विचारो तो भला, ऐ से अवसर बार-बार आते हैं।

ऐसे अवसर बार-बार नहीं आ ते कुमार बा , फिर भी ऐसे समय में शरीर का भी तो ध्यान रक्खा जाता है।

कुमारेश आँख मूँद कर पड़ रहा।

सर पर हाथ फेरते हुये भारती बोली— क्या बहुत दर्द हो रहा है कुमार।

स्पर्श से चौंकते हुये कुमारेश बोला—हाँ भार ती, इस दर्द मारे तो मैं परेशान हूँ।

ऐस्प्रो खाइयेगा।

ऐस्प्रो नहीं भारती, इससे दर्द ठीक न होगा।

हाथ उठाती हुयी भारती बोली—नहीं-नहीं आप एक गोली अवश्य खा लीजिये, कुछ तो आराम होगा ही। यह कह कर भारती गोली लेने चली गयी।

आह क्या हो रहा है मेरे जीवन में, कुमारेश चीख पड़ा। भारती आह आखिर उसके प्रति मेरा आकर्षण क्यों ढल पड़ा। स्पर्श मधुर स्पर्श ने कुमारेश को विह्वल बना दिया था। भारती ओह तुझ में क्या जादू है जो तू मेरे ऊपर प्रतिक्षण छाती जाती है।

लीजिये कुमार बाबू गोली।

लाओ भारती कहता हुआ कुमारेश बैठ गया।

पानी के साथ गोली निगलते हुये कुमारेश ने कहा—भारती आखिर क्यों तुम हमारी चिंता करती हो।

चिंता किस बात की कुमार बाबू आप ही ने तो कहा था कि सेवा करना मानवधर्म है। फिर आपने भी मेरे लिये क्या नहीं किया। दिल्ली की बिगड़ी हुयी परिस्थिति में आपने किसी भी चिंता को मन में न लाकर जो सेवा की वह क्या भूली जा सकती है।

कुमारेश आँखें बन्द किये हुये बोला—तो भारती सम्भवतः तुम बदला चुका रही हो।

बदला कैसा कुमार, आपको तकलीफ है, मैं यदि कुछ देर आपके पास बैठ जाऊँ तो यह कोई सेवा नहीं।

कितनी अच्छी हो भारती।

अच्छी और बुरी। कोई नहीं हूँ मैं।

भारती की ओर देखते हुये कुमारेश अनमयस्क भाव से बोला—सच मानो भारती, तुम्हें देखकर मुझे ऐसा भास होता है, मानो मैंने संसार की उच्चतम वस्तु को प्राप्त कर लिया है। तुमने मेरे जीवन में एक नई आस्था का प्रतिपादन कराया है।

वह क्या कुमार बाबू?

चंचल मन को समझाना कोई हँसी खेल नहीं; शरीर और आत्मा पूर्णतया मानव अपने अधिकार में नहीं रख सकता, वह किसी दूसरे के अधीन होता है।

कहाँ की फिलासफी झाड़ रहे हैं कुमार बाबू।

'फिलास्फी' कहीं की नहीं भारती। संसार का सत्य कह रहा हूँ कटु सत्य। जीवन की परिभाषा प्रत्येक ने किसी न किसी रूप में अवश्य दी है, कोई जीवन को अमूल्य समझता है, कोई निरर्थक और नाशवान, कोई पानी का बुलबुला समझता है, तो कोई रंगमंच सा। भारती जीवन की परिभाषा सत्य होते हुये भिन्न है। मैं तुममें जीवन देख सकता हूँ, और सम्भव है कि तुम मुझ में न देख सकती हो।

आप क्यों व्यर्थ की बातें करके सर का दर्द बढ़ा रहे हैं। आपको चुप से लेटे रहना चाहिये।

भारती यह कोई निरर्थक बात नहीं, वरन काम की है। तुम समझने का प्रयत्न करो तो तुम्हें सब कुछ ज्ञात हो जायेगा।

रहने दीजिये कुमार बाबू इन बातों को। मुझे समझने की आवश्यकता नहीं, मेरा जीवन जो इस समय है, उसी में मैं प्रसन्न हूँ। मुझे बढ़ाने की आवश्यकता नहीं।

कुमारेश ने उत्तेजित होकर भारती का हाथ पकड़ लिया और बोला—भारती अभी तुम्हें आवश्यकता नहीं, पर एक दिन आयेगा जब तुम यह अनुभव करोगी कि कुमारेश जो कुछ कहता था ठीक था। कुमारेश सत्य चाहता है, जीवन का मधुर प्रेम सत्य के साथ।

भारती ने हाथ छुड़ाते हुए कहा—मैं नहीं समझी कुमार बाबू।

कुमारेश विकलता के साथ बोला—भारती मुझे भय है कि मैं पुरुष होने के नाते सब कुछ कह देता हूँ और तुम नारी होने के कारण उत्तर नहीं दे पाती हो।

कुमार बाबू मुझे कोई उत्तर नहीं देना है।

तब तुम क्या समझती हो भारती।

कुछ समझती हूँ और कुछ नहीं। जितना समझती हूँ उसे अधिक समझने की मुझे इच्छा भी नहीं है और जो कुछ नहीं समझती, उसके जानने के लिए मेरे हृदय में कोई आकर्षण भी नहीं।

भारती यह क्या गोरख धंधा की बातें करती हो।

गोरख धंधा नहीं कुमार यह भी सत्य है।

तो मेरे प्रश्न का उत्तर भारती।

भारती ने मुस्कराते हुये कहा—कुमार आपने मुझसे कोई प्रश्न नहीं किया।

कुमारेश ने बैठते हुये कहा—यह सब क्या मामला है।

कुछ नहीं कुमार बाबू आप लेट जाइये।

कुमारेश निरुत्तर हो गया।

पत्रिका हाथ में लेते हुये भारती ने कहा—कुमार बाबू अब आप चुपचाप पड़ रहिये मैं भी जा रही हूँ, मुझे बैठे बैठे काफी देर हो गयी है।

कहां जाओगी भारती। सब लोग कहाँ हैं?

कमरे में जाऊँगी कुमार बाबू और कल अर्चना को विदा कर अपने घर।

क्या करोगी कमरे में जाकर भारती, यहीं बैठो सब लोग आराम कर रहे होंगे।

मैं क्या करूँ बैठ कर कुमार मुझे आपकी 'फिलासफी' तो सुनना नहीं।

फिलासफी नहीं पर बैठो तो।

क्यों?

मुझे तुम्हारा अपने पास बैठना अच्छा लगता है।

तो, आप चुप रहिये मैं पत्रिका पढ़ती हूँ।

कुमारेश कुछ देर चुपचाप बैठा रहा फिर एकाएक भारती से बोल पड़ा—भारती।

क्या है कुमार?

प्यास लगी है।

जी पानी, अभी लाती हूँ।

ओह क्या हो रहा है कुमारेश को, लाख प्रयत्न करने पर वह समझ नहीं पा रहा है।

पानी।

चिन्तन से लीन होता हुआ कुमारेश बोला—जी, आप ले आईं पानी।

जी।

बड़ा कष्ट किया आपने।

फिर वही बातें कुमार।

अच्छा कष्ट नहीं मानता, सेवा की है आपने। बैठिये ना।

नहीं कुमार, मैं अब जा रही हूँ, अर्चना जग गयी है, अकेली कमरे में पड़ी है।

तो उसे भी यहाँ बुला लाओ भारती।

नहीं अब कृपया आप लेट जाइये और आराम कीजिये।

भारती जब तक कमरे से बाहर न निकल गयी तब तक कुमारेश उसे एकटक देखता रहा।

भारती एक साम्यवादी दल की सदस्या है और मैं, मैं एक अहिंसावादी, कितना अन्तर है हम दोनों में। ऊह, इसमें क्या होता है। भारती सर्वगुण सम्पन्न है। पर मैं, मैं क्या सोचता हूँ। ऊँह मुझे भारती की आवश्यकता है, भारती को, कुमारेश बुदबुदाया।

२४

अर्चना के विदा होजाने के पश्चात भारती उसी शाम को अपनी माँ के साथ घर चली आयी थी । भारती जब लाला जी के घर से चली थी, तब उसका चित्त व्याकुल था, वह कुमारेश से चलते समय कुछ बातें करना चाहती थी पर उसे समय न मिल सका था ।

भारती भी अब अपने जीवन में कुछ नवीनता का अनुभव करती थी । उसके पिछले जीवन तथा आज के जीवन में महान् अन्तर आगया था । भारती ने कुमारेश को जिस दिन से देखा था, उसी दिन से उसके जीवन में परिवर्तन का श्रीगणेश हुआ था । परिवर्तन के साथ-साथ उसे कभी-कभी यह भी भास होता था, कि उसका जीवन पहिले से अधिक आनन्दप्रद बन गया हो ।

बीमारी में ही भारती कुमारेश को पूर्णतया पहचान सकी थी । कुमारेश की निष्काम सेवा ने उसको विह्वल बना दिया था । साम्यवादी दल की सदस्या होते हुये एक विपक्षी सिद्धान्त वाले, एक अहिंसावादी व्यक्ति से उसको सहानुभूति थी । साथ-साथ भारती की सहानुभूति श्रद्धा और आकर्षण में पहुँच गयी थी ।

इसी कारण जब उस दिन कुमारेश ने कहा था कि भारती

तुम कितनी अच्छी हो, वह मन ही मन प्रसन्नता से डोल उठी थी। कुमारेश की उस दिन की अप्रत्यक्ष बातें वह समझती हुयी भी चुप रही थी। आज उसे भास होरहा था कि वास्तव में कमारेश की उसको आवश्यकता है।

प्रेम की परिभाषा क्या है? उसको आज तक कोई भी ठीक प्रकार से समझा न पाया है। कोई सहानुभूति और श्रद्धा के उपरान्त प्रेम को स्थान देता है; तो केवल सहानुभूति और श्रद्धा को छोड़कर प्रेम का केवल आकर्षण तक ही सीमित रखता है।

भारती का परिस्थितियों के साथ-साथ प्रत्यक्ष रूप से ज्ञात होगया था कि कुमारेश उससे स्नेह रखता है और वह भी। वह यह भी जानती थी कि कुमारेश और वह भविष्य में साथ-साथ सफल हो सकेंगे तब भी वह कुछ प्रत्यक्ष रूप से कुछ कह न पाती थी।

दोनों को एक दूसरे से प्रेम था। दोनों, दोनों की आवश्यकता समझते थे। दोनों को ज्ञात था कि दोनों के घर का कोई भी व्यक्ति इसका विरोध न करेंगे पर दोनों चुप थे।

भारती अपनी माँ से भास पा चुकी थी कि उनको भी कुमारेश प्रिय है। वह कुमारेश के स्वजातीय होने के नाते अपना दामाद तो बनाना चाहती, पर धनाभाव के कारण उनका मुख चुप था। अर्चना को तो पहिले से ही ज्ञात हो गया था कि दोनों को एक दूसरे से स्नेह है। फिर विवाह की बात

नहीं चल पाती थी, इसमें भी आश्चर्य नहीं तो और क्या था।

इसका एकमात्र कारण मूक प्रेम था। दोनों एक दूसरे को चाहते थे, पर प्रत्यक्ष कहने की शक्ति किसी में भी नहीं थी। यह प्रेम बेल जो गत महीनों में प्रथम को कक्षाओं को पास करती हुयी इस स्थिति पर पहुँची थी, भ्रमात्मक थी। दोनों जानते हुये कि दोनों को एक दूसरे से आकर्षण है डरते थे कि हो सकता है हम लोगों की बात असत्य हो।

आज जब भारती पार्टी आफिस जा रही थी, तो रास्ते में कुमारेश मिल गया।

भारती ने आगे जाते हुये कहा—कुमार बाबू आप कहाँ जा रहे हैं।

ओ भारती तुम, जरा मैं विश्वविद्यालय तक जा रहा हूँ।

आप घर नहीं आते।

घर, कल ही तो तुम हमारे यहाँ से गयी हो।

तो क्या हुआ आज तो आना था।

अच्छा भारती शाम को आऊँगा।

अवश्य।

हाँ।

और कुमार बाबू आप को शाम का भोजन भी मेरे यहाँ करना होगा।

भोजन की तो नहीं कह सकता, पर आऊँगा अवश्य।

जी नहीं आप मेरा भी कहना नहीं मानेंगे कुमार बाबू।

भारती तुम केवल यह कहना कहती हो मैं तुम्हारे लिये कठिन से कठिन कार्य करने को तत्पर हूँ।

तो आप वादा कीजिये कि शाम को भोजन हमारे यहाँ ही करेंगे।

अच्छा भारती मैं वादा करता हूँ कि शाम का भोजन तुम्हारे पास करूँगा।

अच्छा आप अब जा सकते हैं।

धन्यवाद।

कुमारेश विश्वविद्यालय की ओर बढ़ता तो जा रहा था, पर उसके हृदय में भारती की मूर्ति विराजमान थी। आज उसने स्वयं आग्रह करके कुमारेश को भोजन के लिये बुलाया ओह भारती तू कितनी मधुर है।

विश्वविद्यालय में सारे दिन कुमारेश का मन न लगा। चौथे घंटे में वह रीडिंग रूम में बैठा हुआ पत्र देख रहा था कि दयाशंकर ने आकर कुमारेश को पुकारा।

आह दयाशंकर जी आप का घंटा खाली है क्या?

जी कुमारेश बाबू।

पढ़ाई कैसी चल रही है।

पढ़ाई तो अभी प्रारम्भ तक नहीं की।

हाँ भाई आप लोग नेता ठहरे, पढ़ाई का समय ही नहीं मिलता।

नहीं यह बात नहीं कुमारेश. आजकल पढने का मूड नही है।

क्या करते हैं आप आजकल।

आजकल तो कुमारेश मैं टेनिस खेलता हूँ।

तो आप नेतागीरी से छुट्टी लेना चाहते हैं।

नेतागीरी। भूल जाओ कुमारेश मैं नेता नहीं वरन हिन्दुत्व का सेवक हूँ। मानवता को जगाने के कारण कोई नेता नहीं हो जाता। हमारी संस्था में नेता नहीं कार्य-कर्ता होते हैं।

तब तो आप ठीक हैं। दयाशंकर।

ठीक हूँ या नहीं पर याद रखिये कुमारेश आप कृपया मेरी खिल्ली उड़ाने का प्रयत्न न किया करें। मैं भी एक विद्यार्थी हूँ, आप मुझे बेवकूफ बनाने का प्रयत्न न करें। मैं कोई अहिंसा वादी नहीं जो चुप चाप बैठा रहूँ, मजा चखा दूंगा आपको।

अरे दयाशंकर जी आप तो बहुत गरम हो गये।

गरम नहीं, व्यर्थ की बातें न किया कीजिये आप।

क्षमा करना दयाशंकर जी, मैं नहीं समझता था कि आप जरा सी बात पर बिगड़ उठेंगे।

बिगड़ना कैसा कुमारेश, आप मेरे मित्र हैं, हर समय मज़ाक पसंद नहीं।

ओह जाने दो इन बातों को।

शाम को जब कुमारेश भारती से मिला तब वह बहुत ही प्रसन्न दिखाई दे रही थी।

भारती को अकेले देखकर कुमारेश ने पूछा—क्यों भारती, मां कहाँ गयी हैं।

पड़ोस में गयी हैं कुमारेश, किसी का तिलक है। कह गयी हैं कि कुमारेश का ध्यान रखना।

अच्छा, आज बड़ी खुश नजर आ रही हो।

खुश न होऊँ तो क्या रोऊँ कुमार बाबू।

नहीं भारती तुम हँसो खूब हँसो जीवन भर हँसती रहो।

और आप भी प्रसन्न रहें।

मैं, मेरी तुम्हें क्या चिंता भारती।

आपके सुख में ही मेरा सुख है कुमार बाबू। सच भारती?

हाँ सच।

कुमारेश का मन डोल उठा। भारती ने अपने उद्गारों को निकाल कर रख दिया। आज कुमारेश वास्तविकता को पहचान पाया था।

भारती?

क्या है कुमार बाबू।

आज मैं प्रसन्न हूँ, बहुत प्रसन्न, जो तुम्हारी इच्छा हो माँग लो।

माँगूं?

हाँ।

आप सदैव ऐसी कृपा दृष्टि मुझ पर बनाये रहें।

क्या कहती हो भारती।

बस मेरी यही इच्छा है।

कुमारेश जब घर लौटा तो उसका हृदय प्रसन्नता से नाच

रहा था। भारती उसके जीवन में आना चाहती है, वह भारती के जीवन में जाना चाहता है। दोनों एक दूसरे में गुथ जाना चाहते हैं। कुमारेश भारती से प्रेम करता है, भारती उसके जीवन की प्रेम कहानी है, भारती उसकी बहार है।

अहिंसावादी साम्यवादी विचारों के दो मानने वाले आज मिलना चाहते हैं। दोनों एक दूसरे को ऐक्य के सूत्र में बँधा देना चाहते हैं।

कुमारेश आज प्रफुल्लित था। शंका समाधान हो चुकी थी। भारती उसकी है, वह भारती का होगा फिर भविष्य में, वह आनंद से विभोर हो उठता।

जब लालाजी को कुमारेश का विचार मालुम हुआ तो उन्होंने कुमारेश से कहा—कुमार भय्या मुझे कोई आपत्ति नहीं, मुझे तो प्रसन्नता है कि अर्चना के स्थान पर एक बहू आ रही है। तू भी कब तक एकाकी जीवन बितायेगा। भारती से तेरा महीनों का साथ है। तूही उसे विशेष समझ सकता है। यदि वह और उसकी माता यदि राजी है, तो मैं तुझे प्रसन्नता से आज्ञा देता हूँ।

कुमारेश को लाला जी से यही उत्तर की आशा थी। वह खुशी में झूम उठा।

जब दूसरे दिन भारती की माँ को यह समाचार मिला तो वह कुमारेश से कह उठी—भैय्या मेरे भाग जागे। मेरी इच्छा तो बहुत पहिले से थी, पर मैं धनाभाव के कारण कुछ कह

न पाती थी। आज मुझे सुनकर बड़ी 'सन्नता हुई कि तू भारती से विवाह करने को तैयार है। मैं शीघ्र से शीघ्र चाहती हूँ कि मुझे इस विवाह की चिंता से छुटकारा मिले। जब से भारती बड़ी हुई है विवाह की चिंता मुझे सता रही थी। आज तेरे मुख से यह बात सुनकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई। ईश्वर दोनों को जीवन भर सुखी बनाये रक्खे।

यह आपका आशीर्वाद है माँ और कुछ नहीं।

मेरा क्या आशीर्वाद बेटा, ईश्वर की माया है जोकि उसने इस दुखियारी की बात सुन ली।

२५

जब अर्चना को कुमारेश के विवाह का पत्र मिला तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। आरती और कुमारेश का विवाह, आश्चर्य के साथ साथ उसको अति खुशी भी हुई। आज उसका अनुमान सत्य निकला, पिछले दिनों के कुमारेश और आरती के व्यवहार ने उसे इस बात का पता दे दिया था कि दोनों में प्रेम है। पहली जनवरी को विवाह, और थोड़े ही दिन और शेष हैं।

अर्चना प्रसन्नता से पत्र लिये हुये शेखर के कमरे में घुसी, शेखर उस समय एक चित्र बनाने में सन्लग्न था। अर्चना ने शेखर को पुकारते हुये कहा—आपने कुछ सुना।

शेखर का ध्यान भंग न हुआ।

शेखर का बदन झकझोरते हुये अर्चना बोली—जरा सुनिये तो।

शेखर ने परेशान होते हुये कहा—अर्चना मुझे परेशान न करो, देखो तो कितने सुन्दर भाव उठ रहे हैं, बाद में आना।

पर यह बात तो बड़ी आवश्यक है।

चित्र बनाते हुये शेखर बोला—चाहे जितनी आवश्यक हो अर्चना पर मेरे लिये इस समय वह मूल्य नहीं रखती।

मूल्य क्यों नहीं रक्खेगो, आपको पता है कि कुमार भैय्या और भारती का विवाह इसी पहली जनवरी को होने जा रहा है।

विवाह शब्द सुनते ही शेखर चौंक उठा और बोला—अर्चना क्या कहा तुमने विवाह किसका।

कुमारेश और भारती का।

झूठ, मजाक करती हो।

मैं भला मजाक करूँगी आपसे, लीजिये यह पत्र बाबूजी का आया है, पढ़ लीजिये।

शेखर पत्र लेकर उसको एक सांस में पढ़ गया।

अर्चना बोली—अब आपको विश्वास हुआ।

विश्वास तो हुआ अर्चना, पर यह सब इतनी शीघ्र हो कैसे गया?

शीघ्रता की क्या बात। महीनों पहिले परिचय हुआ फिर अपने-अपने सिद्धान्तों पर तर्क, फिर भारती बीमार पड़ी, कुमारेश ने उसकी सेवा की, दोनों का परिचय सहानुभूति और श्रद्धा से निकल कर प्रेम में जा पहुँचा है, दोनों स्वजातीय थे विवाह तय होगया।

लेकिन मैं पूछता हूँ अर्चना इन दोनों का भविष्य कैसे निपटेगा।

क्यों?

क्यों का कोई प्रश्न नहीं। दो पृथक-पृथक सिद्धान्तों के

माननेवाले कैसे मिल सकेंगे, सारा समय पति-पत्नी का तर्क से ही व्यतीत होजाया करेगा।

नहीं ऐसा न होगा, किसी एक को झुकना पड़ेगा।

पर कौन झुकेगा।

वही जोकि अपने सिद्धान्तों की पुष्टि भली भाँति न कर सकेगा।

कुछ भी हो अर्चना विवाह का समाचार सुन कर मुझे जितनी प्रसन्नता हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। बाबूजी हम लोगों को किस तारीख को लिवाने आ रहे हैं।

२८ को लिखा है।

बड़ा सुन्दर है अर्चना। एक अहिंसावादी, साम्यवादी से विवाह कर रहा है।

जी।

अच्छा अर्चना आओ कल मैंने दो चित्र बनाये हैं उनको तुम्हें दिखाऊँ।

चलिये।

देखो अर्चना प्रथम चित्र मूक भाषा में क्या कह रहा है।

मैं नहीं समझ पा रही हूँ।

इसका भावार्थ समझ लो अर्चना फिर चित्र भली भाँति समझ जाओगी। सुनो।

गङ्गा के तट पर बसा हुया यह एक घर है, देखो कितना सुन्दर और सुहावना, और दूर से आती हुयी गंगा को विशाल

लहरों को देखो और फिर देखो उस घर के आदमियों को जो एकटक से गंगा की बढ़ती हुयी लहरों को देख रहे हैं, और दूर तुम्हें एक नैय्या थपेड़ों के बीच डूबती, उतराती, बल खाती हुयी किनारे को ओर आती दिखायी देगी।

मैं इसका अर्थ नहीं समझ पायी हूँ। अर्चना बोली।

अर्चना यह आज के भारत की परिस्थिति है। यह भारतवर्ष गंगा के तट पर घर के रूप में खड़ा है, बढ़ती हुयी गंगा की लहरें इसकी शत्रु हैं, और डूबती उतराती हुयी नाव भारत की आशा है। याद रक्खो अर्चना आज भारत में एकता और धार्मिकता की कमी है। धर्म के वास्तविक रूप को न समझने के कारण भारत में अक्सर दानवता, जलजला, बाढ़िया, काली आँधी का रूप धारण कर आती है। धर्म हमारा है अर्चना और वही हम लोगों को इस भूकम्प से दूर रख सकता है।

और दूसरा चित्र है बीते युग का। अपना गौरव, अपनी सभ्यता का प्रतीक।

सच कहते हैं आप।

हाँ अर्चना जहाँ तक मेरा अनुभव है, मैं सच ही कहता हूँ। मेरा सिद्धान्त यदि पक्का है, तो वह बढ़ेगा, अवश्य बढ़ेगा। हम लोग कोरी कल्पना के कबूतर उड़ाना नहीं जानते हैं, सत्य की बातें करते हैं।

मैं जानती हूँ नाथ।

हाँ अर्चना मैं भूल गया था कि कुमारेश और भारती का

विवाह होने जा रहा है, और परसों बाबूजी लिवाने भी आ रहे हैं।

जी हाँ।

अति सुन्दर है तुम सामान ठीक करो, और मैं पिताजी को चिट्ठी दे आऊँ।

जी हाँ, माता पिता की आज्ञा तो अवश्य चाहिये।

अच्छा मैं पिताजी के पास जाता हूँ। तुमको जो सामान ठीक करना हो ठीक कर लो।

आप जाइये भी। कल सारा दिन मिलेगा, कल ठीक कर लूंगी।

* * * *

भारती को जब बिदा कराकर कुमारेश घर ले गया तो द्वार पर स्वागत के लिए अर्चना और शेखर खड़े थे। कुमारेश का प्रथम पग रखते ही, अर्चना दौड़कर भारती से जा लिपटी, और शेखर कुमारेश से बातें करने लगा।

भारती लालाजी के घर कई बार आ चुकी थी, प्रत्येक कमरों से वह परिचित थी, पहले वह अर्चना की सहेली बन कर आती थी पर आज वह वधू बनकर आयी है। भारती आज घर में आते डर रही थी, उसकी आँखें आँसुओं से भरी थीं। भारती वही भारती जोकि रोना जानती तक न थी जिसने कि विपत्तियों से लड़ना सीखा था आज फफक फफक कर रो रही थी। अर्चना से सिमटी हुई भारती सिसक रही थी।

कुमारेश लालाजी के कहने पर उसी रात को भारती की मां के यहां गया। जब वह भारती के घर पहुंचा तो चारों ओर अँधेरा था। क्या मां कहीं गई है, कुमारेश ने सोचा पर दरवाजा तो खुला है अन्दर कहीं होगी कुमारेश सोच कर आगे बढ़ा। मां के सिसकने की आवाज सुन कर कुमारेश स्तब्ध रह गया, मां के पलँग के पास जाकर उसने पुकारा मां, मां।

आँखों से आँसू पोंछते हुये चौंककर भारती की माँ बोली — कौन कुमार भय्या आओ।

माँ तुम क्या कर रही हो। रात हो गयी अभी एक रोशनी तक नहीं की, खाना तक नहीं बनाया, ऐसे तो काम न चलेगा।

नहीं बेटा यह बात नहीं, मेरा शरीर आज कुछ अच्छा न था, इसी कारण पड़ रही।

माँ ऐसे बहानों से काम न चलेगा। आप सुबह से रो रही है, आपकी भारती कहीं दूर नहीं गयी है, दिल्ली ही में है, जब चाहे आप उसे बुला सकती हैं। ऐसे तो जीवन चल सकता नहीं। उठिये रोशनी कर भोजन इत्यादि का प्रबंध कीजिये।

उठती हूं बेटा।

कुमारेश माँ की दशा देखकर रो उठा। बेटी का इतना दुख। हाँ एकाकी जीवन में एक सहारा भारती ही का था, मां की ममता, मोह यह सब तो सांसारिक कार्य है।

जब दिया जलाकर भारती की मां लाई तो कुमारेश ने कहा—मां एक बात कहना चाहता हूँ।

क्या है बेटा।

लालाजी ने कहा था कि आपको भी घर पर रहना होगा।

मैं मैं घर पर नहीं बेटा, मुझे पाप में न डालो, कितने दिन और जाना है।

माँ ऐसी की बातें न किया कीजिये आप। आपको चलना होगा।

नहीं बेटा मैं तो दो चार दिन में काशी चली जाऊँगी, अपनी बहन के यहाँ। न जाने कितने दिन से बेचारी बुलाती थी कि यहाँ रहो आकर, भारती के कारण मैंने दिल्ली न छोड़ी। अब वहीं जाकर प्राण त्यागूंगी।

अपना घर छोड़ना ठीक नहीं मां, फिर भारती ?

बेटा वह भी तो अपना घर है और रही भारती उसको तुम्हारे सिपुर्द कर दिया है, यही समझ कर कि हमारी प्यारी भारती को तुम जीवन भर भली भांति सुखी रख सकोगे।

पर माँ।

कुछ नहीं बेटा, मेरा यही निश्चय है। भारती को मैंने विवाह के पूर्व ही अपना मंतव्य बतला दिया था।

माँ अच्छा मैं चलता हूँ, पर आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखियेगा।

ठीक है बेटा, अच्छा भारती को परसों जरा देर के लिये लेते आना।

क्यों ?

योंही जरा देखने की इच्छा है।

अच्छा आ जाऊंगा माँ।

कुमारेश जब भारती के घर से निकला, तो उसका चित्त खिन्न था। पुत्री के वियोग में भारती की माँ की क्या दशा हो गयी है। वाह रे माँ की ममता

२६

कुमारेश जब आज भारती के घर गया, तो ऊपर के किरायेदारों से ज्ञात हुआ कि माँ चली गयी। कुमारेश कह उठा माँ चली गयी, तभी तो कल उन्होंने अपना सारा सामान भारती को दे दिया था। कुमारेश सायकिल पर बैठ कर घर की ओर चल तो दिया, पर उसका हृदय व्याकुल था, भारती से वह क्या जाकर कहेगा। भारती को वह कैसे धैर्य बँधायेगा, इसी चिंता में कुमारेश लीन था।

जब कुमारेश अपने कमरे में पहुँचा, तब उसके कमरे में भारती, और अर्चना बैठी हुयी बातें कर रही थीं। कुमारेश को देखते हुये अर्चना बोली—वाह भैय्या आपने तो बड़ी देर लगा दी, देखो ना, भाभी कितनी देर से पलकें बिछाये आपकी प्रतीक्षा कर रही हैं।

वाह अर्चना तुम तो बहुत बातें करना सीख गयी हो।

भैय्या, मैं और बातें, मुझे बातें कहाँ आती हैं।

कोट उतारते हुये कुमारेश बोला—बड़ी शैतान हो गयी है, तू जाती भी नहीं।

तो यों कहो न भैय्या कि मैं आप दोनों के बीच बाधा बन रही हूँ, लो मैं चली।

अरी अर्चना बैठो। भारती हाथ खींचते हुये बोली।

बातें न बनाओ भाभी, हृदय तो यही चाह रहा होगा कि शीघ्र से शीघ्र मैं चली जाऊँ।

अच्छा जा न अर्चना बैठक में शेखर बाबू तेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

उठती हुयी अर्चना बोली—भैय्या व्यर्थ में बनाओ न, मैं स्वयं जा रही हूँ।

अर्चना के चले जाने पर भारती बोली—क्यों व्यर्थ में आपने भगा दिया।

कुमारेश ने कहा—भारती मुझे तुमसे एक बात कहनी है।

भारती ने उत्सुकता से पूछा—वह क्या।

सुनकर दुखी तो न होगी भारती ?

क्या है, कहिये ना ?

माँ चली गयीं।

दुखी स्वर में भारती ने कहा—मुझे ज्ञात है।

कैसे ?

कल सामान देते समय माँ ने कहा था कि बेटी अब तेरा विवाह हो गया है, अब मैं निश्चिन्त हो गयी हूँ, मेरी इच्छा है कि मैं शीघ्र से शीघ्र काशी चली जाऊँ। इसी से मुझे ज्ञात हो गया था कि माँ जाने वाली है।

माँ सम्भवतः इसी कारण कल अपना सारा सामान तुम्हें दे गयी थीं।

जी।

शाम को शेखर और अर्चना के आग्रह पर कुमारेश और भारती को 'पिक्चर' के लिये राजी होना पड़ा था। चल चित्र और चाट के प्रोग्राम बने थे। भारती की लाख नाहीं पर भी अर्चना उसे घसीट ले गयी थी।

भारती और कुमारेश कभी परिचित होने के नाते ही इसी सड़कों पर घूमते थे, पर आज, आज वे पति और पत्नी के रूप में थे।

सड़क पर से चलते हुये कुमारेश ने कहा—भारती वह रहा, तुम्हारा आफिस।

जी, पर आप तो मुझे जाने भी नहीं देते हैं, आजकल।

अब जाना कैसा भाभी, अब तो आप अहिंसावादी पति की पत्नी हैं किसी साम्यवादी की नहीं।

भारती ने मुह बनाते हुये कहा—अर्चना रानी हर समय का मजाक ठीक नहीं।

शेखर ने पत्नी की बात का समर्थन करते हुये कहा—ठीक तो है।

तो जीजा जी आप भी मुझे बनाने की सोच रहे हैं।

मैं और तुमको बनाऊंगा भारती, मेरी क्या हस्ती, ईश्वर ने सबको बनाया है।

जीजा जी याद रखिये दबाव पड़ने पर सिद्धांत मरते नहीं उभड़ते हैं।

सामने वाली पार्क की घास पर बैठते हुये शेखर ने कहा—

सुन लिया कुमार भाई, आप भारती जी को आफिस जाने दीजिये, अन्यथा दबाव पड़ने पर सिद्धांत जोरों से उभड़ेंगे।

भारती ने हँसते हुए कहा—आप मजाक समझते हैं तो उसका प्रत्यक्ष उदाहरण कांग्रेस है। २१, ३१, ४२ के बेजा दबाव द्वारा सतायी गयी संस्था आज देश की सबसे शक्तिशाली एवं राजनैतिक संस्था है।

शेखर ने मुस्कराते हुए कहा—हमें यह जानकर प्रसन्नता हुयी कि तुम कांग्रेस को सबसे शक्तिशाली संस्था समझती हो।

तो मैं कब उसे शक्तिशाली नहीं समझती थी, जीजा जी, प्रत्येक जानते हैं कि कांग्रेस की महान शक्ति है, पर मैं इस संस्था के राजनैतिक नेताओं पर विश्वास नहीं करती।

कुमारेश उठता हुआ बोला—भारती हम लोग यहाँ पर घूमने और चलचित्र देखने की योजना बना कर आये हैं विवाद की नहीं।

और हाँ शेखर भाई, अब चलना चाहिए नहीं तो चित्र न मिल सकेगा।

चलो कहते हुए सब उठ पड़े।

रात को चित्र देखने के पश्चात देर तक बातें होती रहीं। शेखर परसों जाना चाहता था, इस कारण कल कुतुब मीनार देखने का निश्चय हुआ था, और उसके साथ-साथ में चाय पानी का आयोजन भी।

कुमारेश उस रात को देर तक न सो सका। इन दिनों वह

बापू के प्रवचनों को भी सुनने न जा सका था। काम की अधिकता के कारण वह विश्वविद्यालय तक नहीं जा पाता था। आज भारती की बातें, दबाव पड़ने पर सिद्धांत वेग से उभड़ता है बार-बार याद आ रही थीं, उसने तो कभी भी भारती से नहीं कहा था कि वह आफिस न जाय।

सुबह उठते ही कुमारेश ने भारती से कहा—भारती यदि तुम्हारी इच्छा अब भी पार्टी में काम करने की हो तो तुम कर सकती हो, मुझे कोई हानि नहीं।

भारती ने आश्चर्य की मुद्रा बनाते हुए कहा—यह आप उठते ही क्या कह रहे हैं।

भारती कह कुछ नहीं रहा हूँ, जो सुना है, उसका उत्तर दे रहा हूँ।

मैं आपका अर्थ नही समझी ?

कुछ नहीं भारती कल तुमने शेखर से कहा था कि दबाव पड़ने पर सिद्धांत दबते नहीं वरन् उभड़ते हैं। उसी के उत्तर में मैं कह रहा हूँ कि मैंने तो तुम पर कोई दबाव नहीं डाला। तुम अब भी यदि चाहो तो जिस रूप में तुम्हारी इच्छा हो अपने सिद्धांत का प्रतिपादन कर सकती हो। हाँ एक बात तो बताने को भूल गया, परसों मुझे अनन्तराम मिल गया था, पूछ रहा था कि भाई विवाह के बाद तो भारती एक दिन भी दिखायी नहीं दी, क्या आप उन्हें संस्था के आफिस में आने को मना करते हैं। तो उसके प्रत्युत्तर में मैंने कहा था कि

यदि भारती की इच्छा हो तो वह आपकी पार्टी का काम अब भी कर सकती है।

आप मेरा अर्थ नहो समझे।

धोती तौलिया उठाते हुए कमारेश ने कहा—भारती मुझे तुम पर रोष नही वरन प्रसन्नता है जो कि तुमने साफ बात कह दो। मैं भी जानता हूँ कि दबाव पड़ने पर सिद्धांत जोर पकड़ता है।

कमारेश के जाने के बाद भारतो का हृदय कमारेश के प्रति श्रद्धा से भर गया। आज विवाह हो जाने के पश्चात भी भी मुझे पार्टी में काम करने की आज्ञा देते हैं। ठीक है, प्रेम और सद्भावना के साथ-साथ किसी का व्यर्थ मे दिल न दुखाना भी तो मानववादी अहिंसा का धर्म है। पर क्या उसे इस रूप मे अपनी संस्था का कार्य करना चाहिये, भारती इसी उधेड़बुन में लीन था। नहीं, नही ढिलाई की भी तो कोई मर्यादा होती है। वह सीधे हैं तो उसका यह अर्थ नही कि मैं इस सीधेपन का नेज लाभ उठाऊँ, पर तेजा क्या, संस्था का कार्य करना भी तो राजनैतिक धर्म है। पर अब नहीं बगैर उनकी आज्ञा के लिए हुए वह नही जायेगी। ठीक है यह भारतवर्ष है रूस नहीं। हां उसे पार्टी के सिद्धान्तों से सहानुभूति है, वह उसको मानती है, सिद्धांत कार्य करने से ही पैदा नहीं होता, सिद्धांत ऐसी जल्दी बदलने वाला नहीं होता। भारती बुदबुदायी।

शाम को सब ताँगे पर सवार होकर कुतुब मीनार को देखने

चल पड़े। प्रत्येक ने कुतुब मीनार को देखा था, पर आज का दृश्य ही दूसरा था। भारती का विवाद यहाँ भी चालू था, शेखर का सभावादी होना तो अग्नि में आहुति का काम कर रहा था। कुमारेश चुपचाप बैठा हुआ शून्य दृष्टि से आकाश की ओर निहार रहा था, अर्चना भी चुप थी।

कुतुबमीनार पहुँच कर एक सुन्दर स्थान की खोज की गयी, यहीं पर डेरा डाल दिया गया। अर्चना ने स्टोव जला कर चाय का पानी चढ़ा दिया।

शेखर और भारती बातों में मस्त थे।

कुमारेश कुतुब मीनार की ओर देखता हुआ, उसमें से कुछ ढूँढ़ निकालने के प्रयत्न में था। सदियों से खड़ा हुआ मीनार पास में अशोक की लाट, अतीत के गौरव को गाकर सुना रही थी। इसी लाट और मीनार ने दिल्ली में होते हुये परिवर्तनों को देखा होगा। अत्याचार और शान्ति का सन्देश, प्रेम और विप्लव का हिलोर, युद्ध, न जाने क्या क्या देखा होगा।

अर्चना ने चाय का प्याला उठाते हुये कहा—कुमार भैय्या लो चाय बन गयी।

कुमारेश चिन्तिन से चौंकता हुआ चाय का प्याला लेने के लिये तत्पर हो उठा।

प्याला लेने के बाद कुमारेश ने दृष्टि फिराकर देखो तो आराम से बैठे हुये शेखर और भारती चाय नाश्ता के साथ जोर-जोर से बहस करने में तल्लीन थे।

कुमारेश हँसता हुआ, अर्चना से बोला—बहन यह साम्य-वादी तथा सभावादी कितना तर्क करनेवाले होते हैं मानो उनका और कुछ काम नहीं।

अर्चना ने पढ़ती हुई कहानी से ध्यान हटाते हुये कहा हूँ, और फिर कहानी पढ़ने में तल्लीन हो गयी।

कुमारेश ने चारों ओर दृष्टि फिराकर आकाश की ओर देखा, फिर अपनी आँखें कुतुब मीनार पर जमा दीं।

२७

प्रत्येक मानव में एक इच्छा रहती है, वह होती है विजय। प्रत्येक मानव परिस्थितियों पर विजय पाना चाहता है। विजय के लिये वह क्या नहीं करता? और विजय के हेतु किसने क्या नहीं किया।

भारत की स्थिति गिरती ही जा रही थी। प्रेम और एकता के जुड़े तार टूटते ही जा रहे थे। वैमनस्य की आग लग चुकी थी, वह बढ़ती ही जा रही थी। भारत चारों ओर से प्रेम और एकता के गीत नहीं वरन घृणा का भयानक स्वर सुन रहा था।

दिल्ली की बुझायी हुयी आग अब भी सुलग रही थी। दोनों ओर से हवा के थपेड़े उसको जलाने के लिये दिये जा रहे थे। किसी भी समय यह सुलगते हुये अंगारे प्रज्ज्वलित हो सकते थे। शान्तिवादी मानव इस आग पर पानी डालना चाहते थे।

बापू ने इस सुलगती हुई आग को देखा। आनेवाली परिस्थिति की कल्पना की, और सत्य, न्याय, प्रेम, और एकता का प्रतिपादन करनेवाला बापू इस वैमनस्य को रोकने को दृढ़ हो उठा।

कुमारेश ने जब बापू के अनशन का समाचार सुना तो

उसका सारा शरीर क्रोध से जल उठा। आज मानव इतना पतित होगया है कि वह बापू को मरवाना चाहता है। पर बूढ़ा अस्थि पिंजर कब तक अनशन कर सकता है। आह आज का युग प्रेम और एकता को नहीं चाहता।

बापू के अनशन का समाचार सुनते ही दिल्ली में सनसनी फैल गयी। अनशन। महामानव बापू का अनशन का समाचार पत्र लिये हुये 'हाकर' चिल्लाते निकल पड़े।

भारती।

क्या है।

तुमने कुछ सुना।

आप बापू के अनशन के बारे में कह रहे है क्या?

कुमार सिर हाथ पटकता हुआ बोला—हाँ भारती? न जाने आज मुझे कैसा विचित्र सा वातावरण लग रहा है। वही बापू जिनका कि एक आवाज पर करोड़ों व्यक्ति जान देने को तयार हो जाते थे, आज उनकी अवहेलना कर रहे है। आज उनकी जान इतनी सस्ती हो गयी है मानों जनता में उसका कुछ मूल्य ही न हो। आखिर बापू से ऐसा कौन सा परिवर्तन हो गया है। भारत को स्वतंत्रता के तट पर खड़ा कर देने वाला बापू आज लोगों की दृष्टि में इतना नीचा हो गया है कि मानो उसका कुछ महत्व नहीं।

कमरे में घुसते हुये शेखर ने कहा—हाँ कुमार भाई आज के युग में गांधी का कोई महत्व नहीं। गांधी महान अवश्य

है पर आज के युग में वह जो बातें कर रहा है वह पागल की सी हैं।

शेखर आप क्या कह रहे हैं बापू पागल हैं।

हाँ कुमार, आज बापू पागलपन की बातें कर रहे हैं। आज वह सपने देख रहा है, ऐसे सपने जोकि कभी भी न पूरे हो सकेंगे।

पर मानवता के नाते शेखर—

क्या बकते हो, आज भारत में मानवता है कहाँ। चंद स्वार्थ के कारण कांग्रेसियों ने भारत का विभाजन किया जिसके परिणामस्वरूप पंजाब, नोआखाली में लाखों व्यक्ति मारे गये।

पर यह तो साम्प्रदायिकता का दोष था ?

बकते हो, मानता हूँ दोष साम्प्रदायिकता का था, पर मैं पूछना चाहता हूँ यह साम्प्रदायिकता किसने पैदा की, यदि आज भारत विभाजन न होता तो साम्प्रदायिकता न पैदा होती।

अवश्य पैदा होता शेखर, अवश्य पैदा होता। तुम्हारी जैसी संस्थायें क्या इस बढ़ते हुये वैमनस्य को रोकती।

तब वैमनस्य न बढ़ता, कुमार तुम नहीं जानते हो कि भारत विभाजन क्या फल लाया है। ऐसा फल जोकि जहर से भरा है। हिन्दू मुसलमान के बीच में विभाजन की खाई गहरी है, और वह खाई वैमनस्य से भरी है। विभाजन के बाद हिन्दू मुसलमान एकता सम्भव नहीं कुमार। ऐसे समय में ऐसी बातें करना पागलपन नहीं तो क्या बुद्धिमानी है।

तो आपका अर्थ है शेखर बाबू कि हम लोग लड़ते रहें।

मैं यह नहीं कहता कुमार कि हम लोग लड़ते रहें। हमें शांति स्थापित करनी है एकता नहीं, हम लड़ना नहीं चाहते पर समय पर पीछे भी न होंगे।

तो आपके विचार से गांधी जी जो कर रहे हैं, वह सब बेकार है।

बिलकुल बेकार, इन व्यवहारों से गांधी का मूल्य जनता में घटता जा रहा है। वह बापू जोकि कभी सारी भारत की जनता का पूज्य समझा जाता था, आज लोग उसको ताने देते हैं। प्रेम और एकता अनशन से नहीं, तलवार से होगी।

शेखर व्यर्थ की बातें न करो। एक सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला व्यक्ति अपने सिद्धांतों पर ही चल सकता है किसी दूसरे के नहीं। एकता और शांति, प्रेम और अहिंसा से होती है, हिंसा से नहीं। आज बापू अपने प्राणों की बाजी लगा चुका है। हिंसा को वह अहिंसा से दबाना चाहता है, पर लोग आज उसे पागल कह रहे हैं। स्वतंत्रता का प्रतीक, स्वतंत्रता समर का सेनानी, आज मृत्यु की बाजी लगाये पड़ा है, और जनता उसकी खिल्ली उड़ा रही है।

हाँ कुमार जनता आज उसकी खिल्ली उड़ा रही है, पागल कह रही है, इसमें भी एक रहस्य है। युग के साथ साथ जो व्यक्ति नहीं चलता उसकी खिल्ली उड़ायी ही जाती है। अशांति भरे युग में शांति का उपदेश देना मजाक करना है। ऐसे

समय में तो बल और तलवार की आवश्यकता है चर्खा और अहिंसा की नहीं।

तो आपका अर्थ है शेखर कि हिंदू मुसलमान दंगे हों, शांति सम्भव नहीं।

भारती रोकती हुई बोली—अजी हटाइये इन बातों को।

नहीं कुमारेश मेरा यह दृष्टिकोण नहीं है कि दंगे हों, पर मैं अन्त में इतना अवश्य कहूँगा कि आज अशांति भरे युग में गांधीवाद सफल न हो सकेगा।

हाँ शेखर गांधीवाद सफल भी कैसे हो सकता है, जब तक तुम्हारे जैसे लोग उनके सिद्धांतों पर पानी डालते रहेंगे।

कुमार भाई सिद्धांत पर पानी मैं नहीं डालता हूँ, समय डाल रहा है, ऐसे समय में जब कि चारों ओर हाहाकार की ज्वाला जल रही हो, शान्ति और अहिंसा की बातें करना क्या उचित है।

मरते हुये आदमी, जलते हुये मकान, लुटती हुयी लाज, सुलगती हुयी वैमनस्य की अग्नि में शांति की बातें न की जायँ तो क्या घी डाल कर अग्नि प्रज्वलित की जाय शेखर।

कुमार केवल कोरी बातें करने से ही कार्य न चल सकेगा। ऐसे अशांति भरे युग में नैतिक बल के साथ साथ शौर्य और जातीय भावना को जाग्रित कराना है।

शेखर याद रक्खो जातीय भावना हम सबको खा जायेगी।

कुमार मुझे ऐसा विश्वाश न था कि तुम अहिंसावादी होकर ऐसे गिर जाओगे कि जातीय भावना को भी भुला ठोगे।

मैंने जातीय भावना को भुला नहीं दिया है शेखर, पर मेरी और तुम्हारी जातीय भावना में महान अन्तर है।

भारती ने जो ध्यान पूर्वक दोनों की बातें सुन रही थी टोकते हुये शेखर से बोली—जीजाजी आप भी व्यर्थ के विवाद में लगे हैं, बाजार चलने से देर हो गई।

शेखर उठता हुआ बोला—क्षमा करना कुमारेश यह अपना अपना मत है।

क्षमा की कौन सी बात शेखर, पर मुझे आज के युग के लोगों की बातें सुन कर हँसी और क्रोध दोनों आते हैं।

दिन बीतने के साथ साथ बापू का स्वास्थ्य गिरता जा रहा था। युग के प्रतीक शांति प्रेमी बापू का जीवन संकट के मार्ग पर बढ़ता जाता था, लोग चिंतित थे। चिन्ता के साथ साथ कुछ लोगों के मुख पर क्रूर मुस्कराहट खेल रही थी। बापू के अनशन को नाना रंगों में रंग कर पचपन करोड़, मुस्लिम प्रेम, हिन्दू द्रोह का रूप दिया जा रहा था।

फिर भी बापू का जीवन बचाने के लिए भारत की अधिकांश जनता विकल थी। वह अपने बापू को जीवित देखना चाहती थी।

प्रत्येक दल के नेताओं ने भी महामानव के इस आमरण

अनशन पर चिन्ता प्रकट की और इस बात में क्रियाशील हो गये कि किसी भी प्रकार बापू का अनशन भंग हो सके।

मानवता के प्रतीक, सत्य अहिंसा और प्रेम एकता के पुजारी बापू को बचाना है, बचाना है की आवाजें देश के कोने कोने से आने लगीं। नेताओं का प्रयत्न बापू के जीवन रक्षा हेतु भारत के कोने कोने में होने लगा।

देश का छोटे से लेकर बड़ा व्यक्ति जोकि गाँधी के प्रति उपेक्षा नहीं वरन आदर भाव रखता था, बापू की जीवन ज्योति बचाने के लिये विकल हो उठा।

बापू ने अनशन के चौथे दिन जब कि उनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, देश के नेताओं के आग्रह पर अपना अनशन भंग करने की शर्तें प्रकट की।

बापू की शर्तें देखकर विरोधी व्यक्तियों ने घृणा का भाव उत्पन्न किया और समझदार व्यक्तियों ने, चाहे वे किसी भी दल के हों हर्ष उत्पन्न किया।

कुमारेश जोकि बापू का नाम सुनते ही खुशी से झूम उठता था आज दुख से विचलित है। बापू के नाम का आकर्षण उसे बारम्बार बापू के जीवन ज्योति की रक्षा के लिये भगवान से प्रार्थना करने को प्रेरित करता है। कुमारेश का विश्वास है केवल ईश्वर ही इस समय बापू के प्राण बचा सकता है।

———

२८

गांधी जी ने नेताओं के आग्रह और जोर देने पर अपना अनशन भंग कर दिया। जनता एक बार फिर से जी उठी, और बापू का अनशन भंग हो गया।

बापू के अनशन भंग होने से, असंतोषी व्यक्ति लाभ उठाने का प्रयत्न करने लगे, बापू के जीवन की अहिंसा को ढिलमिल, और कायरता का विशेषण दे-दे लोगों को भड़काया।

बापू के अनशन भंग होने के बाद ही, गांधी के सिद्धांतों को उलटने का प्रयत्न किया जाने लगा, मानवता के झूठे नाम पर दानवता की बातें की जानें लगीं।

पर अनशन समाप्त होने के दो ही दिन पश्चात जब जनता ने सुना बापू पर बम फेंका गया, उनकी हत्या करने की चेष्टा की गयी, तो सारा जनता विक्षुब्ध हो उठो।

लाला जी। लोग अब इतने बढ़े जा रहे हैं, कि विरोध की भावना हत्या में बदली जा रही है। कुमारेश पैर पटकते हुये बोला।

हाँ कुमार भैय्या जो भी शक्ति यह कर रही है, वह बुरा है।

बुरा नहीं लाला जी, यह तो नीचता है, नीचता, एक अस्सी साल के लगभग का बूढ़ा मानव, जो कि किसो हद

तक देवत्व को प्राप्त कर चुका है, शांति का प्रेमी, उस मानव की हत्या।

हाँ कुमार भैय्या यह ठीक नहीं।

लाला जी यह ठीक होने की बात नहीं, वरन् हमारे लिये कलंक की बात है। वह मानव जिसने की हमको चलना सिखाया, वह पिता जो अपने पुत्रों को मर्यादा के लिये कठिनाइयों में पड़ा, वह कुशल सेनानी जोकि अहिंसा का शस्त्र लेकर रण क्षेत्र में बढ़ा आज उसी की हत्या का प्रयत्न था। एक भारतवासी के हाथ, लज्जा की बात है।

कुछ नहीं कुमार एक भूले-भटके हुये दिमाग वाले व्यक्ति से आशा ही क्या की जा सकती है उसका मस्तिष्क ठीक नहीं है।

कुछ नहीं लाला जी, मस्तिष्क तो मेरा भी ठीक नहीं था, पर मैं पागलपन नहीं कर बैठा, इसके अंदर बहुत बड़ा रहस्य है।

होगा भैय्या, अपने से क्या।

अपने से क्या का शब्द कानों में पड़ते ही, कुमारेश का हृदय लाला जी के प्रति घृणा से भर गया और वह अपने कमरे में सोचता हुआ चल गया, वाह रे स्वार्थी मानव।

एक महान व्यक्ति जोकि महानता का प्रतीक है, मानवता की देन है, लाखों, करोड़ों व्यक्तियों को जगाने वाला महात्मा है, जो कि समस्त बुराइयों से ऊपर उठा हुआ है, जिसकी कि दृष्टि में भगवान और अल्लाह में कोई भेद नहीं, उसके बारे में लोगों की धारणा ऐसी है, वाह रे जग।

भारती भी यह समाचार पाकर दुखी थी। कुमार का हृदय बार-बार ज्वालामुखी पर्वत की भाँति भड़क उठता था, उसको संसार के चारों ओर अँधेरा दिखायी देता था, एक भयानक अँधेरा। दूर से आती हुयी दानवता की लहर को वह देखकर काँप उठता था। भविष्य की कल्पना उसके नेत्रों में आ जाती थी और उसका हृदय पीपल के पत्ते की भाँति खड़क उठता था। युग क्या रंग लायेगा। मानवता क्या बलिदान करेगी?

भारती भारत का भविष्य अँधकारमय है। कह कर कुमारेश रो पड़ा।

कुमारेश के सर पर हाथ फेरती हुयी दुखी स्वर में भारती बोली—जी।

कुमारेश फफक-फफक कर रो पड़ा। बापू, कुमारेश, अहिंसा प्रेम, एकता—क्या रहस्य है।

मानवतावादी आज रो रहा है; इस शंका से कि भविष्य में मानवतावाद पर संकट की घड़ियाँ आने वाली हैं। मानवता का अँधकारमय भविष्य है।

२६

तीस जनवरी (ठीक दस दिन बाद) की रंगीन सन्ध्या को कुमारेश चिन्ता में लीन घर ही में बैठा था। उसका चित्त आज कल बड़ा व्याकुल रहता था। गान्धीजी पर बम फेंके जानेवाली घटना से वह बहुत उदास रहने लगा था। विश्वविद्यालय से आकर वह लेट जाता था, घूमना तो अब उसके लिये स्वप्न होगया था!

कुमारेश बिस्तर पड़ा हुआ कल्पना में लीन था, भारती रसोई में थी। और लालाजी कहीं गये हुये थे।

कुमारेश का चित्त कल्पना के सहारे क्षितिज के उस पार पहुँच गया था, जहाँ पर कि कुमारेश को शान्ति की ध्वनि सुनायी देती थी।

जब वह रंगीन सन्ध्या काली रात्रि में बदल गई, तभी, उसी क्षण कुमारेश को लालाजी से ज्ञात हुआ कि महात्मा गान्धी की मृत्यु होगयी, किसी ने उन पर तीन गोलियाँ चलायीं।

भारती, कुमारेश पागल सा चीत्कार कर उठा।

क्या कर रहे हो कुमारेश।

कुछ नहीं लालाजी मानवता मर गयी, कहकर कुमार बच्चों की भाँति रो पड़ा।

कपड़े पहन कर कुमारेश बोला—लालाजी मैं बिड़ला-भवन जा रहा हूँ।

लालाजी कोई उत्तर न दे सके।

रोता हुआ कुमारेश बिड़ला-भवन को चल पड़ा। दिल्ली और दिल्ली सड़कों पर गुजरता हुआ कुमारेश मानो कुछ ढूंढ़ रहा हो।

गान्धीजी की हत्या के बाद दिल्ली शान्ति होगयी थो, मृत्यु की भाँति। सारा कोलाहल, सड़कों की चहल-पहल, दुकानों की रौनक सब बन्द होचुकी थी।

कुमारेश बिड़ला-भवन की ओर चुपचाप बढ़ता जा रहा था, उसे दिल्ली की दीवारें रोती जान पड़ रही थीं।

दिल्ली रो रही थी, दिल्ली की सड़कें, दुकानें, और मकान ऊपर आकाश पर चमकनेवाले चाँद सितारे सब आँसू बहा रहे थे।

दिल्ली को हवा रो रही थी।

दिल्ली की अँधेरी रात पर कमारेश का हृदय रोने की मदिरा पिये हुये बिड़ला-भवन की ओर जा रहा था।

× × ×

दूसरे दिन अंर्थी निकली, कुमारेश भी उसमें था। जनाजे के साथ लाखों की भीड़ थो। सारी जनता रोती हुयी बिलखती हुयी बापू के पीछे जा रही थी।

जनाजा जा रहा था, जनाजा जा रहा था, उसमें मानवता

की लाश थी, प्रेम, एकता, और शान्ति का उपदेश, देनेवाले बापू की लाश थी।

आज दिल्ली की हवा गर्म थी।

दिल्ली के फूल मुरझा गये थे।

दिल्ली का सूरज संकोच और ग्लानि से भरा था। दिल्ली और दिल्ली की जनता पीड़ित थी।

मानवता की लाश के साथ-साथ कुमारेश का भी शरीर जा रहा था, निर्जीव सा।

× × ×

चिता धू धू कर जल उठी। कुमारेश के हृदय में एक भयंकर चोट लगी। जलती हुयो बापू की हड्डियाँ, चटखते हुये जोड़, उठते हुये शोले सब कह रहे थे बापू जा रहा है-बापू जा रहा है।

आग की लपटें उठ-उठ कर मानवता के प्रतोक की स्मृति को जगा रही थीं।

बूढ़े कंगाल, से लेकर एक बच्चे का कोमल हृदय तक रो रहा था।

आग की लपटों के समाप्त होने के साथ-साथ कुमारेश का स्वप्न टूट गया। अस्थि पिंजर जल चुका था। लपटें बुझ चुकी थीं।

मानवता मर चुकी थो।

बापू जीवित था।

× × ×

बापू सत्य है, वह अमर है, वह नहीं मर सकता। उसके सिद्धांत अमर फल खाकर आये हैं। बापू कभी नहीं मर सकता, वह सत्य है, चिरंतन सत्य।

× × × ×

चलो भारती छोड़ो इन सब धन्धों को बापू के सिद्धांत हमारे जीवन के सिद्धांत हैं। उनका विस्तार हमारा कर्तव्य है।

× × × ×

भारती के साथ कुमारेश चल पड़ा, सीधी पगडंडी को, जिसका कि रास्ता सीधे सेवाग्राम होते हुये शांति तक जाता है।

× × × ×

रास्ते में कुमारेश को पत्र द्वारा ज्ञात हुआ कि मानवता के नाम पर लोग महाराष्ट्र में लूटे जा रहे हैं।

× × × ×

हम लोगों के सिद्धांत अमर हैं। वे कभी भी नहीं मर सकेंगे, मार खाते हुये श्री दयाशंकर जी चिल्लाये।

× × × ×

लालाजी एकाकी है। अमृतसर स्टेशन पर मिलने वाला कुमार भारती के साथ चला गया दूर, बहुत दूर।

× × × ×

क्या यही संसार का क्रम है ?